उपसर्गहर

रक्षाबन्धन विधान

रचयित्री

आर्यिका विज्ञानमती

प्रकाशक

धर्मोदय साहित्य प्रकाशन

❑ कृति	:	उपसर्गहर रक्षाबन्धन विधान
❑ रचयित्री	:	आर्यिका विज्ञानमती
❑ संस्करण	:	तृतीय, जनवरी, 2012
❑ आवृत्ति	:	1100
❑ मूल्य	:	25/-
❑ प्राप्ति स्थान	:	धर्मोदय साहित्य प्रकाशन जैन मंदिर के पास बाहुबली कॉलोनी सागर (म. प्र.) मो. नं. 094249-51771
❑ मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

कृति के गर्भ से ....

राजस्थानी वसुन्धरा की दैदीप्यमान तारिका पूज्य आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी का व्यक्तित्व किसी भी परिचय का मुहताज नहीं है। जिनका व्यक्तित्व ही जिनका कृत्तित्व है और जिनका कृत्तित्व ही जिनका व्यक्तित्व है। सर्वतोमुखी प्रतिभा की धनी सूरी कल्प श्री विवेकसागरजी महाराज की पंचम शिष्या पूज्य आर्यिका श्री के संदर्भ में कुछ कहना बरसते जल-कणों के सहारे नीलगगन की सैर करने के सदृश है। जिनका जीवन अहिंसा और स्वपरकल्याण का पर्यायवाची बना हुआ है। ऐसी महान् विभूति की कृति के संदर्भ में लिखने का मेरा यह प्रयास वैसा ही है, जैसे हाथों से समुद्र को उलीचना, ओसकणों से कुयें को भरना अथवा कागज की नाव से समुद्र पार करना ही चाह रही हूँ। फिर भी लोग क्या दीपक से सूर्य की आरती नहीं उतारते क्या बालक भुजाओं को फैलाकर समुद्र का विस्तार नहीं बताता उसी प्रकार मैं भी.......।

घुवारा वर्षायोग के पश्चात् बिहार हुआ और आर्यिका गुरुमती माताजी के संघ से मिलन हुआ। 23 आर्यिकाओं के समूह से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुयी। वहीं पर आर्यिका संघ से चर्चा के दौरान संघस्थ आर्यिकाओं ने पूज्य आर्यिका श्री से निवेदन किया कि पूज्य माताजी आपकी लेखनी से अनवरत साहित्य सृजना होती रहती है और आपका साहित्य जनमानस को सुलभता से समझ में भी आ जाता है। आपसे करबद्ध प्रार्थना है आप एक रक्षाबंधन विधान बना दो। ताकि श्रावकों को गुरु की भक्ति करने का अवसर मिले और साधक भी गुरुओं के साहस, समता, धैर्य, शौर्य को जानकर मार्ग में स्थिर रहे, बाधाओं से विचलित न हो। पूज्य आर्यिका श्री ने अपनी लघुता प्रकट करते हुये कहा-अरे माताजी मुझे कुछ नहीं आता है, आप लोग भ्रम में हैं कि मैं विदुषी हूँ, मेरी सूरत दिखती है क्या कि मैं कुछ कर सकती हूँ? सुनकर सभी हँसने लगे-हँसते हुये सभी ने एक साथ कहा-हे माताजी आपको सब कुछ आता है, आपके लिये यह कोई दुष्कर कार्य नहीं है। उस समय तो बात आयी गयी हो गई, लेकिन अंतरंग की गुरुभक्ति ने, श्रद्धा ने गुरु स्तुति/पूजन लिखने के लिये अंतर्घट को प्रेरित किया और गुरुभक्ति की तरंगें छंदबद्ध होकर तरंगायित होने लगी और साधु के ही 700 विशेषण युक्त यथार्थ नामावली वाले एक, दो, तीन....... सृजित होते-होते 700 अर्घ तीन माह की अल्पावधि में ही पूर्णता को प्राप्त हो गये। साधकों के

प्रति साधकों की भक्ति रंग लायी और साधक के अंत:करण से कृति का अवतरण हो गया।

जिस प्रकार युग के आदि में भरत चक्रवर्ती ने आदिनाथ भगवान् की 1008 नामों से स्तुति की थी। आचार्य जिनसेनस्वामी ने भी महापुराण में 1008 नामों से आदिनाथ भगवान् की स्तुति की थी तो क्या भगवान् के 1008 नाम थे, नहीं, उन्होंने गुणात्मक रूप से गुणगान किया था, उसी प्रकार परम्पराचार्यों के अनुसार मुनियों के 700 नामों को आधार बनाकर गुणात्मक रूप से भावभीनी स्तुति करते हुये विधान की रचना की है।

प्रस्तुत कृति में 8 पूजन हैं, 1 समुच्चय पूजन और 7 पूजन विधान की 100-100 अर्घ वाली जयमाला सहित है। श्रावक चाहे तो विधान की पूजन 1 दिन में या 2-3 दिन में या 7 दिन में भी पूरा कर सकता है। विधान करते समय 700 साधक हमारी आँखों के सामने समता की साधना में लीन दिखते हैं। समुच्चय जयमाला पढ़ते समय आँखों से स्वत: ही अश्रु नि:सृत हो जाते हैं, दिल करुणा से भर उठता है। अंतर्मन साधु के प्रति समर्पित होकर कर्म-कालिमा को धोकर धवलता को प्राप्त होने लगता है।

धन्य है दीक्षा प्रदात्री गुरु माँ की निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरुओं के प्रति आस्था, उनकी साधना के प्रति बहुमान उनकी चर्या को अपनी चर्या बनाने का उपक्रम। शिवसौध को प्राप्त करने के सार्थक सोपानों में से एक सोपान गुरु-भक्ति भी है। उसी गुरुभक्ति की मिशाल है यह कृति ''उपसर्गहर रक्षाबंधन विधान'' जिसके माध्यम से हम पल-पल प्रतिपल सच्चे गुरु की पूजा, वंदना, अर्चना करके अपने आपको संक्लेश परिणामों से बचाकर संसार-सागर को सीमित करके परम्परा से मुक्ति अंगना को वरण करे। इसी भावना के साथ उपसर्ग विजेता अकम्पनाचार्य महाराज के चरणों में नंत: नंतश: नमोऽस्तु......।

उपसर्ग निवारक विष्णुकुमार मुनिराज के चरणों में कोटि-कोटिश: नमोऽस्तु......।

गुरुभक्ति के साँचे में ढला है जिनका मन-वचन-काय ऐसी गुरु माँ के चरणों में वंदामि........।

गुरु चरणानुरागी
आर्यिका आदित्यमती

न धर्मो धर्मकैर्विना

तीर्थङ्कर भगवान ने दिव्यध्वनि में मुनिधर्म एवं श्रावक धर्म का उपदेश देकर दोनों का मोक्षमार्ग प्रशस्त किया है। गृहस्थ अपने आवश्यकों का पालन करके परम्परा से तथा मुनिराज अपने आवश्यकों का पालन कर कर्मक्षय करके मोक्षमार्गी होते हैं। मुनिराज एवं श्रावक दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, दोनों की चर्या एक-दूसरे पर निर्भर रहती है।

रक्षाबंधन पर्व मुनिराजों के वात्सल्य, श्रावकों की श्रद्धाभक्ति एवं प्रभावना का पर्व है। इस पर्व की वर्तमान काल में विशेष महत्त्व एवं अनिवार्यता है, इसी पर्व से श्रावक एवं मुनिराजों के बीच भक्ति के सेतु का निर्माण होता है, जिस पर चलकर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

अभी तक रक्षाबंधन पर्व परम्परा से औपचारिक रूप में सम्पन्न करते आ रहे हैं। आचार्यकल्प श्री विवेकसागरजी महाराज की विदुषी शिष्या आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी ने "उपसर्गहर रक्षाबंधन विधान" का सृजन करके हम श्रावकों पर परम उपकार किया है। इस विधान में जहाँ मुनिराजों की चर्या का विशेष वर्णन है, वहीं विशेष अलंकारों एवं विशेषणों से मुनिराज के गुणों का विवेचन भी सटीक रूप से किया गया है।

माताजी के गहन चिंतन एवं वैचारिक प्रतिभा का ज्ञान शीलमंजूषा एवं संस्कार मंजूषा के सृजन से हुआ था। काव्य रूप में कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं उपसर्गहर रक्षाबंधन विधान का मौलिक सृजन करके अपनी उत्कृष्ट काव्य शैली का भी परिचय दिया है।

पूज्य माताजी ने विधान में शब्द चयन इस प्रकार किया है कि विधानकर्ता मुनिराज के गुणों में ऐसा लीन हो जाता है मानों वह अकम्पनाचार्य सहित 700 मुनिराजों के समक्ष खड़ा हो। प्रत्येक श्रावक-श्राविका को विधान के माध्यम से जिनायतनों एवं मुनिराज-आर्यिका माताजी के प्रति श्रद्धा भाव जागृत करना है तथा संकल्पसूत्र बाँधकर उनके संरक्षण का संकल्प करके विधान का समापन करना है।

इस विधान की संयोजना में कई माताजी एवं बहिनों के योगदान के साथ न जाने कितने लोगों की सद्भावना सार्थक हुई है। यह श्रम 700 मुनिराजों के चरणों में समर्पित विनयांजलि है, जो सदैव उसका मोक्षपथ आलोकित करती रहेगी।

पूज्य माताजी का श्रम तभी सार्थक होगा जब सभी इस विधान-अनुष्ठान से अपने जीवन का परिमार्जन करके मोक्षमार्ग प्रशस्त करेंगे।

माताजी के चरणों में कोटिशः नमन।

पुष्प भवन, टीकमगढ़ — ब्र. जयकुमार निशांत

अनुष्ठान हेतु निर्देश

उपसर्गहर रक्षाबंधन विधान जिनशासन की प्रभावना एवं वात्सल्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह अनुष्ठान जिनधर्म जिनायतनों, मुनिराजों एवं जिनवाणी के संरक्षण का संकल्प करके करना चाहिए।

अन्य विधानों में सौधर्म इन्द्र, कुबेर-चक्रवर्ती आदि पात्र होते हैं, परन्तु इस विधान में यज्ञनायक श्रावक श्रेष्ठी, श्रीमंत श्रेष्ठी, धर्मश्रेष्ठी, समाजश्रेष्ठी, धवलश्रेष्ठी, प्रभावना श्रेष्ठी आदि पात्र निर्धारित करके किया जायेगा। पात्रचयन में राशि के साथ योग्यता भी अनिवार्य है। सप्तव्यसन, हिंसक व्यापार त्यागी, श्रावकोचित चर्या वाले होना चाहिए। संयमी श्रावकों को कम राशि में भी प्राथमिकता देना चाहिए।

यदि अनुष्ठानकाल में संध्या में जीवोत्पत्ति होती हो तो विद्युत व्यवस्था कम से कम रखें, जिससे जीवघात न हो। आरती आदि क्रियायें संक्षिप्त रूप में करें।

यह विधान 7 दिन, 3 दिन, 2 दिन या 1 दिन में समयानुसार सम्पादित कर सकते हैं। जाप अनुष्ठान समाज के सभी लोगों से अवश्य करायें। जाप का संकल्प जापकर्ताओं की संख्यानुसार करें।

यदि जाप अनुष्ठानपूर्वक विधान करें तो हवन के पश्चात् समाज के आबालवृद्ध सभी धर्मायतनों के संरक्षण हेतु दान राशि समर्पित करके संकल्पपूर्वक रक्षासूत्र बाँधें।

यदि किन्हीं महाराजजी, माताजी के चातुर्मास का सौभाग्य मिले तो उनके निर्देशानुसार समस्त अनुष्ठान सम्पन्न करें।

मण्डल रचना- 6×6 या 8×8 फुट का मंडल बनाकर उसमें मध्य में ह्रः लिखकर 7 वलय में 100 अर्घ्य के अनुसार मंडल की रचना करें।

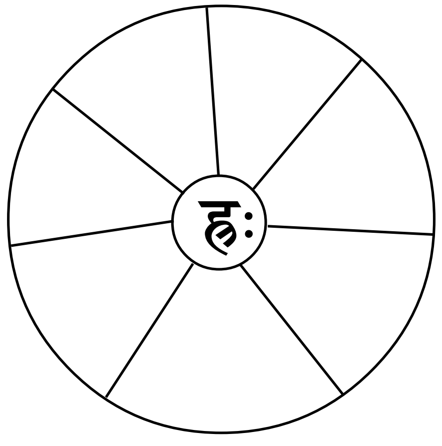

पीठिका

(ज्ञानोदय)

शुद्ध सिद्ध अरहंत सूरि जो, पाठक मुनि सुखकन्द कहे।
विवेक विद्यासागर गुरु को, वन्दू ये जगवन्द्य रहे॥
कहूँ पीठिका रक्षा-बन्धन, पर्व बना किस कारण से।
कब से राखी बाँध आज तक, करते बैर निवारण है॥1॥

परम पूज्य श्री कुरुवंशों को, विष्णु सिन्धु ने धन्य किया।
अर स्वामी के तीर्थकाल में, दीक्षा ले भव रम्य किया॥
तप से पाई विक्रिय ऋद्धी, लेकिन कुछ भी पता नहीं।
सारचन्द्रजी गुरुवर ने जब, पुष्पदन्त को जता दयी॥2॥

उनने जाकर उन्हें बताई, उसके बल से वृष रक्षा।
कीनी जाकर सात शतक के, व्रत-आश्रय[1] की संरक्षा॥
श्रावण शुक्ला चौदस थी वो, शुक्ल पक्ष का चंदा भी।
अमिताशन[2] के धूम घनों से, कान्तिहीन हो छुपा तभी॥3॥

त्राही-त्राही चारों दिशि में, मची हुई वृष धरियों में।
दुखी सभी थे व्यथित हुए थे, बलि राजा की कृतियों से॥
कोशिश कर करके भी हा-हा, समाधान ना हो पाये।
धर्मीजन के नयन दुःख से अश्रूधारा बरसायें॥4॥

तभी अचानक एक व्यक्ति जो, बावनिये का देह धरे।
आया बलि से दान माँगने, देख हँसे नृप नेह हरे[3]॥
दो कदमों में द्वीप अढ़ाई, नापे तीजा रखने को।
जगह नहीं सो नभ में ही, वह, घूम रहा था रुकने को॥5॥

1. शरीर 2. अग्नि 3. रहित

इससे ही तो देव सुरासुर, विद्याधर सब काँप उठे।
आकर मिन्नत करी देव अब, हम अज्ञों को माफ करे॥
देख सभी को बलि तो डरकर, चरणों में बन याचक औ।
भीख माँगता प्राणों की वह, जैसे भोला बालक हो॥6॥

तत्क्षण गुरु श्री विष्णू मुनि ने, दूर किये उपसर्ग सभी।
खुश होकर के जनता ने भी, लेकर हाथों सूत तभी॥
बाँध परस्पर सूत्र प्रतिज्ञा कीनी वृष के रक्षण की।
व्रत संयम अरु शील धर्म की, मुनिराजों के रक्षण की॥7॥

बहिनों ने भी मुख्य रूप से, शुक्ल पूर्णिमा श्रावण में।
भैया के घर आकर राखी, बाँध दिलाई याद अये॥
इस विध ऋषि के विघ्न मिटे सो, भाँति-भाँति के पकवाना।
सबने खाये खूब खिलाये, मोद मनाया मनमाना॥8॥

इत्थं रक्षा बन्धन उत्सव, आज सभी हम इनकी ही।
पूजा करते अर्चा करते, महिमा गावे तिनकी जी॥
सच पूछो तो पर्व अनूठा मुनिराजों के सुमरण का।
दूर हुआ उपसर्ग इसी दिन, मिला हमें भी सम्बल वा॥9॥

समुच्चय पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र)

अचल अकम्पन आदि सात सौ,सारचन्द्र गुरु स्वामी।
वत्सल अंगों में है चर्चित, विष्णु कुंवर मुनि नामी।
उपसर्गों को जीता इनने, बतलाया था दूजे॥
दूर किया था तीजे ऋषि ने, हम तीनों में रीझे॥

(दोहा)

आह्वानन सबका करूँ, निकट करूँ उर धाम।
सन्निधि करके पूजना, सबसे उत्तम काम॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टक)

जल तो जड़ है कैसे हमरे, जन्म मरण को नाशे।
आप सुचेतन तुमको अर्पण, करते हम गुणराशे॥
हे गुरुवरजी तुमरी पूजा, देती शिवपद मेवा।
भक्ति भाव से अर्चन करते, गुरु चरणों की सेवा॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन टीका लगा देह की, सुन्दरता बढ़ जाती।
आप रहे हैं सहज सलौने, अर्पण करते पाती॥
हे गुरु........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चाँवल चौखे धवल आपके, धवल रहे हैं भावा।
शुद्ध भाव को पाने अक्षत, अर्पण का है चावा॥
हे गुरुवर जी तुमरी पूजा, देती शिवपद मेवा।
भक्ति भाव से अर्चन करते, गुरु चरणों की सेवा॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम वासना से जग सारा, पाता है हैरानी।
पुष्प भेटहूँ जीत कामना, पायें शिवरजधानी॥
हे गुरु........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भूख मिटी ना नैवज खा खा, हम हैं भारी दुखिया।
चरण चढ़ाकर खाजा फैनी, बन जावे शिव सुखिया॥
हे गुरु........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योती से फिर जल्दी, छा जाता तम काला।
मोह अंध ना बचा तभी तो, पाया पूर्ण उजाला।
हे गुरु........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन चूरा खुशबू वाली, धूप चरण में दीनी।
धूम उड़े अब सभी कर्म की, तुमरी शरणा लीनी॥
हे गुरु........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला भेला काजू किसमिस, भरकर लाया थाली।
मोक्ष मिले अब गुरुवर, मेरी, विधि होवे ना काली॥
हे गुरु........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुअक्षत पुष्प वारि ले, सबको साथ मिलाया।
कर्म आतमा भिन्न होय अब, तुमको आज चढ़ाया॥
हे गुरु........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽनर्घ्य पद प्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

पूज समुच्चय की रही, जयमाला ये श्रेष्ठ।
गाता हूँ मैं भक्ति से, गाते हैं जग ज्येष्ठ॥ 1॥

हे ऋषिवर तुम हो कामजयी, तुम क्षमा मूर्ति हो पुण्यमही।
है नाम अकंपन गुरुवर का, तव शिष्यों में भी कंपन ना॥ 2॥

तुम पंच सून से दूर हुए, तुम पूर्ण अहिंसा पूर हुए।
तज राजमहल के वैभव को, तुम तीन रतन का वैभव औ॥ 3॥

है सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण, है भव सागर में मात्र तरण।
सब राज रानियाँ छोड़ दयी, औ क्षमा क्षान्ति को मोह लयी॥ 4॥

फिर इनके साथे दया धृति, ये आय बनी हैं आप कृती।
है धैर्य शौर्य शम समता भी, तुम सूर वीर हो ममता नी[1]॥ 5॥

शुभ धर्मध्यान में तत्पर हो, तज मूर्च्छा शिव के पथ पर हो॥
ये आर्त्त रौद्र जो भव देते, तुम उनकी शरणा नहिं लेते॥ 6॥

जो कर्म नाश के कारण हैं, जो भव दुख के भी वारण हैं।
उन गुप्ति समिति अनुप्रेक्षा को, नित पालन में नापेक्षा औ॥ 7॥

है पर की यतिवर तभी आज, तुम कहलाते हो महाराज।
तुम उपसर्गों में धीर धरी, जो मानी भव की पीर हरी॥8॥

जब उष्ण योग तुम धारत हो, तो भानु किरण भी वारत हो॥
तुम शीत योग में गगन तले, जा बसते तब तो ठंड टले॥9॥

1. ममता नहीं है।

तब हँस हँस आता चाँद वहाँ, औ बिछा चाँदनी मान महा।
वो छोड़ वहाँ से चल देता, वह शीतलता को दल देता॥10॥

रे तभी शुक्ल वह पक्ष भगे, वह कृष्ण पक्ष तह आय पगे।
पर तुम तो दोनों पक्षों में, ना रहते बस जिन पक्षों में॥11॥

तुम धारों वर्षा योग यदा, तब अघ की वर्षा होय जुदा।
जब पानी की भी लगातार, ना बूँदों का हो पारवार॥12॥

तब दंशमशक आ डंक मार, कर देते तन को छार-छार।
पर साम्य भाव की शरणा से, ना बन पाती भव करणा[1] वे॥13॥

इन त्याग तपस्या गौरव को, कह पाये जग में कौन कहो।
यदि कहने लागे सुरगुरु भी, वे हार पड़े जो श्रुतधर भी॥14॥

फिर मैं तो अल्प अज्ञानी हूँ, कुछ पढ़ा लिखा ना मानी हूँ।
सो पूर्ण करूँ जयमाला ये, मैं चरण पड़ूँ शिवशाला के॥15॥

(घत्ता)

हे पूज्य ऋषीशा गुणधर धीशा, हम तो तुमरे भक्त बड़े।
हम तुमको ध्याकर शीश नमाकर, कर्म कालिमा सक्त[2] करे॥
ले द्रव्य सुअष्टा हे गुण पुष्टा, आज चरण में भेंट करे।
दुरभाव मिटाने आनन्द पाने, तुमरी पूजा ज्येष्ठ करे॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि-सप्त-शतक-ऋषीश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

सूरि अकम्पन सहित सात सौ, मुनियों की ये अर्चा है।
भव की नाशक शिव की शासक जो करता नित चर्चा है॥
कर्म कटे तिस दुर्गति मिटती सद्गति में वो जाता है।
परम्परा से मुक्ति महल में जा बसता पा साता है॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

1. भव बढ़ाने वाली 2. सुखावे!

द्वितीय पूजा

स्थापना

(ज्ञानोदय)

गौरवमय जो गरिमाशाली, गहन रहे गम्भीर रहे।
गुरुवर तजकर हेय सभी को, ग्राह्य मात्र ही ग्रहण करे॥
सभी साधु को शत शत वन्दन, करके कर लूँ आह्वानन।
थापन सन्निधि करता आकर, मेरा कर दो उर पावन॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

जल से बुझती प्यास कहाँ है, मैं लाया जल झारी में।
जन्म जरा के मेटन की गुरु, अब तो मेरी बारी है॥
सूरि अकम्पन आदिक हे मुनि, गुरु गरिमा को गाता हूँ।
उपसर्गों के जेता तुमको, उर में आज बिठाता हूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ताप मिटा ना चंदन से सो, चंदन घिसकर लाया हूँ।
भव संताप मिटाने हेतू, देख गुरू को आया हूँ॥
सूरि..........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः संसार-ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चौखे अक्षत देता चौखे, शाश्वत पद के पाने को।
तुम शरणा बिन अक्षय सुख को, कौन कहाँ से पावे औ?॥
सूरि..........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण से पागल-सा हो, पीछे लगकर नारी के।
भटक रहा अब पुष्प चढ़ाऊँ, शील महाव्रत धारी के॥
सूरि अकम्पन आदिक हे मुनि, गुरु गरिमा को गाता हूँ।
उपसर्गों के जेता तुमको, उर में आज बिठाता हूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शरमाता हूँ लाडू पेड़ा, चरण चढ़ाने में गुरुवर।
क्योंकी भूख विजेता स्वामी, तुमको इनसे क्या मतलब?॥
सूरि..........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक द्युति में आँखों से ही, कम पदार्थ बस दिखते हैं।
मिटे सर्व अज्ञान हमारा, दीपक अर्पण करते हैं॥
सूरि..........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी लाया आठों, कर्म हमारे जल जावे।
मेरे गुरुवर विघ्न जीतने, ध्यान अग्नि को सुलगावे॥
सूरि..........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

काजू किसमिस गोला आदिक, चुनचुन करके लाया हूँ।
मोक्ष महाफल पाने की बस, भावन भाने आया हूँ॥
सूरि..........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल चंदन अक्षत नैवज, पुष्प दीप ये भेले हैं।
लेकर आये अनर्घ पद को, पाने पद के चेले ये॥
सूरि..........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽनर्घ्य पद प्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

जल फलादि से पूजकर, अब दूँ सबको अर्घ्य।
गुरु पूजन भी हेतु है, पा जाने अपवर्ग ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपामि

प्रत्येक अर्घ

(आल्हा)

हिंसा को ही मूल उखाड़ा, परम अहिंसा धर्म सुधारा।
निर्दयता में धर्म कहाँ है, दयाशील ही श्रेष्ठ महा है ॥1 ॥

ॐ ह्रः अहिंसा-महाव्रत-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सत्य बोलते हित मित पूरे, झूठ छोड़कर सब अघ चूरे।
सत्य महाव्रत धारा इनने, अर्घ चढ़ाकर आतम चीने ॥2 ॥

ॐ ह्रः सत्य-महाव्रत-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बिना दिया कुछ लेते ना है, अस्तेयं व्रत सेते वा हैं।
बिन इच्छा से देता यदि ये, नहिं गहते मैं अर्घ दऊँ ये ॥ 3 ॥

ॐ ह्रः अस्तेय-महाव्रत-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चारों विधि की नारी छोड़ी, ब्रह्मचर्य से ममता जोड़ी।
शुद्धातम में रमते वा वा, अर्घ चढ़ाऊँ चरणों आ आ ॥ 4 ॥

ॐ ह्रः ब्रह्मचर्य-महाव्रत-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मूर्च्छा ना है पर द्रव्यों में, रुचि लागी है श्रुत स्रव्यों में।
मान परिग्रह ग्रह सम छोड़े, अर्घ चढ़ा हम अघ को तोड़े ॥5 ॥

ॐ ह्रः अपरिग्रह-महाव्रत-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चार हाथ भू देख चालते, जिससे चउगति बन्ध हालते ॥
ईर्या समिती पालक तुमको, पूजूँ विद्या दे दो हमको ॥6 ॥

ॐ ह्रः ईर्यासमिति-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बिना प्रयोजन नहीं बोलते, बोले जो भी पूर्ण तोल के।
वाचंयम तुम रहते ज्यादा, पूजूँ सुनकर सुख हो ताजा ॥ 7 ॥

ॐ ह्रः भाषासमिति-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

श्रावक के घर थोड़ा-सा लें, तप की वृद्धी लक्ष्य बना लें।
एषण पाले निर्दोषी हो, हम नित पूजें संतोषी हो ॥ 8 ॥

ॐ ह्रः एषणासमिति-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रखते गहते जो भी चीजें, परिमार्जन कर आतम रीझें।
निक्षेपण आदान व्रती ओ, पूजे उसकी श्रेष्ठ गती हो ॥9 ॥

ॐ ह्रः आदाननिक्षेपण-समिति-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दूर गूढ़ निर्जन्तुक थानक, मल मूत्रों का करते थापन ।
समिति रही उत्सर्ग महन्ता, अर्घ चढ़ाऊँ हे गुरु सन्ता ॥10 ॥

ॐ ह्रः उत्सर्ग-समिति-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आठ विषय जो स्पर्श अक्ष हैं, जय पाने में आप दक्ष हैं।
अष्ट कर्म भी शीघ्र नशेंगे, पूजूँ अब तो मोक्ष बसेंगे ॥11 ॥

ॐ ह्रः स्पर्शइन्द्रिय-निरोध-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

खट्टे मीठे कड़वे रस में, राग करे ना द्वेष सरस में।
रस की आशा छोड़ी तुमने, हम आये हैं पूजन करने ॥12 ॥

ॐ ह्रः रसनाइन्द्रिय-निरोध-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

खुशबू बदबू भिन्न-भिन्न ना, आप मानते अहो खिन्न ना।
घ्राण जीतकर अक्ष विजेता, पूजूँ तुमको शिव मग नेता ॥13 ॥

ॐ ह्रः घ्राणइन्द्रिय-निरोध-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं.....

पाँच वर्ण में आँखें तुमरी, इच्छा ना सो आस्था हमरी।
आप चरण में लगी आज है, पूजूँ तुम तो मोक्ष पाथ है ॥14 ॥

ॐ ह्रः चक्षुइन्द्रिय-निरोध-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कर्णेन्द्रिय ना कभी लुभाती, सप्त शब्द में नाहीं जाती।
पंचम इन्द्रिय जेता पद में, अर्घ चढ़ाऊँ आपद हन हैं ॥15 ॥

ॐ ह्रः कर्णइन्द्रिय-निरोध-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

समता धर सामायिक करते, तन की भी तो ममता हरते।
आवश्यक यह पहला पाले, पूजन कर हम कल्मष टाले ॥16 ॥

ॐ ह्रः समता-आवश्यक-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

थुति करते हैं चौबिस जिन की, पंच परम गुरु अघ के हन की।
आवश्यक यह दूजा मानो, पूजूँ ऋषिवर सब दुख हानो ॥17 ॥

ॐ ह्रः थुति-आवश्यक-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वन्दन करते तीर्थंकर की, बाहुबलि या सूरीश्वर की।
आवश्यक यह तीजा कहिए, पूजूँ यतिवर पातक दहिए ॥18 ॥

ॐ ह्रः वन्दना-आवश्यक-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

प्रत्याख्यानी गुरुवर तुम तो, भक्त रहे ये तुमरे हम तो।
आवश्यक यह चौथा गुणकर, पूजे कर दो हमको अघहर ॥19॥

ॐ ह्रः प्रत्याख्यान-आवश्यक-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हुए दोष का प्रतिक्रम करते, राग रोष सब इससे जलते॥
आवश्यक यह पंचम ऋषि का, पूजूँ पथ दो शिव की दिशि का॥ 20॥

ॐ ह्रः प्रतिक्रमण-आवश्यक-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तन की ममता तज के हे गुरु, शिव से ममता जोड़ी हे पुरु॥
आवश्यक यह षष्टम माना, पूजूँ पूज्य यही है बाना॥ 21॥

ॐ ह्रः कायोत्सर्ग-आवश्यक-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

बालक सम तुम नग्न रहे हो, काम दाह से नहीं जले हो।
निर्विकार तुम वेष कहा है, पूजूँ तुम सम वेष कहाँ है ॥22॥

ॐ ह्रः नाग्न्य-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

केशों का तुम लुञ्चन करते, सब क्लेशों का मुञ्चन करते।
केशलोच यह मूल गुणा ओ, पूजन कर हम पाप उना[1] हो ॥23॥

ॐ ह्रः केशलोच-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दाँतों का ना मँजन करते, दंत पँक्ति से मन को हरते।
अदन्त धावन गुण अघहन्ता, पूजन से हो तुमरा पन्था ॥24॥

ॐ ह्रः अदन्तधावन-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

घास भूमि या काष्ठ चटाई, रही आपकी शय्या भाई।
भूमि शयन तोड़े तन ममता, पूजन कर मैं पाऊँ समता॥ 25॥

ॐ ह्रः भूमिशयन-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मल-मल कर ना मैल उतारे, स्नान त्याग कर निज को तारे।
अस्नानं व्रत कितना प्यारा, अर्घ देय गुण गाऊँ थारा॥ 26॥

ॐ ह्रः अस्नान-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कर युगलों की अञ्जलि करके, खड़े-खड़े ही भोजन करते।
थिति भोजन गुण आप सम्हाले, पूजा कर हम भाग्य सम्हाले ॥27॥

ॐ ह्रः स्थिति-भोजन-मूलगुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. कम हो।

दिन में केवल एक बार ही, लेते हो तुम स्वल्पहार जी।
एक भुक्ति को पाले सन्ता, पूजूँ हे गुरु आप महन्ता ॥28॥

ॐ ह्रः एकभुक्ति-मूलगुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(ज्ञानोदय)

नाहीं घर है नाहीं गृहिणी, ना धन दौलत सम्पद है।
इसीलिए ''अनगार'' आप पर, नाहीं आती आपद है॥
विष्णु यमी ने विघ्न निवारा, पूज्य अकम्पन आदिक का।
अर्घ चढ़ावे विघ्नजयी तुम, बने शीघ्र निज मालिक वा ॥29॥

ॐ ह्रः अनगार-गुण-परिपालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बाह्याभ्यंतर नाना विधि की, करी तपस्या मनमानी।
इसीलिए है नाम ''तपस्वी'', क्योंकी रक्खी ना खामी॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 30॥

ॐ ह्रः तपस्वी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सोना चाँदी इत्यादिक को, छोड़ गहा है तप का धन।
नाम ''तपोधन''आर्य आपका, रमा आपमें सबका मन॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 31॥

ॐ ह्रः तपोधन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रहा देह यह भले अशुचिमय, तप से शुचिता कर डाली।
''तपोपूत'' जी तप से तुमने, भव की पीड़ा हर डाली॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 32॥

ॐ ह्रः तपोपूत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

द्वीपवती[1] को जैसे सबका, आश्रय जग में माना है।
वैसे तप आधार बने सो, ''तपोमही'' तव नामा है॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 33॥

ॐ ह्रः तपोमही-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतकऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. धरती

तप को धारण करके ओहो, हिला दिये सुर सिंहासन।
सार्थक कीना नाम ''तपोधर'', तभी चला ना दुखशासन॥
विष्णु यमी ने विघ्न निवारा, पूज्य अकम्पन आदिक का।
अर्घ चढ़ावे विघ्नजयी तुम, बने शीघ्र निज मालिक वा॥ 34॥

ॐ ह्रः तपोधर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कठिन कठिन तप करके तुमने, ''तप-नायक'' पद पाया है।
तुमरी गाथा सुनकर मेरे, मन में भी तप भाया है॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 35॥

ॐ ह्रः तपोनायक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अनशन आदिक तप से तपकर, तप के तुम भण्डार बने।
''तपो-निधानी'' आप शीघ्र ही, पावे शिव के ठाठ घने॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 36॥

ॐ ह्रः तपोनिधान-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जैसा मिलता दातारों से, जो-जो दे-दे दाता जन।
ले लेते सो नाम ''सुभिक्षुक'', पूजे धर पद माथा हम॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 37॥

ॐ ह्रः भिक्षुक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अशुभ भाव जो पापास्रव के, कारण उनको छोड़ दिये।
पूर्व भवों के अशुभ कर्म भी, ''शुभ-कार्यों'' से तोड़ दिये॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 38॥

ॐ ह्रः शुभकर्मा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मौन धार कर चुप्पी रखते, ''मौनी'' तुमरा नाम अहा।
हित मित वाणी बोले फिर भी, मौन भाव ही झाँक रहा॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 39॥

ॐ ह्रः मौनी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तप ही तुम पर्याय बना है, ''तपसी'' पद में नमता मैं।
तप ज्वाला से बाह्य अग्नि में, नहीं जले निज रमता ये॥
विष्णु यमी ने विघ्न निवारा, पूज्य अकम्पन आदिक का।
अर्घ चढ़ावे विघ्नजयी तुम, बने शीघ्र निज मालिक वा॥ 40॥

ॐ ह्रः तपसी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''धर्म-परायण'' बनकर तन भी, पवित आपने कर दीना।
चेतन को भी पवित्र करने, ध्यान अग्नि में धर दीना॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 41॥

ॐ ह्रः धर्म-परायण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जैनधर्म के सत्य धर्म के, पक्ष मात्र में रहते हैं।
''पाक्षिक'' तुमरा नाम सुसार्थक, इन्द्र चक्रि भी भजते हैं॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 42॥

ॐ ह्रः पाक्षिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सही धर्म उपदेश देयकर, भव अर्णव से पार करो।
चरण पड़े वह थान तीर्थ हो, तभी ''तीर्थ'' तुम नाम धरो॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥43॥

ॐ ह्रः तीर्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निन्दा तुमरी कौन करेगा, सहे परीषह कठिन अहो।
नाम ''अनिन्द्यं'' पाय लिया सो, कैसे होंगे मलिन कहो॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 44॥

ॐ ह्रः अनिन्द्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आमिष भोजन औषध आदिक, पूर्ण रूप से त्याग दिये।
आप ''निरामिष-भोजी'' ओहो, हिंसा से भी पार गये॥
विष्णु यमी ने विघ्न.................॥ 45॥

ॐ ह्रः निरामिष-भोजी-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भोगों की या इन्द्रिय सुख की, इच्छाओं को छोड़ा है।
अहो ''निरिच्छक'' तभी आप से, हमने नाता जोड़ा है॥
विष्णु यमी ने विघ्न निवारा, पूज्य अकम्पन आदिक का।
अर्घ चढ़ावे विघ्नजयी तुम, बने शीघ्र निज मालिक वा॥ 46॥

ॐ ह्रः निरिच्छक-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बगुला भक्ती ढोंग छलों को, और दिखाऊ किरिया को॥
छोड़ा है सो ''निर-आडंबर'', पाले उत्तम चरया औ॥
विष्णु यमी ने विघ्न..................॥ 47॥

ॐ ह्रः निराडंबर-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हिले नहीं उपसर्ग हुआ तब, वृष में दूषण ना दीना।
व्रत संयम में दोष टाल निर, दोष भविष को कर लीना॥
विष्णु यमी ने विघ्न..................॥ 48॥

ॐ ह्रः निर्दोष-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भय नाहीं है मरणों का तो, अस्त्र शस्त्र क्यों राखो जी।
आप ''निरायुध'' सब जीवों की, रक्षा में चित पागो जी॥
विष्णु यमी ने विघ्न..................॥ 49॥

ॐ ह्रः निरायुध-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बौद्धिक बल है जितना तुममें, सुरगुरु भी तो पीछे है।
''बुद्धि-शीलता'' देख आपकी, हम तो तुममें रीझे हैं॥
विष्णु यमी ने विघ्न..................॥ 50॥

ॐ ह्रः बुद्धिशीलता-गुणधारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(दोहा)

कषाय दल को शमन कर, ''शमी'' आप कहलाय।
कष[1] - विजयी मैं बन सकूँ, पूज आपके पाय॥
श्रुतसागर मुनिराज जी, जीत बली से वाद।
धर्म वृक्ष में आपने, दीना उत्तम खाद ॥ 51॥

ॐ ह्रः शमी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. कषाय

अक्ष दमन कर आपने, ''दमी'' नाम को सार्थ।
करके गुरुवर आप तो, चलते शिव के पाथ॥
श्रुतसागर मुनिराज जी, जीत बली से वाद।
धर्म वृक्ष में आपने, दीना उत्तम खाद॥ 52॥

ॐ ह्रः दमी-नाम धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

यम धारा सो हे गुरु, ''यमी'' कहाये आप।
जीवन भर के त्याग से, पूजूँ हे निरमाप!॥
श्रुतसागर.............॥ 53॥

ॐ ह्रः यमी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

महाव्रतों को धारकर, ''महाव्रती'' सौभाग।
महान् जीवन पावने, पूजूँ तज के राग॥
श्रुतसागर.............॥ 54॥

ॐ ह्रः महाव्रती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हिंसा आदिक पाप का, कीना पूरा त्याग।
''सकलव्रती'' गुरु आपको, पूजूँ बन गतराग॥
श्रुतसागर.............॥ 55॥

ॐ ह्रः सकलव्रती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पाप पंक को धो दिया, पूर्ण व्रतों को धार।
''पूर्णव्रती'' गुरु पूजहूँ, मम जीवन आधार॥
श्रुतसागर.............॥ 56॥

ॐ ह्रः पूर्णव्रती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

यम में राजित आप सो, नाम रहा ''यमराज''।
गुरुवर तुमरी पूज से, सधते सगरे काज॥
श्रुतसागर.............॥ 57॥

ॐ ह्रः यमराज-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निर्जन वन में विचरते, ''वनचर'' आप स्वरूप।
पूजूँ हे गुरु आप ही, पायेंगे सुख कूप॥
श्रुतसागर मुनिराज जी, जीत बली से वाद।
धर्म वृक्ष में आपने, दीना उत्तम खाद ॥58॥

ॐ ह्रः वनचर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

विषय भोग का आपने, समझा सत्य स्वरूप।
हे ''वैरागी''! आपको, पूज गहूँ निज रूप॥
श्रुतसागर............॥59॥

ॐ ह्रः वैरागी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

इन्द्रिय वश में कर लयी, ''वशी'' कहाते आप।
परवश में भटका हहा, पूजूँ मेटो ताप॥
श्रुतसागर............॥60॥

ॐ ह्रः वशी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

महान आतमा हे गुरु, महान् आपके काम।
अहो ''महात्मा'' पूजहूँ, ये ही उत्तम काम॥
श्रुतसागर............॥61॥

ॐ ह्रः महात्मा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शीत उष्ण तरु मूल के, योग धरो हे आर्य!।
''योगी'' तुम जग पूज्य हो, पूजूँ है सत्कार्य॥
श्रुतसागर............॥62॥

ॐ ह्रः योगी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ख्याती पूजा लाभ की, इच्छा तज के साफ।
सम्यक् यम के धारका, अहो ''संयमी'' आप॥
श्रुतसागर............॥63॥

ॐ ह्रः संयमी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जैसे सुर में इन्द्र है, त्यों मुनियों में इन्द्र।
''मुनीश'' जेष्ठ साधक गुरु, पूजूँ हे मुनिचन्द्र॥
श्रुतसागर............॥64॥

ॐ ह्रः मुनीश-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सर्व तत्त्व को जानते, सो तुम हो ''तत्त्वज्ञ''।
तत्त्व देशना दो मुझे, हे गुरु! मैं हूँ अज्ञ॥
श्रुतसागर मुनिराज जी, जीत बली से वाद।
धर्म वृक्ष में आपने, दीना उत्तम खाद॥65॥

ॐ ह्रः तत्त्वज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बल यौवन का जाति का, प्रज्ञा कुल का मान।
मिटा अतः निर्मान हो, पूजूँ बन ''निर्मान''॥
श्रुतसागर............॥66॥

ॐ ह्रः निर्मान-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

माया छल से छिद्र से, दूर रहे अति दूर।
निश्छल ''आर्जव'' धर्म को, धारा है भरपूर॥
श्रुतसागर............॥67॥

ॐ ह्रः आर्जव-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मृदुता है नवनीत सी, वृद्धों का सम्मान।
''विनयवान'' करते तभी, हम करते सम्मान॥
श्रुतसागर............॥68॥

ॐ ह्रः विनय-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

लालच है शिवनार का, विषयों का ''ना लोभ''।
इसीलिए तो आप में, ना दिखता है क्षोभ॥
श्रुतसागर............॥69॥

ॐ ह्रः निर्लोभता-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

झूठ वचन वो बोलता, तन धन से हो नेह।
''सतवादी'' क्या देह से, रख सकता है स्नेह॥
श्रुतसागर............॥70॥

ॐ ह्रः सत्यवादिता-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चउ ''आराधन साधते'', चतु नाशन के हेत।
तुमसे साधक देख हम, दाँतों अंगुलि देत॥
श्रुतसागर............॥71॥

ॐ ह्रः आराधक-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निमित्त कोप का देखकर, कुपित हुए ना ''धीर''।
लगती तुमरी पूज तो, जैसे घेवर खीर॥
श्रुतसागर मुनिराज जी, जीत बली से वाद।
धर्म वृक्ष में आपने, दीना उत्तम खाद॥ 72॥

ॐ ह्रः धैर्य-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

किंचित परिग्रह ना रहा, आप ''अकिंचन'' श्रेय।
गा-गा करके भक्ति से, पूजूँ हे मम प्रेय॥
श्रुतसागर............॥73॥

ॐ ह्रः अकिंचन-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''गुरुता'' कितनी आप में, कह सकता है कौन?।
इसीलिए तो प्राज्ञ भी, भक्त बने पर मौन॥
श्रुतसागर............॥74॥

ॐ ह्रः गुरुता-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''लघुता'' का ना पार है, लाघव गुण भरपूर।
तुमरे चरणा जो पड़े, उसकी विधि हो चूर॥
श्रुतसागर............॥75॥

ॐ ह्रः लघुता-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(चौपाई)

यतन करे सो आप ''यतीन्दा'', पूजें तुमको सुरपति इन्दा।
हरष-हरष हम अर्घ चढ़ावे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥76॥

ॐ ह्रः यतीन्द्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मौन धरे सो आप ''मुनीन्दा'', नमन करूँ हे जग के चन्दा।
रत्नत्रय पथ तुमसे पावे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥ 77॥

ॐ ह्रः मुनीन्द्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रत्नाकर तो खारा स्वामी, सच्चे ''रत्नाकर'' तुम नामी।
ताल देय हम महिमा गावे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥78॥

ॐ ह्रः रत्नाकर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मोक्षमार्ग में उद्यम करते, यत्नाकर हम तुमको कहते।
घन घन घंटा दे गुण गावे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥79॥

ॐ ह्रः यत्नाकर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

करी साधना ''साधु'' कहाते, गुरुवर तुमको हम भी ध्याते।
भक्ति भाव से चरणा आवे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥ 80॥

ॐ ह्रः साधु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ज्ञान सलिल से आप भरे हो, ''ज्ञानार्णव'' यह नाम धरे हो।
पूजन करने हम नित आवे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥81॥

ॐ ह्रः ज्ञानार्णव-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गुण के अम्बुधि फिर भी मीठे, नाम ''गुणाम्बुधि'' आप अनूठे।
आप मिले तो क्यों भरमावे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥82॥

ॐ ह्रः गुणाम्बुधि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''समता-गुण'' के तुम हो सागर, हम भी आये भरने गागर।
गुण सागर की पूज रचावे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥83॥

ॐ ह्रः समता-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वन में रहते सो ''वनवासी'', सच पूछो तो हो निजवासी।
वनचर भी तो शरणा आवे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥84॥

ॐ ह्रः वनवासी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मुनिव्रत धारे सो ''बड़भागी'', आप हुये हो तन वैरागी।
शक्री चक्री चरणा आवे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥85॥

ॐ ह्रः बडभागी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सभी परिग्रह त्याग दिये हैं, अद्भुत तुमने काम किये हैं।
''निष्परिग्रह'' हो नाम सुध्यावे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥86॥

ॐ ह्रः निष्परिग्रह-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तन से भी ना रही स्पृहा है, इसीलिए तो आप महा है।
''निस्पृह'' गरिमा कैसे गावे, मिथ्या तजकर समकित पावे॥ 87॥

ॐ ह्रः निस्पृह-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''आरभ[1] सारभ[2] छोड़ दिये हैं,'' जग के नाते तोड़ दिये हैं।
थाल सजा के पूजन गावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥ 88 ॥

ॐ ह्रः निरारम्भ-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अम्बर छोड़े पर ना शरमं[3], ब्रह्मचर्य को पाया परमं।
''निर-अम्बर'' को हम कब पावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥89 ॥

ॐ ह्रः निरम्बर-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पाप खण्डना करते रहते, ''पाखण्डी'' सब परिषह सहते।
भव तापों से हम बच जावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥90 ॥

ॐ ह्रः पाखण्डी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कर युगलों को पात्र बनाया, पात्रों का सब राग हटाया।
''कर-पात्री'' मम दिल में छाये, मिथ्या तजकर समकित पाये ॥91 ॥

ॐ ह्रः करपात्री-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ग्रन्थ रखे तो बढ़ती ग्रन्थी, बन सकता ना वो शिवपंथी।
''निर्ग्रन्थी'' आदर्श कहावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥92 ॥

ॐ ह्रः निर्ग्रन्थ-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

केवल तन से नहीं ''नग्न'' हो, निज आतम में रहे मग्न औ।
नग्न हमारा मन हो जावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥93 ॥

ॐ ह्रः नग्न-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

राज्य छोड़कर तप को धारा, बनकर मुनिवर भाव सुधारा।
'' श्रमण'' आप ही पाप नशावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥94 ॥

ॐ ह्रः श्रमण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''संग मुक्त हो'', संघ युक्त हो, अहो आप तो पाप मुक्त हो।
इसीलिए अब शिव को जावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥95 ॥

ॐ ह्रः निःसंगत्व-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जल-कुम्भों-सम पूर्ण भरे हो, तप किरिया को पूर्ण करे हो।
''तपःकुम्भ'' मम पूज्य कहावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥96 ॥

ॐ ह्रः तपःकुम्भ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

---
1. आरम्भ 2. समारम्भ 3. लज्जा

पाप कर्म में रक्त नहीं हो, पुण्य कर्म आसक्त नहीं हो।
''पुण्य पाप'' का भाव मिटावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥97 ॥

ॐ ह्रः पुण्यपाप-आसक्त-परिणाम-रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शत्रु मित्र में समताधारी, भव भोगों में ममता टारी।
''निर्ममत्व'' को शीश झुकावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥98 ॥

ॐ ह्रः निर्ममत्व-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जन्म जात के बालक-सम ही, वस्त्राभूषण तजकर सबही।
''अन-अम्बर'' भी सब को भावे, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥99 ॥

ॐ ह्रः अनम्बर-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पाय ऋद्धियाँ ''ऋषि'' कहलावे, खगधर मुनिवर तुमको ध्यावे।
नाच-नाच हम पूज रचावें, मिथ्या तजकर समकित पावे ॥100 ॥

ॐ ह्रः ऋषि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पूर्णार्घ

(घत्ता)

तुम क्षमाधनी हो, पाप कमी औ, करते रहते नित्य अहो।
जो तुमको पूजे, सब अघ धूजे, क्यों होंगे वे भीत कहो ॥
हम दरब सुलाये, मन हरषाये, देख आपको भूल गये।
हम सारे दुख को, पाये सुख को, भव के सारे शूल गये ॥

ॐ ह्रः अहिंसा-महाव्रतादि-शतक-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य - ॐ ह्रः अकम्पनादि सप्त-शतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः। (9/27/108 बार जाप करें)

जयमाला

(दोहा)

मुनि वृन्दों को अर्घ दे, अब गाता जयमाल।
हे गुरु! तुम अब शीघ्र ही, पहनोगे शिवमाल॥ 1॥

(ज्ञानोदय)

विषय सुखों की आशा छोड़ी, पुत्र पौत्र तनु भार्या को।
तजकर राजमहल वैभव को, मुनि लिङ्गों को धारा औ।
गुरु चरणों में जाकर वस्त्रा,भूषण भी यूँ छोड़ दिये।
जैसे तिनका सड़ा गला हो, बिन चिन्ता के तोड़ दिये॥ 2॥

और फेंक दे घर के बाहर, याद करे ना भूल कभी।
खेद करे ना दिल में उसका, चुभ सकता है शूल कभी॥
इसी भाँति इन महाजनों ने, अन्तर बाहरि ग्रन्थों को।
त्याग दिया है विस्मृत करके, पकड़ लिया शिवपंथों को॥3॥

भू पर सोते गगन ओढ़ना, शारद ऋतु में चौहट पे।
नहीं काँपते ना भय खाते, सुर के भी मन मोहत है॥
कमर कसी है प्राण हरण सम, भी हो जावे उपसर्गा।
नहीं डिगेंगे विचलित ना हो, चरित धरा है भवभंगा॥ 4॥

तुमरे भोजन को देखो तो, लगता षट् रस मिश्रित है।
लेकिन नीरस लेते हम तो, देख आपको विस्मित है॥
कई दिनों उपवास धारकर, निकट आत्म में वास किया।
आनन देखो लगता मानो, अभी अशन कुछ खास किया॥5॥

कंपित करने वाली ओहो, बाधा आई जब तुम पर।
ना कांपे सो नाम अंकपन, सार्थक कीना है सुन्दर॥
सभी शिष्य भी तुमरे अनुचर, बनकर परिषह जीत गये।
आज खुशी से पूजन की सो, हमरे अघ भी भीत भये॥6॥

जयमाला यह हमको स्वामी, कर्मों पर जय पाने की।
ताकत देवे मनःशक्ति दे, मोक्ष महल तक जाने की॥
पूरी करता कारण उसका, अल्प बुद्धि यह बालक हैं।
हे गुरुवर हम चरणों आये, आप हमारे पालक हैं॥ 7॥

(घत्ता)

हे यतिवर संता, आप महन्ता, अर्चा पूजा जब करते।
तब भव से डरकर, थाली भरकर, द्रव्य चरण में हम धरते॥
गुरु ताप मिटा दो, मोह बढ़ा[1]दो, शरण आपकी मन भावे।
सो नम नम नमते, सुख से सनते, क्लेश हमारे भग जावे॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं......।

आशीर्वाद

सूरि अकम्पन सहित सात सौ, मुनियों की ये अर्चा है।
भव की नाशक शिव की शासक, जो करता नित चर्चा है॥
कर्म कटे तिस दुर्गति मिटती, सद्गति में वो जाता है।
परम्परा से मुक्ति महल में, जा बसता पा साता है॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

1. समाप्त

तृतीय पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय)

विघ्न मिटा सो रक्षा करने, का बंधन जब बाँधा था।
रक्षा बन्धन पर्व बना था, विष्णु ऋषी ने साधा था॥
वन्द्य अकम्पन आदिक गुरु को, आज बुलाऊँ निकट करूँ।
विराजमान कर उर में पूजा, करके कल्मष विकट करूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(आल्हा)

स्वर्ण कलश में जल ले आया, धार देयकर मन हरषाया।
जन्म मृत्यु का क्रम मिट जावे, गुरुवर तेरी महिमा गावे॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्याली भरकर चन्दन लाया, खुशबू से मन्दिर महकाया।
भेट करूँ हे गुरुवर तुमको, आप शरण है केवल हमको॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो संसार-ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल भराकर अक्षत लेकर, तृप्त नहीं हूँ चरणा देकर।
कितना कैसा भरभर लाऊँ, अक्षय पद की आस लगाऊँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

वास नहीं है सुख का जिसमें, चक्कर में पड़ हा हा उसके।
चौरासी लख भटक रहा हूँ, पुष्प चढ़ा अब सुलझ रहा हूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः काम-बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्त प्रकारे नैवज खाये, पुद्गल में पर स्वाद कहाँ रे।
इसीलिए कुछ घेवर बावर, भेंट चढ़ाने आया गुरुवर॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेदज्ञान की ज्योति जलाकर, अन्ध मिटाया शिवमग पाकर।
दीपक अर्पण से फल पाऊँ, आतम की सुधि झट पा जाऊँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विध की खुशबू वाली, धूपों की भर मैं तो थाली।
शिवपथ स्वामी अघ की बदबू, दूर करो मम तुमको अरचूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे मीठे मृदु सम फल के, थाल भरा ले आया चल के।
मोक्ष फलों को अब बस पाऊँ, ताकी भव में फिर ना आऊँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोक्ष-फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्य मिलाकर लाया, आठों कर्म मिटाने आया।
पद अनर्घ की प्यास जगी है, लौकिक पद की वास[1] भगी है॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽनर्घ पद प्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. इच्छा/गंध

प्रत्येक अर्घ

(दोहा)

पूजा मैंने आपको, चरणों दरब चढ़ाय।
नेक नेक गुण के धनी, अर्घ दऊँ इह आय॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामी

(ज्ञानोदय)

बढ़ जाता समृद्ध होयकर, फलीभूत हो जाता है।
आप चरण में आता उसको, नाम ''समर्धक'' भाता है॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक मुनि-सम, मेरा मन ना कंपित हो।
इसी भाव से अर्घ चढ़ाकर, जीवन करता अर्पित औ॥1॥

ॐ ह्रः समर्धक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कल्प जाल संकल्प छोड़कर, संकल्पित हो नियमों में।
कर्म नाश को कमर कसी सो, ''संकल्पी'' हो धर्मों से॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 2॥

ॐ ह्रः संकल्पी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दमन किया है ईर्षा का गंभीर, वृत्ति अपनाई है।
अहो ''धीरता'' शांत चित्तता, देख हृदय पधराई है॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 3॥

ॐ ह्रः धीरता-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्त-शतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आश्मन से भी पक्का तुमरा, मन संयम में पाषाणी।
बना लिया औ''दृढ़ आतम''हो, स्वस्थ चित्त हो सुखदानी॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 4॥

ॐ ह्रः दृढ़ात्मा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सोम सौम्यता फीकी पड़ती, देख सौम्य तव मुद्रा से॥
''सौम्य-गुणी'' की पूजा करता, जाग उठूँ अब तन्द्रा से॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 5॥

ॐ ह्रः सौम्यता-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्त-शतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

क्षेम कुशल कल्याण करत हो, पशुगण सुरगण मानव का।
''क्षेमंकर'' की पूजा से तो, मिट जाती है दानवता॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक मुनि-सम, मेरा मन ना कंपित हो।
इसी भाव से अर्घ चढ़ाकर, जीवन करते अर्पित औ॥ 6॥

ॐ ह्रः क्षेमंकर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भव सागर में कर्णधार बन, भवि को पार उतारत हो।
रक्षा करते भव भ्रमणों से, तभी आप भव ''तारक'' हो॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 7॥

ॐ ह्रः तारक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आभूषण का अलंकार का, त्याग किया पर सुन्दर है।
पचमुण्डन से मण्डित तुम हो, नाम ''अमण्डं'' मनहर है॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 8॥

ॐ ह्रः अमण्ड-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दुष्ट रहा हो पाप लिप्त हो, व्यसनों में अति डूबा हो।
''शरण-दातृ'' की शरण गहे तो, भव भोगों से ऊबा हो॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 9॥

ॐ ह्रः शरणदातृ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तिथि निश्चित ना आने की है, ना जाने का निश्चय है।
''अतिथि'' आप है भोजन का भी, वार दिवस ना संशय है॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 10॥

ॐ ह्रः अतिथि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गुरुवर्यो का परमेष्ठी का, मान करे सम्मान करे।
अभिवादन कर''अभिवादक''जी, पाद कमल में माथ धरे॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 11॥

ॐ ह्रः अभिवादक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

स्वार्थ छोड़ परमार्थ आपने, साध लिया सो हे स्वामी!।
सच्चे ''स्वार्थी'' आप कहाये, पूज करे हम अभिरामी॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 12॥

ॐ ह्रः स्वार्थी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शिष्ट ''सुसंस्कृत'' आचारों से, संस्कृत जीवन कर लीना।
सभ्य आप विश्वास पात्र हो, अर्घ चरण में दे दीना॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक मुनि-सम, मेरा मन ना कंपित हो।
इसी भाव से अर्घ चढ़ाकर, जीवन करते अर्पित औ॥ 13॥

ॐ ह्रः सुसंस्कृत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उत्तम बढ़िया नेक नेक सब, गुण गण से तुम अन्वित हो।
''शस्यक'' तुमरा पूजक झट से, बन जाता गुण अर्चित औ॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 14॥

ॐ ह्रः शस्यक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कठोर कर्कश तन को दुखिया, करते हैं उन योगों को।
साध बने हो ''सिद्धयोगि'' हम, पूज तजे भव रोगों को॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 15॥

ॐ ह्रः सिद्धयोगी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दीक्षा के उन संस्कारों से, षोडस गुरु ने गाये जो।
संस्कारित हो तभी ''सुदीक्षित'', नाम सुमर शिर नाये औ॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 16॥

ॐ ह्रः दीक्षित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सौ सौ भाग्यं जगे साथ में, तभी बने हो महाव्रती।
नमूँ तुमें ''सौभाग्यशालि'' जी, नाहिं बनूँ अब पापमती॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 17॥

ॐ ह्रः सौभाग्यशाली-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पाँचों अक्षों मन पर भी तो, शासन तुमरा चलता है।
आज्ञा में सब चलते हैं सो, ''शासक'' तुमको नमता मैं॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 18॥

ॐ ह्रः शासक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सद्देवों सद्शास्त्रों गुरुओं, में श्रद्धा अतिभारी है।
''श्रद्धावन्ता'' नाम जपूँगा, पाने सुख की क्यारी मैं॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 19॥

ॐ ह्रः श्रद्धावन्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तप संयम की यम-दम-शम की, रक्षा करते ताकत से।
''संरक्षक'' तव भक्ति करे तो, मिट जाते भव पातक रे॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक मुनि-सम, मेरा मन ना कंपित हो।
इसी भाव से अर्घ चढ़ाकर, जीवन करते अर्पित औ॥ 20॥

ॐ ह्रः संरक्षक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

विधि विधान की विधा जानकर, सही व्यवस्थित चारित को॥
बतलाते हैं ''संविधायका'', पूजक के अघ खारिज[1] हो॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 21॥

ॐ ह्रः संविधायक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दुस्सह परिषह सहने में तुम, सफल हुए सो महता हो।
''महापुरुष'' जी महाकार्य को, धारण कर हम महता हो॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 22॥

ॐ ह्रः महापुरुष-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जो भी करते कार्य उसी में, लीन हुए ''तल्लीन'' हुए।
तभी चित्त में थिरता रहती, हम तुममें संल्लीन हुए॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 23॥

ॐ ह्रः तल्लीनता-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मोक्षमार्ग में प्रेरित करते, भव्यों को शिवगामी को।
''उत्प्रेरक'' हैं चरण नमें तो, बन सकता निजपानी[2] औ॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 24॥

ॐ ह्रः उत्प्रेरक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ज्ञानदान में अभयदान में, चतुर रहे हैं आगे हैं।
''दानवीर'' की शरण गहे तो, दुष्कृत सबही भागे हैं॥
श्रेष्ठ अकंपन आदिक........॥ 25॥

ॐ ह्रः दानवीर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(दोहा)

तन-मन-वाचा सर्व ही, ढले धर्म में वाह।
''धर्ममूर्ति'' तव नाम सो, ना निकलेगी आह॥ 26॥

ॐ ह्रः धर्ममूर्ति-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. समाप्त हो 2. आत्मानुभवी

प्रचार करते धर्म का, ''विज्ञापक'' हो श्रेष्ठ।
तीन लोक डंका बजा, कीना कारज जेष्ठ ॥ 27 ॥

ॐ ह्रः विज्ञापक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

यथाक्रमिक आवश्यका, करते हो निर्दोष।
नाम ''विधायक'' आपका, मिट जायेंगे दोष ॥ 28 ॥

ॐ ह्रः विधायक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मीठे-मीठे बोलते, सुनकर पापी जीव।
पाप छोड़ते सो गुरु, ''मृदुभाषी'' हर पीव ॥ 29 ॥

ॐ ह्रः मृदुभाषी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मत्सर ईर्षा दंश को, छोड़ दिया है आर्य।
रहे ''विमत्सर'' करत हो, अच्छे-अच्छे कार्य ॥ 30 ॥

ॐ ह्रः विमत्सर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शास्त्रों में निष्णात हो, सब शास्त्रों का ज्ञान।
''कोविद'' हे गुरु मेट दो, मेरा सब अज्ञान ॥31 ॥

ॐ ह्रः कोविद-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बुद्धिमान है लोक में, जितने उनमें आप।
वर माने सो ''धीवरा'', पूज्य आप निर्माप ॥ 32 ॥

ॐ ह्रः धीवर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शिक्षा देते मोक्ष के, मग की जो है चाल।
''शिक्षक'' मेरे भव हरो, भक्त बना मैं बाल ॥ 33 ॥

ॐ ह्रः शिक्षक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

खगपति नरपति भूपति, थुति करते हैं नित्य।
श्लाघा कर शंसा करे, ''स्तुत्य'' पूजहूँ नित्य ॥ 34 ॥

ॐ ह्रः स्तुत्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

प्रतिभाशाली चतुर है, धी तुमरी मुनिराज।
''सुधी'' आपकी पूज से, बन जाते सब काज ॥35 ॥

ॐ ह्रः सुधी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

स्वभाव अच्छा आपका, श्रेष्ठ शील कहलाय।
नाम ''सुशीलं'' पूजते, भव के कल्मष जाय ॥ 36 ॥

ॐ ह्रः सुशील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उदार है, रमणीय है, कभी न बिगड़े चित्त।
सो ''सुमन'' में पूजता, बने रहो मम मित्त ॥37 ॥

ॐ ह्रः सुमन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मात्र जैन के व्रत रहे, कल्याणक के हेतु।
धार आप ''सुव्रती'' गुरु, बने व्रतों के केतु ॥38 ॥

ॐ ह्रः सुव्रती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भाग्यवान सौभाग्य से, मुनि धर्मों को धार।
सहे परीषह ''सुभग'' के, दर्श रहे सुखकार ॥ 39 ॥

ॐ ह्रः सुभग-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''पात्र रहे उत्तम'' अहो, रहे दान के योग्य।
दान देय दाता बने, क्रम से शिव के भोग्य ॥40 ॥

ॐ ह्रः सुपात्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जिनवर के मत का सदा, करे समर्थन आप।
तभी ''समर्थक'' वाद में, जीत जमाई साख ॥ 41 ॥

ॐ ह्रः समर्थक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सबके मंगलकार का, ''मांगलिकं'' दुखहार।
भग जाते तुमरे निकट, सभी अमंगल हार ॥ 42 ॥

ॐ ह्रः मांगलिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

न्यायोचित सत्याश्रितं, धर्म गहा है नेक।
''धार्मिक'' मेरा शीश ये, सफल हुआ पद टेक ॥43 ॥

ॐ ह्रः धार्मिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सत्व गुणों से बद्ध हो, कपट रहित आचार।
''सात्त्विक'' गुणधर मैं नमूँ, पाने सत्त्वाचार ॥44 ॥

ॐ ह्रः सात्त्विक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शास्त्रों में तुम कुशल हो, ''शास्त्री'' तभी कहात।
पूजे जो भी भक्ति से, पाप सभी बढ़[1] जात॥45॥

ॐ ह्रः शास्त्री-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तपोदर्चि में आत्म को, संस्कारित कर लीन।
''संस्कारी'' को पूज ले, नहीं बनेगा हीन॥ 46॥

ॐ ह्रः संस्कारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

विरति भाव वैराग्य को, धार लिया मतिमान।
सो ''संवेगी'' अर्घ दे, बन जावे गतमान॥47॥

ॐ ह्रः संवेगी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अतिशय प्रज्ञा प्राप्तकर, अशुभ भाव सब टाल।
''श्रेय'' पूज से पा सके, निःश्रेयस की चाल॥48॥

ॐ ह्रः श्रेय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मान गला सो आपका, विनय बना निजभाव।
''विनयशील'' तव पूज का, बना रहे मम चाव॥49॥

ॐ ह्रः विनयशील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

किया विनिश्चय तत्त्व का, व्रत में थिरता पाय।
''दृढ़व्रत'' ना डिगते तभी, पूज करूँ गुणगाय॥50॥

ॐ ह्रः दृढ़व्रत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

षाद[2] रहा ना हर्ष ना, ना तुममें अतिरेक।
पूज्य ''विमद'' तव नाम का, जाप जपूँ दिनैरन॥51॥

ॐ ह्रः विमद-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ढूँढ़-ढूँढ़ कर दोष को, कर देते हो चूर।
''अन्वेषक'' शिव राह के, गुणगण से भरपूर॥52॥

ॐ ह्रः अन्वेषक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

---
1. नाश 2. खेद

(लय-जय जय नाथ परम गुरु हो)

''आतम-ज्ञानी'' निज को जान, कीना तुमने आतम पान।
दयानिधि तोय, जय जय वन्दूँ, चरणा दोय दया....।
पूज्य अकम्पन मुनिवर धीर, पूजूँ मेटो भव की पीर॥
दयानिधि तोय, जय जय वन्दूँ, चरणा दोय दया॥ 53॥

ॐ ह्रः आत्मज्ञानी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सब जीवों में ''करुणा'' भाव, धारा तुममें मेरा चाव।
दयानिधि.............॥ 54॥

ॐ ह्रः करुणा-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

करो साधना शिवपथ चाल, ''साधक'' पद में नमता भाल।
दयानिधि.............॥ 55॥

ॐ ह्रः साधक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भव-भोगों से आप ''विरक्त'', विरत भाव में होऊँ रक्त।
दयानिधि.............॥ 56॥

ॐ ह्रः विरक्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निज पर का जो होता ज्ञान, ''ज्ञानी'' गुरुवर आप महान।
दयानिधि.............॥ 57॥

ॐ ह्रः ज्ञानी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

योगी जन में आप सुश्रेष्ठ, ''योगीश्वर'' हो गुरुवर जेष्ठ।
दयानिधि.............॥ 58॥

ॐ ह्रः योगीश्वर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

विषय वासना जीती ईश, ''शीलवान'' हो मेटो रीश।
दयानिधि.............॥ 59॥

ॐ ह्रः शीलवान-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''सद-आचारी'' सब आचार, धारा तुमने निज आधार।
दयानिधि.............॥ 60॥

ॐ ह्रः सदाचार-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''व्रत-पालो'' तुम मान सुहर्ष, बने हमारे तुम आदर्श।
दयानिधि तोय, जय जय वन्दूँ, चरणा दोय दया....।
पूज्य अकम्पन मुनिवर धीर, पूजूँ मेटो भव की पीर॥
दयानिधि तोय, जय जय वन्दूँ, चरणा दोय दया....॥ 61॥

ॐ ह्रः व्रत-पालक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अच्छे-अच्छे करते काम, ''सत्कर्मी'' है तुमरा नाम।
दयानिधि.............॥ 62॥

ॐ ह्रः सत्कर्मी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पापारम्भों से हो दूर, ''निरआरम्भी'' सुख के पूर।
दयानिधि.............॥ 63॥

ॐ ह्रः निरारम्भ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कर्मबन्ध को देंगे छोड़ ''अवमोचक'' हम नाता जोड़।
दयानिधि.............॥ 64॥

ॐ ह्रः अवमोचक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

षट् कायों के रक्षक आप, परम ''दयालू'' ना है माप।
दयानिधि.............॥ 65॥

ॐ ह्रः दयालु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जीवन पूरा आप ''पवित्र'', सब जीवों के बने सुमित्र।
दयानिधि.............॥ 66॥

ॐ ह्रः पवित्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बैरी में भी ना हो रोष, ''क्षमा'' भाव का तुममें कोष।
दयानिधि.............॥ 67॥

ॐ ह्रः क्षमा-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तप करके तन कीना क्षीण, ''क्षीणकाय'' हो हे परवीण!।
दयानिधि.............॥ 68॥

ॐ ह्रः क्षीणकाय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

महा तपों के व्रत को धार, तपोव्रती हो भव के पार।
दयानिधि तोय, जय जय वन्दूँ, चरणा दोय दया....।
पूज्य अकम्पन मुनिवर धीर, पूजूँ मेटो भव की पीर॥
दयानिधि तोय, जय जय वन्दूँ, चरणा दोय दया....॥ 69॥

ॐ ह्रः तपोव्रती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''उग्र तपों'' का तुममें ओज, तभी करोगे शिव में मौज।
दयानिधि.............॥ 70॥

ॐ ह्रः उग्रतपो-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पैदल-पैदल चलते नित्य, ''पदयात्री'' के अघ हो रित्य।
दयानिधि.............॥ 71॥

ॐ ह्रः पदयात्री श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''ब्रह्मचर्य'' के तुम हो कंत, तुमही शिव के सच्चे पंथ।
दयानिधि.............॥ 72॥

ॐ ह्रः ब्रह्मचारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''अशुभ काम से रहते दूर'', हो जावेंगे कल्मष चूर।
दयानिधि.............॥ 73॥

ॐ ह्रः अशुभेन विरत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रहे ''अयाचक'' याञ्चा त्याग, दीन बनो ना हे बड़भागी।
दयानिधि.............॥ 74॥

ॐ ह्रः अयाचक-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बला समझ धन तृष्णा छोड़, बने ''अधनक[1]'' तुम माया छोड़।
दयानिधि.............॥ 75॥

ॐ ह्रः अधनक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(आल्हा)

श्लाघा तुमरी जो-जो करते, उसके तो वा आरत[2] मरते।
नाम ''प्रशस्ता'' करे प्रशंसा, अर्घ चढ़ाते समकित हंसा॥76॥

ॐ ह्रः प्रशस्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कषाय रिपु की तीन ढेरियाँ, मिटा आपने उदय बेड़ियाँ।
''प्रशान्त-आतमा'' मुनि पद पाया, मैं तो तेरी पूज रचाया॥77॥

ॐ ह्रः प्रशान्तात्मा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. निर्ग्रन्थ 2. दुख

आप प्रशंसा योग्य ''प्रशस्या'', तारिफ करते तुमरी शस्या।
भूरि-भूरि मैं करूँ प्रशंसा, पूजन में हो मेरी मँसा॥ 78॥
ॐ ह्रः प्रशस्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
सम्यग्ज्ञानी विज्ञ कहे हो, ''संज्ञानी'' हम नाम गहे औ।
सच्चा-सच्चा ज्ञान सुपाया, पूजन करने गुरु मैं आया॥ 79॥
ॐ ह्रः संज्ञानी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
विद्या में ना कमी रही है, अशुभ तत्त्व की बुद्धि गई है।
नाम ''शुद्धधी'' पूजा करते, अज्ञ भाव के शासन भगते॥ 80॥
ॐ ह्रः शुद्ध-धी -नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
खोटा आशय तुमरा ना हो, भद्र भाव से भरे महा हो।
''शुद्धाशय'' की पूजा करते, कपट भाव को झट से हरते॥81॥
ॐ ह्रः शुद्धाशय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
सुनते ही गुरु नाम तुमारा, भगने लगता कल्मष कारा।
इसीलिए तो ''श्राव्य'' कहावे, पूजन करने श्रावक आवे॥82॥
ॐ ह्रः श्राव्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
ऋषि यति मुनि अनगार कहावे, चार संघ के पाप नशावे।
इनके नायक ''संघपति'' माने, हम तो सबकी पूजन ठाने॥83॥
ॐ ह्रः संघपति-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
सर्वोपरि हो सर्वोत्तम हो, ''जेष्ठ'' तभी तुम परमोत्तम हो।
श्रेष्ठ द्रव्य से पूजा करता, मेरा मन तो तुममें रमता॥84॥
ॐ ह्रः जेष्ठ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
जन्म जरा मृति रोग कहावे, इनकी औषधि आप बतावे।
रहे ''चिकित्सक'' आप सही है, हमने आ अब शरण गही है॥85॥
ॐ ह्रः चिकित्सक-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
ज्ञान दर्श में लीन रहे हो, आतम को नित चीन रहे हो।
चारित्रों को गहते मग्नं, तभी हुआ है नाम ''सुलग्नम्''॥ 86॥
ॐ ह्रः सुलग्न-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जानो वृष के तौर तरीके, आचारी ना आप सरीखे।
जग में कोई और मिलेंगे, ''शिष्ट'' नाम तब सार्थ लगेंगे॥87॥
ॐ ह्रः शिष्ट-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
शाप लगे हो अगर किसी को, तव दर्शन से दूर सभी हो।
''शाप-निवारक'' तभी कहाते, हमको तो बस तुम ही भाते॥88॥
ॐ ह्रः शाप-निवारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
रोधन करते सबके दोषा, मेट दिये है सबही रोषा।
निज के ''दोषों को भी शोधे, पूजा तुमरी अघ को शोधे॥89॥
ॐ ह्रः दोषशोधक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
देख वेदना दूजे की तुम, वेदन करते उसका निज सम।
''संवेदन है शील'' आप वा, पूजन से हो दोष साफ वा॥90॥
ॐ ह्रः संवेदनशील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
संकट आवे यदी किसी पर, अरजी लेकर आवे दर पर।
शीघ्र मिटेंगे ऋद्धि सिद्धि हो, ''संकटमोचक'' नाम सिद्ध हो॥91॥
ॐ ह्रः संकटमोचक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
दाढ़ी मूच्छों सिर के सारे, केश लोच कर इस विध डारे।
जैसे माली घास उखाड़े, ''लुंचित'' पूजन पाप उखाड़े॥92॥
ॐ ह्रः लुंचित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
न्याय नीति का लम्बन लेते, इंशाफों की शरणा सेते।
आप रहे ''ईमानदार'' है, न्यायवान भी नमत द्वार है॥93॥
ॐ ह्रः ईमानदार-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
सम्यक् वृष का थापन करके, जब मिट जाते धर्म जगत के।
सबको फिर तुम सत्य बताते, ''संस्थापक'' हो हम सिर नाते॥94॥
ॐ ह्रः संस्थापक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
चरित आपका सत् माना है, ''सच्चारित्री'' शिव पाना है।
पर-भावों का गम छोड़ा है, हमने तुमसे मम जोड़ा है॥95॥
ॐ ह्रः सच्चरित्र-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जिनवर ने जो मार्ग बताये, उस पर चल कर कर्म खपाये।
''अनुगामी'' हो शिवपथ के तुम, पूजन करके हर्षित हैं हम ॥96 ॥

ॐ ह्रः अनुगामी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जो भी तुम कह देते मुँह से, वैसा ही फल जाता क्षण में।
इसीलिए ''वरदाता'' जग में, पूजूँ रहना मेरे मग में ॥97 ॥

ॐ ह्रः वरदाता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

महापुरुष का वन्दन करते, हाथ जोड़ शिर पद में धरते।
''वन्दक'' नामा गुरुवर पूजूँ, पूजन कर अब भव से छूटूँ ॥98 ॥

ॐ ह्रः वन्दक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

श्रम करते हैं श्रेय राह में, ना भरते हैं कभी आह ये।
कुशल ''श्रमिक'' है चतुर कहावे, भव को तज हम शिव को जावे ॥99 ॥

ॐ ह्रः श्रमिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

संतोषी हो सब कार्यों में, उत्तम हो तुम सब आर्यों में।
शील रहा ''संतोष'' आपका, पूजूँ तुमरा नहीं माप वा ॥100 ॥

ॐ ह्रः संतोष-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(ज्ञानोदय)

शत सौ-शत सौ वन्दन करके, गुरुभक्ती में नाचूँगा।
गीत-सुगीतं भक्ति भाव से, स्वर लहरी में गाऊँगा॥
ढ़ोल-ढ़माका झालर-घण्टा, बजा-बजाकर अर्घ दऊँ।
हे गुरुवर जी ऐसा वर दो, वन्द्य पदों को शीघ्र गहूँ॥

ॐ ह्रः समर्धक आदि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जाप्य :- ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्त-शतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः। (9, 27,108)

जयमाला

(दोहा)

ऋषिवर के पद अर्घ दे, गूँथू उनकी माल।
मात्र रहा उद्देश्य मम, मिट जावे अघ चाल ॥1 ॥

(पद्धरि)

गुरु पूज्य अकम्पन जय जय हो, तुम श्रुतसागर मुनि जय जय हो।
हे विष्णु सिन्धु ऋषि जय जय हो, हे गुणसागर यति जय जय हो ॥2 ॥

हे सारचन्द्र गुरु जय जय हो, हे परम अहिंसक जय जय हो।
ओ वत्सलधर गुरु जय जय हो, उपसर्ग जयी गुरु जय जय हो ॥3 ॥

हे सन्त शिरोमणि जय जय हो, हे वाद जयी मुनि जय जय हो।
मन अक्ष विजेता जय जय हो, भव भ्रमण मिटाया जय जय हो ॥4 ॥

शुभ ध्यान सुधारक जय जय हो, हे अशुभ निवारक जय जय हो।
वर धर्म विधायक जय जय हो, तन राग विदारक जय जय हो ॥5 ॥

घर मूर्च्छा त्यागी जय जय हो, भव भोग विरागी जय जय हो।
मम अहं मिटाया जय जय हो, निज आतम ध्याया जय जय हो ॥6 ॥

वन कानन बसते जय जय हो, ध्रुव चेतन रहते जय जय हो।
रत रहते प्रभु में जय जय हो, व्रत नियमों में दृढ़ जय जय हो ॥7 ॥

समशील धरा है जय जय हो, श्रमशील परा है जय जय हो।
लवलीन हुए वृष जय जय हो, गम आर्त्त मिटा दो जय जय हो ॥8 ॥

वसु टार दिये मद जय जय हो, वसु धार लिये गुण जय जय हो।
हे धर्म धुरंधर जय जय हो, हे धर्म सुरक्षक जय जय हो ॥9 ॥

हे धर्म प्रभावक जय जय हो, हे थिर योगी तुम जय जय हो।
सब काम मिटाया जय जय हो, निज काम बनाया जय जय हो ॥10 ॥

अनुशासित रहते जय जय हो, निज वासित रहते जय जय हो।
उपयुक्त समझते जय जय हो, गुरु देख हरषते जय जय हो ॥11॥

मनरंजन छोड़े जय जय हो, तन रंगत तोड़े जय जय हो।
नहिं शंका संशय जय जय हो, नहिं दंशा[1] संकट जय जय हो ॥12॥

परमेष्ठी पंचम जय जय हो, हे शिव ऐष्ठी तुम जय जय हो।
छल छद्म नहीं सो जय जय हो, निर्मान सही सो जय जय हो ॥13॥

गुणगान करूँ गुरु जय जय हो, सब दोष हरो गुरु जय जय हो।
हे साधु ऋषीश्वर जय जय हो, हे पूज्य मुनीश्वर जय जय हो ॥14॥

मैं भक्ति करूँ गुरु जय जय हो, मैं भक्त बना तुम जय जय हो।
यह जयमाला तव जय जय हो, यह गुणमाला गुरु जय जय हो ॥15॥

(घत्ता)

हे पूज्य ऋषीश्वर, सन्त मुनीश्वर, अर्चा तुमरे चरणों की।
जो करता अर्चन, पद का चर्चन, शरण गये भव तरणों की॥
हम नाचे गाँवे, बीन बजावे, अर्घ चढ़ावे भक्ती से।
हम भव से जावे, फिर ना आवे, करे तपस्या शक्ती से॥

ॐ ह्रः समर्धकादि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आशीर्वादः)

सूरि अकम्पन सहित सात सौ, मुनियों की ये अर्चा है।
भवनाशक है शिव की शासक, जो करता नित चर्चा है॥
कर्म कटे तिस दुर्गति मिटती, सद्गति में वो जाता है।
परम्परा से मुक्ति महल में, जा बसता पा साता है॥

इत्याशीर्वाद, पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

1. डाँस

चतुर्थ-पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय)

उद्धारक हैं उचित कार्य से, ऊँचे हैं आदर्श अहो।
उत्तम-उत्तम चर्या करके, हिला दिये सुर आसन को॥
सप्तशतक ऋषि आज बुलाता, उदित हुआ है भाग्य अहा।
थापन करके निकट करूँ हे, गुरुवर ! ये ही काम महा॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

तपमय गहन सरोवर में वा, न्ह्वन किया है दिन राती।
कर्म मलों को धोने हेतू, शिवपथ में की परभाती॥
जल अर्पित है आप चरण में, जन्म-जरा मृति नाशन को।
आया हूँ मैं पूजन करने, मोक्ष रमा के पावन को॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो जन्म-जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन तरु सम प्रभु चरणों की, भक्ति पयस को डाल अये।
घिस-घिस लेप लगा आत्म में, मन संताप मिटाय अरे॥
चन्दन अर्पित आप चरण में, भव आताप नशावन को।
आया हूँ मैं पूजन करने, मोक्ष रमा के पावन को॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय सुख का धाम मोक्ष की, भावन भा-भा पहिचाना।
आत्मराम का अविनाशीपन, अक्षय चेतन को जाना॥
अक्षत अर्पित आप चरण में, अक्षय पद के पावन को।
आया हूँ मैं पूजन करने, मोक्ष रमा के पावन को॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शैलेशी जो रही अवस्था, सहस अष्टदश दोषों से।
बचने तजते महा मुनीश्वर, काम बाण के कोशों से॥
पुष्प समर्पित आप चरण में, काम देव के नाशन को।
आया हूँ मैं पूजन करने, मोक्ष रमा के पावन को॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वतता का क्षीर भराया, बोध मयी शुभ चावल की।
खीर बनाकर खाय मेंटते, क्षुधा वेदना भव-वन की॥
नैवज अर्पित आप चरण में, क्षुधा रोग के नाशन को।
आया हूँ मैं पूजन करने, मोक्ष रमा के पावन को॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-ज्योति जो तीन लोक को, एक साथ परकाशे जी।
जला उसी से आत्म दीप को, बने हुए प्रभु खासे जी॥
दीपक अर्पित आप चरण में, मोह भाव के नाशन को।
आया हूँ मैं पूजन करने, मोक्ष रमा के पावन को॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गुणों के शासक जिन के, चरणों की पा संगत ये।
अष्ट कर्म की धूम उड़ाने, रंग गये नव रंगत में॥
धूप समर्पित आप चरण में, दुरित कर्म के नाशन को।
आया हूँ मैं पूजन करने, मोक्ष रमा के पावन को॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शम-दम समता पूर्ण दया जो, फल देखे जब अर्हत के।
ललचा करके लौकिक फल तज, भक्त बने हैं पूजित के॥
फल अर्पित है आप चरण में, मोक्ष महाफल पावन को।
आया हूँ मैं पूजन करने, मोक्ष रमा के पावन को॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ अनर्घं लेकर आया, रहा अमौलिक चेतन है।
जिसको पाकर नन्त काल तक, निज आतम ही केतन है॥
द्रव्य सुअर्पित आप चरण में, आठों कर्म विनाशन को।
आया हूँ मैं पूजन करने, मोक्ष रमा के पावन को॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं......।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

प्रत्येक-अर्घ

(दोहा)

अष्टम वसुधा पावने, अष्टक दीना आज।
सबके चरणों अर्घ दूँ, सध जावे सब काज॥

(नरेन्द्र)

शंका तजकर ''निःशंकित'' हो, समदर्शन को पाया।
जीवादिक सब तत्त्वों में औ, श्रद्धा को सिर नाया॥
रक्षाबंधन पर्व बना यह, पूज्य अकंपन मुनि से।
अर्घ चढ़ाऊँ हे दुखजेता, तुमरी गाथा सुनि के॥ 1॥

ॐ ह्रः निःशंकित-अंग-मंडित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भव-भोगों की अक्ष सुखों की, कांक्षा तुमने छोड़ी।
''निःकांक्षित'' गुण पाकर ओहो, शिव से कांक्षा जोड़ी॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 2॥

ॐ ह्रः निःकांक्षित-अंग-मंडित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तजी जुगुप्सा व्रत संयम में, इष्ट-निष्ट सब अंगों।
रुग्ण देह में रही अपूरब, ''निर्विचिकित्सा'' संघों॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 3॥

ॐ ह्रः निर्विचिकित्सा-गुण-मंडित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तत्त्वातत्त्व रहे क्या जग में, देव-कुदेव सरागी।
वीतराग में भेद समझकर, बनेऽमूढ़ बड़भागी॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 4॥

ॐ ह्रः अमूढ़दृष्टि-अंग-मंडित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

थिर कर देते व्रत संयम से, चिगते को सच रस्ते।
''स्थितीकरण'' कर देने वाले, तुम ना भव में फस्ते॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 5॥

ॐ ह्रः स्थितिकरण-अंग-मंडित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

देख किसी के दोष शीघ्र ही, छुपा गुणों के ग्राही।
''उपगूहन'' के धारी गुण को, धारण कर शिवराही॥
रक्षाबंधन पर्व बना यह, पूज्य अकंपन मुनि से।
अर्घ चढ़ाऊँ हे दुखजेता, तुमरी गाथा सुनि के॥ 6॥

ॐ ह्रः उपगूहन-अंग-मंडित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वेरभ्यो नमः अर्घ्यं......।

साधर्मी में निश्चल मति से, वत्सल करते ज्ञानी।
धरा अंग ''वात्सल्य'' यही है, गुरुवर समकित पानी॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 7॥

ॐ ह्रः वात्सल्य-अंग-मंडित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मोह अंध को आप मिटाते, यथा शक्ति जिन धर्मों।
की करते ''परभावन'' हे गुरु!, पायेंगे शिव शर्मों॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 8॥

ॐ ह्रः प्रभावना-अंग-मंडित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शंका अवगुण रहता है तो, शंकित ही मन होवे।
शंका दोष मिटा आप तो, बीज मोक्ष के बोवे॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 9॥

ॐ ह्रः शंका-दोष-रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कांक्षा से सब वृष निष्फल है, कांक्षा भव में पटके।
लौकिक इच्छा मेट दयी सो, अब ना भव में अटके॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 10॥

ॐ ह्रः कांक्षा-दोष-रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ग्लानी से बहुमान घटेगा, चारित और तपों से।
आप रहे उत्साही तप में, तब ही पाप भगो रे॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 11॥

ॐ ह्रः जुगुप्सा-दोष-रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मूढ़ रहे तो निर्णय सच-सच, जीव नाहिं कर पावे।
बुद्धिमान तुम तजी मूढ़ता, इसीलिए शिव जावे॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 12॥

ॐ ह्रः मूढ़दृष्टि-दोष-रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दूजे के अवगुण को कह दे, अपने गुण को भाखे।
दोनों ही ना करते तुम औ, उपगूहन को राखे॥
रक्षाबंधन पर्व बना यह, पूज्य अकंपन मुनि से।
अर्घ चढ़ाऊँ हे दुखजेता, तुमरी गाथा सुनि के॥ 13॥

ॐ ह्रः अनुपगूहन-दोष-रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

च्युत ना करते च्युत ना होते, शिवपथ में गुरुराजे।
षष्ट अंग को पाले तो फिर, दूषण काहे लागे॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 14॥

ॐ ह्रः अस्थितिकरण-दोष-रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

छल कर ले तो वत्सलता में, दाग लगेगा भाई।
निश्छल मम गुरु ऐसी गलती, क्या कर सकते भाई?॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 15॥

ॐ ह्रः अवात्सल्य-दोष-रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

क्लेश बढ़े या तू-तू मैं-मैं, करने से वृष हाले।
हो जावे बदनाम धर्म सो, मेरे गुरु सब टाले॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 16॥

ॐ ह्रः अप्रभावना-दोष-रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कितने ज्ञानी फिर भी उसमें, मान नहीं है आया।
ज्ञान मदों के त्यागी तुममें, मेरा मन ललचाया॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 17॥

ॐ ह्रः ज्ञानमद रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सब कार्यों में योग्य रहे पर, ना चाहो तुम पूजा।
पूजा-मद से मुक्त आप में, मेरा मन भी रीझा॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 18॥

ॐ ह्रः पूजामद रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उच्च कुलों में तीर्थ वंश में, जन्म लिया है श्रेष्ठा।
फिर भी कुल मद छोड़ दिया तो, पद पाया ये जेष्ठा॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 19॥

ॐ ह्रः कुलमद रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मामा-मौसी नाना-नानी, रहे प्रतिष्ठित सारे।
जाति मदों के त्यागी तुमने, कष्ट सहे हैं खारे॥
रक्षाबंधन पर्व बना यह, पूज्य अकंपन मुनि से।
अर्घ चढ़ाऊँ हे दुखजेता, तुमरी गाथा सुनि के॥ 20॥

ॐ ह्रः जातिमद रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मनो-बली है वचन काय का, बल भी धारो पूरा।
ना दिखते पर तुमको निर्बल, कोई अचरज पूरा॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 21॥

ॐ ह्रः बलमद रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पुण्योदय से ऋद्धि सिद्धियाँ, आकर तुमको घेरे।
लेकिन उनको कर्मोदय से, प्राप्त समझ मद गेरे॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 22॥

ॐ ह्रः ऋद्धिमद रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अनुपम तप है तुलना भी तो, नहीं किसी से होवे।
तप करते पर आतम समझे, सो आपा ना खोवे॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 23॥

ॐ ह्रः तपोमद रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सुडौल सुन्दर वपु में कैसे, अहं आपको होवे।
महिमा जानो चेतन की जो, निज में निज को खोवे।
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 24॥

ॐ ह्रः शरीर मद रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

खोटे देवों की अर्चा ना, करते तन-मन-वाणी।
अनायतन की सेवा तजते, निर्मल सम्यक् ज्ञानी॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 25॥

ॐ ह्रः कुदेवमय अनायतन सेवा दोष रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सग्रन्थी के निकट न जावे, सच्चे गुरु को जाना।
भेष दिगम्बर धारी को ही, पूज्य आपने माना॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 26॥

ॐ ह्रः कुगुरुमय अनायतन सेवा दोष रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म अहिंसा समझ लिया है, हिंसा ना मन भावे।
दया धर्म को छोड़ें ना क्यों, अनायतन में जावे॥
रक्षाबंधन पर्व बना यह, पूज्य अकंपन मुनि से।
अर्घ चढ़ाऊँ हे दुखजेता, तुमरी गाथा सुनि के॥27॥

ॐ ह्रः कुधर्ममय अनायतन सेवा दोष रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मिथ्या देवों के भक्तों की, संगति नाहीं भावे।
नहीं प्रशंसा करते सम्यक्, देवों में मन जावे॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 28॥

ॐ ह्रः कुदेवभक्तमय अनायतन सेवा दोष रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सराग गुरु के सेवक के प्रति, चित नाहीं ललचाया।
नहीं रखा व्यवहार तभी तो, निर्मल सम्यक् पाया॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 29॥

ॐ ह्रः सरागगुरु भक्त सेवा दोष रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म विरोधी, वृषघाती में, प्रेम नहीं है तोरा।
नायतनों को छोड़ा है सो, तुमसे नेहा मोरा॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 30॥

ॐ ह्रः कुधर्म सेवक सेवा दोष रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

लौकिक जन जो धर्म मानते, धर्म नहीं वह अच्छा।
ना करते विश्वास तभी तो, वृष धारा है सच्चा॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 31॥

ॐ ह्रः लोक मूढ़ता दोष रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ख्याति लाभ की इच्छा लेकर, राग दोष से मैले।
देवों में ना मूढ़ बने सो, मिथ्यातम को ठेले॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 32॥

ॐ ह्रः देव मूढ़ता दोष रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ग्रन्थ सहित जो गुर्वाभासी, उनको ना गुरु माने।
सच्चे गुरु की शरणा ले पा, खण्ड मूढ़ता हाने॥
रक्षाबंधन पर्व बना.........॥ 33॥

ॐ ह्रः गुरु मूढ़ता दोष रहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(पद्धरि)

औ क्षमाभाव के आप धनी, है नाम ''क्षमाधन'' नहीं कमी।
हम अर्घ चढ़ावे आय-आय, तुम चारित हमरे चित्त भाय॥ 34॥

ॐ ह्रः क्षमाधन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम सत्य तत्त्व के दृष्टा हो, तुम ''तत्त्व-विदा'' गुण स्रष्टा हो।
हम भक्ति भाव से महिमा को, हम गाते गुण की गरिमा को॥ 35॥

ॐ ह्रः तत्त्वविद-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हम नाच-नाच कर अर्चा से, दिन-रात आपकी चर्चा से।
हे नाम ''सुरार्चित'' सुर पूजे, अब हम भी तुमरे पद पूजें॥ 36॥

ॐ ह्रः सुरार्चित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

क्या हेय रहा है उपादेय, क्या ग्राह्य रहा है नहीं प्रेय।
हो आप ''विवेकी'' पूज्य महा, हम पूजन करते आज यहाँ॥37॥

ॐ ह्रः विवेकी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हे ''भाग्यवान'' हे पुण्यमही, हैं पुण्यवान भी आप सही।
हम अर्घ चढ़ाकर नाचत हैं, बस शिव मारग ही चाहत है॥38॥

ॐ ह्रः भाग्यवान-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम पवित थान में रहते है, सो पुण्यमही हम कहते हैं।
जो ''पावन'' गुरु के चरण पड़े, वे शिवमारग में तुरत बढ़े॥39॥

ॐ ह्रः पावन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''शुभ-शकुन'' आपके होते हैं, तव पाद पाप को धोते हैं।
जय गान तुम्हीं का हम गावे, हम पुण्य शकुन के पद धावे॥40॥

ॐ ह्रः शुभशकुन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम धर्म परायण सत्कर्मी, हो ईमानदार तुम सुखधर्मी।
हम ''पुण्यशील'' की पूज करे, हम पुण्यवान बन पाप हरे॥41॥

ॐ ह्रः पुण्यशील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तव ज्ञान सदा ही वर्धित है, ना ज्ञानमदों से मर्दित है।
हे ''वर्धमान'' तव पूज करूँ, मैं भव में ना अब जूझ मरूँ॥42॥

ॐ ह्रः वर्धमान-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम कुलाचार के पालक हो, तुम धर्म अहिंसा चालक हो।
हे ''धर्म-अचारी'' पाप हरो, मम भव-भव के संताप हरो॥43॥

ॐ ह्रः धर्माचारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तव दिवस रात के आचरणा, है बने नित्य ही भव-हरणा।
हे ''आर्य'' तभी तव नाम भया, गुरु तुमने पथ निर्दाम दिया॥44॥

ॐ ह्रः आर्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम श्रेष्ठ धिया के धारक हो, तुम धीमानों के तारक हो।
तव नाम ''सुधी'' मन भाया है, तव भक्त पूज को आया है॥45॥

ॐ ह्रः सुधी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम सज्जन में भी सज्जन हो, तुम करते निज में मज्जन हो।
हे ''सज्जन'' मुझको पार करो, मैं पूज करूँ उद्धार करो॥ 46॥

ॐ ह्रः सज्जन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम धीमन्तों में ''धीमत्'' हो, तुम चरणों नमते धीमत् हो।
हे बुद्धिमान हे गुणवन्ता, हम पूज करे हे गुरु सन्ता॥ 47॥

ॐ ह्रः धीमत्-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम दूर दृष्टि गंभीर रहे, तुम चिदानन्द को चीन रहे।
हम ''दूरदर्शि'' की अर्चा में, हम लीन रहे तव चर्चा में॥ 48॥

ॐ ह्रः दूरदर्शी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम वन में ही नित रहते हो, एकान्त थान में रमते हो।
हम ''वानप्रस्थ'' को पहिचाने, हम सत्य तत्त्व को अब जाने॥ 49॥

ॐ ह्रः वानप्रस्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम आकुल व्याकुल ना होते,सो नाम ''अनाकुल'' निज सोते।
मम आकुलता सब मिट जावे, अब आप चरण ही मन भावे॥ 50॥

ॐ ह्रः अनाकुल-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दूजे का यदि दोष दिखे तो, नहीं किसी से कहते हैं।
मन में उसको पचा लेय सो, ''पाचक'' तुमको नमते हैं॥
बलि आदिक की तलवारों को, कील दिया था देवों ने।
श्रुतसागर मुनि वाद विजेता, सूरि अकम्पन देवों के॥ 51॥

ॐ ह्रः पाचक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सत्य तत्त्व में डटे रहे सो, ''पारमार्थिक'' तव नामा है।
परमार्थों को प्राप्त हमें भी, सत्य धर्म को पाना है॥
बलि आदिक........... ॥ 52॥

ॐ ह्रः पारमार्थिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

स्याद्वाद मय जैनधर्म को, देश - देश फैलाते हो।
''धर्म-प्रचारक'' पूजू तुमको, बच्चों के दिल भाते हो॥
बलि आदिक........... ॥ 53॥

ॐ ह्रः धर्म-प्रचारक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बात बताते तंत भरी तुम, तथ्य-पथ्य बतलाते हो।
सो ''प्रतिपादक'' साँच तत्त्व के, गीत आपके गाते औ॥
बलि आदिक........... ॥ 54॥

ॐ ह्रः प्रतिपादक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दुखियों के,दुखियारों के भी, दुःख मिटा कर मग देते।
सुख पाने का हे ''प्रतिपालक''! हम तो तुमरे पद सेते॥
बलि आदिक........... ॥ 55॥

ॐ ह्रः प्रतिपालक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कितने ही प्रतिकूल लोग हो, उदास खिन्न ना होते हैं।
''अम्लानं'' तव नाम पूज हम, अपने मद को खोते हैं॥
बलि आदिक........... ॥ 56॥

ॐ ह्रः अम्लानं-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रूद्र भयानक रूप भयंकर, ना दिखता है कभी कहाँ।
नाम ''अरूदं'' पूजूँ मेरे, रुद्र भाव मिट जाय सदा॥
बलि आदिक की तलवारों को, कील दिया था देवों ने।
श्रुतसागर मुनि वाद विजेता, सूरि अकम्पन देवों के॥ 57॥

ॐ ह्रः अरूद्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मानवता में मनुज, पने में, आप हुए परिपक्व महा।
''मानुष'' तुमरे दरश करे तो, बच पावे फिर पाप कहाँ॥
बलि आदिक........... ॥ 58॥

ॐ ह्रः मानुष-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्मों के आधार आप है, धर्म तुम्हारे आश्रय से।
रहता है सो ''धर्ममयी'' तव, मिटे कष्ट तव आश्रय से॥
बलि आदिक........... ॥ 59॥

ॐ ह्रः धर्ममही-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रोम-रोम में प्रतिपल हे गुरु, तप में ही तो तपते हो।
''तपोमयी'' है जीवन तुमरा, तप में ही तो रमते हो॥
बलि आदिक........... ॥ 60॥

ॐ ह्रः तपोमही-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पुण्य उदय से शिव मारग में, चलने की पा क्षमता है।
''पवित'' हुए हो पवित किया है, पुण्य पवित भव अपना है॥
बलि आदिक........... ॥ 61॥

ॐ ह्रः पवित्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जैसे मणि की रक्षा करते, मान-मणी को मूल्यमयी।
त्यों तपते तप रक्षा करते, ''पुण्यमणी'' हो अनघमही॥
बलि आदिक........... ॥ 62॥

ॐ ह्रः पुण्यमणी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तपन-अंशु से पानी को ज्यों, शोष सुखा दे पूरा त्यों।
तप किरणों से कर्म उदक को, दूर करो ''तपनांशु'' अहो॥
बलि आदिक........... ॥ 63॥

ॐ ह्रः तपनांशु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सम्यग्दर्शन ज्ञान सहित तुम, अंतरंग बहिरंगों के।
आस्रव से हो विरत आप गुरु, ''संयत'' है अघभंगों से॥
बलि आदिक की तलवारों को, कील दिया था देवों ने।
श्रुतसागर मुनि वाद विजेता, सूरि अकम्पन देवों के॥ 64॥

ॐ ह्रः संयत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अक्ष विषय का दमन किया है, ''दान्त'' नाम अन्वर्थ रहा।
तुमको यदि ना पूजा हे गुरु, जीवन का क्या अर्थ रहा?॥
बलि आदिक..........॥ 65॥

ॐ ह्रः दान्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

लोकमान्य हो, पूजनीय हो, आदर करते जगपति औ।
''भदन्त'' तुमको वृद्ध बाल भी, पूजे अर्चे यतिपति औ॥
बलि आदिक..........॥ 66॥

ॐ ह्रः भदन्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जिनदेवों की, गुरु वर्यों की, आज्ञा के तुम पालक हो।
''आज्ञा के अनुवर्ती'' ऋषि जी, शरणा आये बालक औ॥
बलि आदिक..........॥ 67॥

ॐ ह्रः आज्ञानुवर्ती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दीक्षा गुरु के धर्म चरण के, आचरणों को पाल रहे।
तभी ''कुलीनं''नाम आपकी, पूजा कर गम टाल रहे॥
बलि आदिक..........॥ 68॥

ॐ ह्रः कुलीन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पुण्यपने की सही-सही जो, विधि आगम में बतलायी।
उसी रूप तुम करते चर्या, आप ''पुण्यता'' विलसायी॥
बलि आदिक..........॥ 69॥

ॐ ह्रः पुण्यता-गुण-सम्पन्न श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तप से इतना तेज बढ़ा जो, सुर-नर-किन्नर प्रेरित हो।
दौड़े आये ''तपानला'' तव, दर्श किये सो समकित हो॥
बलि आदिक..........॥ 70॥

ॐ ह्रः तपानला-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सूर वीर ज्यों युद्ध क्षेत्र में, विजयी होता जय पाता।
''धर्म-वीर'' ही वैसे ही तुम, भक्ति करे तो भय जाता॥
बलि आदिक की तलवारों को, कील दिया था देवों ने।
श्रुतसागर मुनि वाद विजेता, सूरि अकम्पन देवों के॥ 71॥

ॐ ह्रः धर्मवीर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सतवादी जी सत्य बोलते, ''सत्यमयी'' ही जीवन है।
तुमरी पूजन ना कीनी तो, क्या मतलब इस यौवन से?॥
बलि आदिक..........॥ 72॥

ॐ ह्रः सत्यमयी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म वृद्धि में, स्वस्थ वृद्धि में, प्रभु मारग की बढ़वारी।
''धर्म सुवर्धक'' वन्दन तुमरा, बन जाता है भवहारी॥
बलि आदिक..........॥ 73॥

ॐ ह्रः धर्मवर्धक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उपसर्गों के उपद्रवों को, सहकर सोलहवानी का।
स्वर्ण बने हो ''महा-श्रमण'' तव, दर्श करे अघहानी वा॥
बलि आदिक..........॥ 74॥

ॐ ह्रः महाश्रमण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आशा तजकर''आशाम्बर'' हो, आशा ही तव वस्त्र अहो।
आशा मन की पूर्ण मिटी तो, क्यों धारेंगे शस्त्र कहो ?॥
बलि आदिक..........॥ 75॥

ॐ ह्रः आशाम्बर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(दोहा)

शुभ ध्यानों में नित्य ही, रहते हो तुम लीन।
इसीलिए''ध्यानस्थ''हो, रहते ध्यानाधीन॥ 76॥

ॐ ह्रः ध्यानस्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म ध्यान में मग्न ना, हिलते चलते नाय।
''ध्यानमग्न''की अर्चना, करते सुर-नर राय॥77॥

ॐ ह्रः ध्यानमग्न-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

द्रोही का भी आप ना, करते हैं विद्रोह।
''अद्रोही'' गुरु आप से, जग में उत्तम कोह॥ 78॥

ॐ ह्रः अद्रोही-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आधि-व्याधि से युक्त हो, देख दया का स्रोत।
बह जाता तव चित्त में, ''दीन-दयालू'' पोत॥ 79॥

ॐ ह्रः दीन-दयालु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

क्या करना क्या छोड़ना, इसका अनुभव पूर्ण।
''अनूभवी'' अब आपके, होय कलंका चूर्ण॥ 80॥

ॐ ह्रः अनुभवी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सत्य-तत्त्व के आग्रही, बनकर सच को पाय।
''सत्याग्रहि की अर्चना'', से भव कलमष जाय॥ 81॥

ॐ ह्रः सत्याग्रही-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

संन्यासों में लीनता, पाई है संन्यस्थ।
''संन्यासी'' बनने गुरू, हो जाऊँ अभ्यस्थ॥ 82॥

ॐ ह्रः संन्यासी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म-कर्म को जानकर, कीना निज कल्याण।
''धर्मविद'' तव पूज से, हो जाता निज भान॥ 83॥

ॐ ह्रः धर्मविद-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पूजा से तुम पुण्य ही, देते या मिल जाय।
''पुण्य प्रभ'' की राधना, भव भव के अघ खाय॥ 84॥

ॐ ह्रः पुण्य-प्रभ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चरित पुराणों साधकों, की कथनी मन भाय।
कथा सुनावे कहत है, धर्म ''सुभाणक'' भाय॥ 85॥

ॐ ह्रः सुभाणक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रहे छोड़ने योग्य क्या, ग्रहण योग्य का ज्ञान।
तुममें मात्रातीत है, ''ज्ञानद'' दे दो ज्ञान॥ 86॥

ॐ ह्रः ज्ञानद-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''दयावीर'' बढ़-चढ़ रही, दया आप में खूब।
इसीलिए तव साथ में, आती ना है ऊब॥ 87॥

ॐ ह्रः दयावीर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तर्क युक्ति निक्षेप से, करते तत्त्व सुसिद्ध।
''तर्कक'' तुमरे भक्त के, होते कारज सिद्ध॥ 88॥

ॐ ह्रः तर्कक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

नाम ''तितीर्षु'' तैरकर, जाऊँ भव के पार।
इच्छा तुमरी तीव्रतम, जायेंगे भव पार॥ 89॥

ॐ ह्रः तितीर्षु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दीर्घ काल से उग्र ही, तप कीने हैं खास।
''दीर्घ-तपा'' तव पूज को, आये हैं हम दास॥ 90॥

ॐ ह्रः दीर्घतपा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मात्र आप को देखकर, होते नयना पूत।
''दृष्टिपूत'' मम दृष्टि भी, हो जावे अब पूत॥ 91॥

ॐ ह्रः दृष्टिपूत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कठिन परीक्षा में अहो, नियम नहीं हो भंग।
मुझ पर ''दृढ़-चेता'' गुरू, चढ़ा आपका रंग॥ 92॥

ॐ ह्रः दृढ़चेता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अनेकान्त मय धर्म का, मर्म दिया बतलाय।
''दृष्टिवंत''! हम अंध है, दिव्य दृष्टि दो आय॥ 93॥

ॐ ह्रः दृष्टिवंत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जिनवर का जो वेष है, वही आपका वेष।
''देवभेष'' के यज्ञ से, बचे नहीं अघ शेष॥ 94॥

ॐ ह्रः देवभेष-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''सुव्रत'' मुनिव्रत धार के, भाग्य जगा बड़भाग।
धन्य-धाम तव पाद में, हुआ अपूरव राग॥ 95॥

ॐ ह्रः सुव्रत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चेतन प्रभु की अर्चना, छोड़ कहीं ना जाय।
आत्म ''धरामय'' देव बिन, तुमको कुछ ना भाय॥ 96॥

ॐ ह्रः धरामय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

द्रव्य क्षेत्र की, काल की, हालत को पहिचान।
''देशज्ञं'' कारज करो, तभी हुई अघ हान॥ 97॥

ॐ ह्रः देशज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निष्ठा आस्था धर्म की, जो जिन भाषित सत्य।
''धर्म-निष्ठ'' तव चित्त तो, गहता नित ही पथ्य॥ 98॥

ॐ ह्रः धर्मनिष्ठ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धार्मिक हो धर्मात्मा, उनके धाता प्रेय।
''धर्मधातृ'' तव नाम ही, बना रहे मम प्रेय॥ 99॥

ॐ ह्रः धर्मधाता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वृद्धि करे चारित्र की, आचरणा भी वृद्ध।
''उन्नयन'' तव नाम है, पूजूँ हो वृष वृद्ध॥ 100॥

ॐ ह्रः उन्नयन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पूर्णार्घ

(ज्ञानोदय)

शंका आदिक दोष मिटाये, मद टाले जिन श्रद्धा ही।
उर में धारे आठों गुण को, हमरी तुममें श्रद्धा जी॥
अर्घ चढ़ाऊँ अष्ट द्रव्य का, पूज्य अकम्पन गुरु वर्यों।
भ्रमण मिटे मम भ्रम भी मेटो, सप्तशतक है मुनि वर्यों॥

ॐ ह्रः निःशंकित-अंगादि-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

उदारता से साधु को, हृदय-भाव से पूज।
गुण पाने माला कहूँ, पाकर के मैं सूझ॥

(पद्धरि)

हे गुरुवर तुमरी गुण गाथा, हम गाकर धरते पद माथा।
तुम ध्येय बनाकर शिवपथ का, तुम आश्रय लेते शिवपथ का॥

औ आलस का ना नाम रहा, हो निष्परमादी आप महा।
वध शीत-उष्ण की बाधा औ, सह कारज अपना साधा औ॥

तप ज्ञान ध्यान में लीन रहे, निज चेतन को ही चीन रहे।
जो बाह्य परिग्रह ममता के, है कारण ना मन रमता है॥

धन-धान्य दास अरु दासी को, घर स्वर्ण छोड़ निज वासी हो।
हे धीर आपने विपदा को, था सहन किया पा समता को॥

है उपकारी में राग नहीं, ना अपकारी में आग सही।
तव लौकिक सुख की चाह नहीं, ना इन्द्रिय सुख की दाह रही॥

सुर देव इन्द्र गण नायक भी, नृप चक्री-शक्री पाठक भी।
आ पूजन करते नाच-नाच, सुख पाने अपना साँच साँच॥

तन तननं तननं तान बजे, घन घननं घननं घंट बजे।
हम ठुमक-ठुमक कर ठुमका दे, हम झूम-झूमकर झुमका दे॥

हम नाचे गावे भक्ति करे, हम तप करने की शक्ति वरे।
तुम परम इष्ट परमेष्ठी हो, तुम गुण-धनवन्ता श्रेष्ठी हो॥

जिस धरती को तव परस मिले, वो तीरथ बनकर पाप दले।
औ आग उगलती दिनकर की, वे किरणें भी तो सुखकर ही॥

हाँ लगती कारण उसका है, तुम सोच रहे तन किसका है।
तुम वन में चरते सिंह समा, ना लेकिन गरजो बाघ समा॥

ना तुमसे हमको भय लगता, तव निर्भिकता में मन रमता।
तुम रहे अहिंसक परम गुरू, तुम कीनी शिव की राह शुरू॥

तुम सदा सत्य के पक्षी हो, तुम पूजित सुरनर यक्षी हो।
हम महिमा गाकर आज अये, हम कितने खुश हैं कौन कये॥

उसको तो केवल हम जाने, जो भक्ति करे ना क्या जाने।
सुन गूंगा क्या बतलाएगा, क्या स्वाद नहीं ले पायेगा॥

रे स्वाद गहे पर बोले ना, हाँ बोलन की है बूत कहाँ।
मैं इसी भाँति तव अर्चा से, पा आनन्द तजता चर्चा ये॥

हे स्वामी क्योंकी वाणी में, ना ताकत है इस प्राणी में।
अतएव करूँ जयमाल पूर्ण, बस हो जावे अब पाप चूर्ण॥

(घत्ता)

हे साधु वरिष्टा, गुण है इष्टा, हमको तुमरे हे स्वामी।
हम गुणिवर बनने, अघ को तजने, नहीं रखेगे अब खामी॥
जल अक्षत चन्दन, पाने नन्दन, करके वन्दन चरण धरूँ।
मम पाप धुलेंगे, आप मिलेंगे, आश लगाकर अरघ गहूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ अर्घ्यं......।

आशीर्वाद

(ज्ञानोदय)

सूरि अकम्पन सहित सात सौ, मुनियों की ये अर्चा है।
भव नाशक है शिव की शासक, जो करता नित चर्चा है॥
कर्म कटे तिस दुर्गति मिटती, सद्गति में वो जाता है।
परम्परा से मुक्ति महल में, जा बसता पा साता है॥

इत्याशीर्वाद। पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

पंचम पूजा

स्थापना

(ज्ञानोदय)

तीनों सन्ध्या कालों में नित, सामायिक जो करते हैं।
शीत उष्ण को दंशमशक को, परीषहों को सहते हैं॥
उपसर्गों की बाधाओं से, ना घबराते विचलित ना।
होते रहते सजग भाव से, ना होते हैं मलिन कदा॥

(दोहा)

ऐसे गुरु को टेर कर, थापन करता मीत।
सन्निधि करके पूजता, आज होय भवभीत॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टक)

(लय-श्री वीर महा अतिवीर...)

मैं जल की धारा देय, जनम नशावत हूँ।
मैं पाने तुमरे पाद, मंदिर आवत हूँ॥
जब काँपा बलि का गात, तीजा डग भरते।
तब विघ्न हुआ था पार, विष्णू मुनिवर से॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चन्दन घिसकर लाय, तुमरे भक्त बने।
वो दुख का ताप न पाय, पथ में सख्त बने॥
जब काँपा बलि ....॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः संसार-ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अक्षत का ले थाल, पूज रचावत हूँ।
मैं अक्षय पद की साद, लेकर आवत हूँ॥
जब काँपा बलि का गात, तीजा डग भरते।
तब विघ्न हुआ था पार, विष्णू मुनिवर से॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जो तीन लोक से जीत, हारा तुम आगे।
ये पुँज धरूँ तव पास, काम नहीं जागे॥
जब काँपा बलि ....॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः काम-बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं नैवज मीठे मिष्ठ, शुद्ध बनावत हूँ।
ये अर्पित करके आज, भूख मिटावत हूँ॥
जब काँपा बलि ....॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अज्ञानों का अंध, होश भुलाता है।
ओ उसको नाशन हेत, दीप चढ़ाता है॥
जब काँपा बलि ....॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले गंधवती ये धूप, चरणों खेवत हूँ।
मम वसु कर्मों को चूर, तुमको सेवत हूँ॥
जब काँपा बलि ....॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं चक्री - शक्री देव, पद ना चाहत हूँ।
फल चाहूँ शिव का नाथ, महिमा गावत हूँ।
जब काँपा बलि ....॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत दीप, नैवज फूल गहूँ।
फल धूप मिलाकर आज, चरणा आज धरूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽनर्घ्य पद प्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ

(दोहा)

सब मुनियों को अष्टकों, से पूजा है भक्ति।
अब देता हूँ अर्घ्य मैं, प्रति-प्रति गुरु को शक्ति॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

(लय-श्री वीर महा)

''धृत-मानस'' तुमरा देव, दृढ़ निश्चय पाया।
मैं धृति पाने को आज, पूजन रचवाया॥
जब काँपा बलि का गात, तीजा डग भरते।
तब विघ्न हुआ था पार, विष्णू मुनिवर से॥ 1॥

ॐ ह्रः धृतमानस-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम करते सबका न्याय, तब तो घर छोड़ा।
तुम ''नय-नागर'' हो वाह, जग से मुँह मोड़ा॥
जब काँपा बलि ....॥ 2॥

ॐ ह्रः नय-नागर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मन वश में ऐसा कीन, ऋषि ना कर पावें।
''धृत आतम'' धीरज धार, भव में क्यों आवें?॥
जब काँपा बलि ....॥ 3॥

ॐ ह्रः धृतात्मा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मम माया ममता पीर, भव दुख देगी क्यों?।
वा तन से ना है मोह, ''निर्मम'' सेवी हो॥
जब काँपा बलि ....॥ 4॥

ॐ ह्रः निर्मम-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम धर्म धुरा को धार, शिव पथ बढ़ते हो।
हम ''धर्म-धुर्य'' को पूज, दुविधा तजते ओ॥
जब काँपा बलि ....॥ 5॥

ॐ ह्रः धर्मधुर्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

औ श्रेष्ठ योनि में आय, ''सत-योनिज'' माने।
तुम पूज्य वंश को पाय, पूजित जग माने॥
जब काँपा बलि का गात, तीजा डग भरते।
तब विघ्न हुआ था पार, विष्णू मुनिवर से॥ 6॥

ॐ ह्रः सत-योनिज-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जो जीव अनन्तानन्त, उनको जानत हो।
सो ''प्राणिविज्ञ'' हो सन्त, करुणा पालत हो॥
जब काँपा बलि ....॥ 7॥

ॐ ह्रः प्राणीविज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

है सबसे ज्यादा राग, व्रत के धारण में।
हे ''प्रियव्रत'' तुमरे काम, सुख के कारण हैं॥
जब काँपा बलि ....॥ 8॥

ॐ ह्रः प्रियव्रत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ना कटुक वचन के बोल, निकले तव मुख से।
हाँ मधुर वचन ''प्रियवाद'', ना चित में दुखते॥
जब काँपा बलि ....॥ 9॥

ॐ ह्रः प्रियवाद-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तव चेत बुद्धि है स्वामि, मान रुलाता ना।
हो ''स्थितप्रज्ञ'' तुम जेष्ठ, काम सताता ना॥
जब काँपा बलि ....॥ 10॥

ॐ ह्रः स्थितप्रज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सन्मार्ग पायकर भव्य, दुष्मारग छोड़े।
सो ''उद्बोधक'' हो रम्य, परिचय हम जोड़ें॥
जब काँपा बलि ....॥ 11॥

ॐ ह्रः उद्बोधक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम द्रव्य भाव मय लिङ्ग, धारा मुनि बाना।
हे ''उभयलिङ्गि'' हम शीघ्र, पावे तव बाना॥
जब काँपा बलि ....॥ 12॥

ॐ ह्रः उभयलिङ्गी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सब ''वांछनीय'' तव काज, हम करते इच्छा।
कब प्राप्त होय तुम संग, पावे पथ सच्चा॥
जब काँपा बलि का गात, तीजा डग भरते।
तब विघ्न हुआ था पार, विष्णू मुनिवर से॥ 13॥

ॐ ह्रः वांछनीय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तव नियम भंग ना होय, ''सोऽलोप्ता'' ज्ञानी।
हम चरण पड़े पद दोय, बन जावें ज्ञानी॥
जब काँपा बलि ....॥ 14॥

ॐ ह्रः अलोप्ता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम रहते अपने पास, नाम ''उपासंगम्''।
तुम रहना हमरे खास, पावे तव रंगम्॥
जब काँपा बलि ....॥ 15॥

ॐ ह्रः उपासंग-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दे ज्ञान धनों का दान, उपकृत कर दीना।
हे ''उदारचित्त''! तव गान, गुण गा हम कीना॥
जब काँपा बलि ....॥ 16॥

ॐ ह्रः उदारचित्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जब देख मिथाती लोग, लोभित हो जाते।
हम ''लोभारं'' को पाय, समकित झट पाते॥
जब काँपा बलि ....॥ 17॥

ॐ ह्रः लोभार-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कर प्रेरित शिव की राह, जग को तार दिया।
हम ऋण मानेंगे नित्य, ''प्रेरक'' मान लिया॥
जब काँपा बलि ....॥ 18॥

ॐ ह्रः प्रेरक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्त-शतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम शुद्ध हृदय को धार, निश्छलता पायी।
''उत्तानहृदय'' को पाय, शुचिता मन भायी॥
जब काँपा बलि ....॥ 19॥

ॐ ह्रः उत्तानहृदय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हे तरणी तारक वीर, डूबत काढ़ दिया।
ये ''उत्तार्य'' का नाम, हमने धार लिया॥
जब काँपा बलि का गात, तीजा डग भरते।
तब विघ्न हुआ था पार, विष्णू मुनिवर से॥20॥

ॐ ह्रः उत्तार्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम उपकारी को भूल, भूलत नाहीं हो।
''कृत-चेता'' तुमको देख, विस्मय किसको हो?॥
जब काँपा बलि ....॥ 21॥

ॐ ह्रः कृतचेता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तव कृपादृष्टि को पाय, भवि तो सब भूले।
हो ''कृपायतन'' का संग, तो क्यों भव झूले?॥
जब काँपा बलि ....॥ 22॥

ॐ ह्रः कृपायतन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शुभ भद्र करो कल्याण, चाहेऽभद्र रहे।
सो ''भद्रंकर'' तव नाम,को नाऽभद्र हरे॥
जब काँपा बलि ....॥ 23॥

ॐ ह्रः भद्रंकर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

खुश मानस रहते नित्य, मन आह्लाद भरो।
हे ''मनोह्लादि'' में चित्त, श्रद्धा खाद भरो॥
जब काँपा बलि ....॥ 24॥

ॐ ह्रः मनोह्लाद-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तकदीर देख हम आप, कितने खुश होते।
हे ''भागधेय'' तव नाम, अह-निश हम जपते॥
जब काँपा बलि ....॥ 25॥

ॐ ह्रः भागधेय-नाम-धारक अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(आल्हा)

पथ दिखलाते दुख मेंटन का, देय कलेवा सुख भेंटन का।
अहो ''प्रणायक'' मम नेता हो, पूजूँ मेरे अघ भेता हो॥ 26॥

ॐ ह्रः प्रणायक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अशुभ भाव को धोते तुम हो, ''प्रक्षालक'' जी मेटो गम को।
हम तो करते आप बन्दगी, मिट जावे मम पाप गन्दगी॥ 27॥

ॐ ह्रः प्रक्षालक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पुराण जानते ''पौराणिक'' हो, चर्चा में तुम सर्वाधिक हो।
पूज्य पुरुष-सम महा साधु हो, पूज करे वो नहिं स्वादु हो॥ 28॥

ॐ ह्रः पौराणिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्त-शतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

क्रोध करें यदि तुमरे ऊपर, प्रतिकोपी ना बनते उन पर।
''अप्रतिकोपी'' जिनवर नन्दन, पूजूँ मेरा मेटो क्रन्दन॥ 29॥

ॐ ह्रः अप्रतिकोपी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जैसे मात-पिता बालक का, त्यों हमरे तुम पालक हो वा।
''प्रतिपालक'' जी रक्षा करना, हम भक्तों की दुर्गति हरना॥ 30॥

ॐ ह्रः प्रतिपालक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

योगमयी आचार रहे हैं, योग त्रय को आप धरे हैं।
''योगाचारी'' टहल करे जो, बार-बार औ नहीं मरे वो॥ 31॥

ॐ ह्रः योगाचारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

एक बार ही भोजन करते, दिन में लेते आप विहरते।
''एकाहारी'' करें प्रार्थना, उसके ना हो कभी यातना॥ 32॥

ॐ ह्रः एकाहारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सम्बोधन में रही चतुरता, अक्ष विषय में रही विरतता।
''वाग्मी'' तुमसे विनती करता, तब वह भव की गिनती हरता॥ 33॥

ॐ ह्रः वाग्मी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पर-पीड़ा में मृदुता भारी, निज-पीड़ा में मृदुता हारी।
अहो ''मृदिष्ठा'' अचरज होता, मेरा मन तो तुममें खोता॥34॥

ॐ ह्रः मृदिष्ठ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चर्या पालन में हो दक्षा, जिनशासन का रखते पक्षा।
बुद्धि ''कुशाग्री'' तुमरी सेवा, जिससे मिलते शिव के मेवा॥ 35॥

ॐ ह्रः कुशाग्री-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

साहस से तुम कार्य साधते, आपद में भी नहीं हारते।
''कर्म-शूर'' में दृढ़ता न्यारी, परिचर्या तव लगती प्यारी ॥36 ॥

ॐ ह्रः कर्मशूर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मेधा तुममें अद्भुत भासे, ''मेधावी'' में तुम हो खासे।
भेदज्ञान की मेधा पाऊँ, पूजा करके अति हरषाऊँ ॥37 ॥

ॐ ह्रः मेधावी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गुरु के कुल में जैसा करते, वैसे ही तो आप विचरते।
''कुलंधरं'' के सेवक हम हैं, पूजन से आ जाता दम हैं॥ 38 ॥

ॐ ह्रः कुलंधर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तप करके भी फल ना चाहो, ''कर्म-संन्यासी'' आप कहाओ।
कांक्षा तज दी परभव की है, मिटे पीर अब भव-भव की है॥ 39 ॥

ॐ ह्रः कर्म-संन्यासी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सत्यधर्म को धार लिया है, ''ऋतम्भरं'' तव नाम दिया है।
सच्चाई में थिरता पाई, सत्यतीर्थ की महिमा आई ॥ 40 ॥

ॐ ह्रः ऋतम्भर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ओज युक्त तव आनन लखके, क्रूर भाव भी झट से भगते।
''ओजिष्ठं'' की है उपचर्या, मेरी होवे तुम सम चर्या॥ 41 ॥

ॐ ह्रः ओजिष्ठं-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तीर्थंकर का मत ही भाता, और तीर्थ ना मन में आता।
''एकपक्षिया'' फिर भी समकित, हुआ तभी है जीवन चमकित ॥42 ॥

ॐ ह्रः एकपक्षीय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मोक्षमार्ग की नौका को तुम, नाविक बनकर खेते हो तुम।
हे ''कर्णिक'' जी सेवा करते, जो भी उनके भव तम हरते ॥43 ॥

ॐ ह्रः कर्णिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सबसे रखते आप मित्रता, तुमको लखते मिटे शत्रुता।
''नित्य-मित्र'' हो सभी मित्र हैं, मेरे उर में आप चित्र हैं ॥44 ॥

ॐ ह्रः नित्यमित्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

संग रहा है मूर्च्छा कारण, कर देता है ऊर्जा वारण।
''निरासंग'' सो निरारम्भ हो, जैनधर्म के आप खम्भ हो ॥45 ॥

ॐ ह्रः निरासंग-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भय ना लगता कभी कहीं पर, शान्ति मिली है तभी यहीं पर।
''निरातंक'' आतंक मिटा दो, निज आतम से मुझे मिला दो ॥46 ॥

ॐ ह्रः निरातंक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कम खाते हो, गम खाते हो, जन-जन के तुम मन भाते हो।
''परिमितभोजी'' उनोदरी हो, हे गुरु! तुम ही पापहरी हो ॥47 ॥

ॐ ह्रः परिमित भोजी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

विकल नहीं हो भवतः चेता, भवसागर के नैय्या खेता।
निकल गई हैं आकुलताएँ, ''निराकुलं'' हो माफ खताएँ ॥48 ॥

ॐ ह्रः निराकुल-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रहे दयालु जितने जग में, उनके नेता आप जगत में।
''दया-नायका'' थुति गायेंगे, लौट नहीं हम अब आयेंगे ॥49 ॥

ॐ ह्रः दयानायक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वास्तव में जो तत्त्व रहा है, जिन देवों ने यही कहा है।
आप महन्ता वही बतावें, ''तथ्य-भाषि'' के हम गुण गावें ॥50 ॥

ॐ ह्रः तथ्यभाषि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(नरेन्द्र)

अन्तर्मन में लीन रहे तल्लीन रहें निज चेता।
''अन्तर्लीनं'' नाम भजूँ मैं, आ जावे भव खेता॥
सप्त शतक ऋषि तव गुण कैसे, हम वचनों से गावें?।
शक्ति नहीं है लेकिन कैसे, मौन अभी रख पावें? ॥51 ॥

ॐ ह्रः अन्तर्लीन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निज चेतन में रहने वाले, आतम में जा बैठे।
''आत्म-बिहारी'' पूजन कर ना, पर द्रव्यों में ऐठे॥
सप्त शतक ऋषि ...... ॥ 52 ॥

ॐ ह्रः आत्मविहारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आप अलौकिक गुण से पूरण, ''अति मानव'' कहलाओ।
वंद्य पूज्य है परम ऋषीशा, मम उर में अब आओ॥
सप्त शतक ऋषि तव गुण कैसे, हम वचनों से गावें ?।
शक्ति नहीं है लेकिन कैसे, मौन अभी रख पावें ?॥ 53॥

ॐ ह्रः अतिमानव-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

स्वतः आप में ज्ञान स्फुरित है, ''अन्तर्प्रज्ञा'' ज्ञानी।
ज्ञान दान तुम देते सबको, फिर भी हो निर्मानी॥
सप्त शतक ऋषि...... 54॥

ॐ ह्रः अन्तर्प्रज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म शास्त्र में नियमावलि के, अनुसारी है चालें।
कर्त्तव्यों को पूरा करके, ''क्रियानिष्ठ'' अघ हालें॥
सप्त शतक ऋषि...... ॥ 55॥

ॐ ह्रः क्रियानिष्ठ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अपने गुण को ना कहते हैं, पर दोषों में चुप्पी।
धारी तुमने अतः ''तितिक्षु'' नहीं कहाते गप्पी॥
सप्त शतक ऋषि...... ॥ 56॥

ॐ ह्रः तितिक्षु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सचेत रहते निद्रा - तन्द्रा, ना वश में कर पावें।
आत्म कार्य में जागरूक हो, ''क्षिप्रचेतसा'' भावें॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 57॥

ॐ ह्रः क्षिप्रचेतसा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तपा-तपा कर तप से तन को, ''क्षीणकाय'' कर डाला।
फिर भी बल की कमी नहीं है, पहन शास्त्र की ढाला॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 58॥

ॐ ह्रः क्षीणकाय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सद्‌गुण में, गुणवानों में भी, आदर का है शौक।
''गुणग्राही'' जी तभी आपको, देखे मिटते शोक॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 59॥

ॐ ह्रः गुणग्राही-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

लोकप्रियं हो प्रजामान्य हो, सब जन में हो जेष्ठा।
जनेष्ट[1] आपके भक्त शीघ्र ही, बन जाते हैं श्रेष्ठा॥
सप्त शतक ऋषि तव गुण कैसे, हम वचनों से गावें ?।
शक्ति नहीं है लेकिन कैसे, मौन अभी रख पावें ?॥60॥

ॐ ह्रः लोकप्रिय भोजी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

क्रोध जनक हो कठोर कर्कश, वचनों को सुन स्वामी।
क्षोभ उपजता किंचित नाहीं, रहेऽक्षौभ्य ना खामी॥
सप्त शतक ऋषि...... 61॥

ॐ ह्रः अक्षौभ्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''चार्चिक'' तुमको सत्य देव बिन, कोई ना मन भावे।
जिनेन्द्र के ही गुण धर्मों की, चर्चा तुमको भावे॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 62॥

ॐ ह्रः चार्चिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दोष विनाशक निर्मल करते, आतम के जो कार्या।
उन सब गुण से आप भरे हो, ''गुणोपेत'' तुम आर्या॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 63॥

ॐ ह्रः गुणोपेत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कालिख ना है व्रत-भूषण में, रही अलांछित साता।
निष्पापी ''अवलीक'' आपका, पूजक भव से जाता॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 64॥

ॐ ह्रः अवलीक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

यम-दम-शम-सम आभूषण से, ''अभिमण्डित'' हो प्यारे।
धर्म समर्थक तुमरे पूजक, बन जाते जग न्यारे॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 65॥

ॐ ह्रः अभिमण्डित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रागद्वेष मय विकार भाव से, दूर रहे अति दूरा।
''परोरजा'' तव भक्त क्षणों में, हो जाते हैं शूरा॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 66॥

ॐ ह्रः परोरजा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. जन-सामान्य में प्रिय

कठोर प्रतिज्ञा देख आपकी, मिथ्यामति भी हाले।
''प्रतिज्ञेय'' तुम सुमरण करके, हम तो अघ को टाले॥
सप्त शतक ऋषि तव गुण कैसे, हम वचनों से गावें ?।
शक्ति नहीं है लेकिन कैसे, मौन अभी रख पावें ?॥ 67॥
ॐ ह्रः प्रतिज्ञेय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
बुद्ध हुए प्रति-बुद्ध हुए हो, आत्म बोध को पाया।
''बोधित'' बनने गुरुवर मैं तो, दौड़ चरण में आया॥
सप्त शतक ऋषि...... 68॥
ॐ ह्रः बोधित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
निज-शंसा से दूर रहे हो, अपने गुण ना देखो।
''अहोऽविकस्थं'' कर्म गुत्थ को, आप शीघ्र ही फेंको॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 69॥
ॐ ह्रः अविकस्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
मन ना हो विक्षिप्त आप का, सुन करके भी गाली।
''अनविक्षिप्तं'' पूज्य मुनीशा, बने मोक्ष के माली॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 70॥
ॐ ह्रः अविक्षिप्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
ना डरते हैं देह पातकी, कारण भी मिल जावे।
''अविशंकी'' जी आप दरश से, शंकाएँ भग जावे॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 71॥
ॐ ह्रः अविशंकी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
छल-छद्मों से रहित सुनिर्मल, व्याज[1] मिटाया सारा।
''अनव्याजं'' का नाम जपे तो, मिट जाते भव कारा॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 72॥
ॐ ह्रः अव्याज-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
स्वतंत्र विचरण वन पशुओं में, करते हो निःसंगी।
''असंगचारि'' की महिमा गाकर, हम होवे अघभंगी॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 73॥
ॐ ह्रः असंगचारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. मायाचारी

ऋषियों में तुम मान्य रहे हो, ''ऋषिमन्यं'' गुण पाये।
मुनियों के भी यूथ प्रभावित, होकर चरणों आये॥
सप्त शतक ऋषि तव गुण कैसे, हम वचनों से गावें ?।
शक्ति नहीं है लेकिन कैसे, मौन अभी रख पावें ?॥ 74॥
ॐ ह्रः ऋषिमन्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
आत्म सिद्धि का कार्य साधने, कमर कसी है धीरा।
ना रुकते हैं, ना थकते हैं, ''कारगुजारी'' वीरा॥
सप्त शतक ऋषि......॥ 75॥
ॐ ह्रः कारगुजार-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(सोरठा)

सत्पथ चालत आप, शिवमारग दरसावते।
''दैशिक'' हो निर्माप, तुमरे पद मन भावते॥ 76॥
ॐ ह्रः दैशिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
''महीसुतं'' गुरु आप, धरती कृत-कृत हो गयी।
तुमको पाकर आज, जनता नन्दित हो गयी॥ 77॥
ॐ ह्रः महीसुत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
''श्रीधन'' भवतः नाम, तप संयम धन धार कर।
नौ-निहाल हम आज, पूजन का प्रण धार उर॥ 78॥
ॐ ह्रः श्रीधन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
मोक्ष महल की इच्छ, मात्र बची है आपकी।
''अपवर्गेच्छुक'' शिष्ट, पूज्य हुए हैं आज जी॥ 79॥
ॐ ह्रः अपवर्गेच्छुक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
प्रभु भक्ती में लीन, जान लिया निज आतमा।
''भक्तिप्रवण'' को चीन, पापों का हो खातमा॥ 80॥
ॐ ह्रः भक्तिप्रवण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
विक्रम इतना पाय, ''भूरि-विक्रमा'' नाम है।
कर्म क्षयों में शौर्य, पूजन कर हम पाव है॥ 81॥
ॐ ह्रः भूरिविक्रम-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
अन्तिम है अभिलाष, मात्र परम पद पावने।
''परमेष्ठी'' गुरु खास, आप लगे मन भावने॥ 82॥
ॐ ह्रः परमेष्ठि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सांसारिक जो कार्य, विमुख उदासी आप में।
''पराङ्मुखं'' हे आर्य, मुख मोड़ा जग काम से॥ 83॥
ॐ ह्रः पराङ्मुख-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आत्म कल्याणी काम, करने में तत्पर रहे।
अहो ''परायण'' नाम, वन्दन कर हम भव हरे॥ 84॥
ॐ ह्रः परायण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''भद्रमुखी'' को देख, होत भद्र अच्छा सदा।
भले आदमी नेक, दुष्ट बनूँ मैं ना कदा॥ 85॥
ॐ ह्रः भद्रमुखी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मोक्ष वधू के सद्य, भरता स्वामी आप हो।
हे ''भरतारं'' अद्य, पूजा से अघ साफ हो॥ 86॥
ॐ ह्रः भरतार-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तरवारी की आब[1], जैसे व्रत को धार कर।
''असिधाराव्रति'' आप, कहलाते भव पार कर॥87॥
ॐ ह्रः असिधाराव्रती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म पताका लाय, शिव महलों को पावने।
धर्म ध्वजा फहराय, पूज्य ''पताकी'' आप है॥ 88॥
ॐ ह्रः पताकी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

खोज करो निज पेख, ''अनुख्याता'' माने गये।
अन्वेषण को देख, विख्याती आके नये॥ 89॥
ॐ ह्रः अनुख्याता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कड़वा भी हो सत्य, पक्ष उसी का लेत हो।
''पक्षधरं''को अर्च्य, नाव भवों से खेत हो॥ 90॥
ॐ ह्रः पक्षधर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सुख पाने की राह, पकड़ दुःख को मेटने।
''शिवपंथी'' की चाह, शिवरमणी के भेटने॥ 91॥
ॐ ह्रः शिवपंथी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गुण करते उत्पन्न, निज-पर में पुरुषार्थ से।
''गुणकारी'' सम्पन्न, शरणा ही मम अर्थ है॥ 92॥
ॐ ह्रः गुणकारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. धार

जिन मारग में रूढ़, उत्तम ''अध्यारूढ़ हो।
श्रेष्ठों से भी गूढ़, ज्ञान आप में खूब औ॥ 93॥
ॐ ह्रः अध्यारूढ़-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अवगाहन के योग्य, जग जीवों के आप हैं।
''अवगाह्यं'' पा योग, हम करते अघ साफ हैं॥ 94॥
ॐ ह्रः अवगाह्यं-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

परापरों को पाय, भला बुरा तुम समझ के।
''परापरज्ञं'' ध्याय, शिव पथ को हम समझते॥ 95॥
ॐ ह्रः परापरज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उच्च विचारं धार, अहो ''मनस्वी'' सोच भी।
सर्वोत्तम है पार, पा सकता है कौन जी? ॥ 96॥
ॐ ह्रः मनस्वी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''एकनिष्ठ'' हो शिष्ट, आत्मतत्त्व में निष्ठ हो।
बने रहो मम इष्ट, भव सागर में मम गुरो॥ 97॥
ॐ ह्रः एकनिष्ठ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भय की हरने पीव, ''भयहारी'' डरते नहीं।
इसीलिए तो जीव, तुमसे वा मरते नहीं॥ 98॥
ॐ ह्रः भयहारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अव्वल है तव भाव, उन्हीं में तुम राजते।
शुद्ध भाव की आस, ''भावस्थं'' हम भावते॥ 99॥
ॐ ह्रः भावस्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भिक्षा केवल आप, ले सकते शिव पंथ में।
''भिक्षार्हं को माप, भक्त बने अब संत ये॥100॥
ॐ ह्रः भिक्षार्ह-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

उत्तम पथ में चलते उत्तम, काम तुमारे मन भाये।
उत्तम चर्या देख आपके, सुर-नर-किन्नर पद आये॥
हम भी आठों द्रव्य सजाकर, पूर्ण अर्घ ये लाये हैं।
सन्मति दे दो शिव पथ पाने, चरण शरण में आये हैं॥

ॐ ह्रः धृतमानस आदि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य - ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः। (9, 27,108)

जयमाला

(दोहा)

अर्घ चढ़ाकर सर्व को, गाऊँगा जयमाल।
फल में मेटूँ शीघ्र ही, भव भटकन की चाल॥

(नरेन्द्र)

महा मनस्वी तेरे पद का, परस पाय भवि लोहा।
समकित सोना पाता है तिस, मिट जाता भव मोहा॥
हीरा मोती माणिक को तज, वन में डेरा डाला।
श्रद्धा सम्यग्ज्ञान चरित मम, त्रय रत्नों को धारा॥

चारों गति के भ्रमण मेटने, चउ आराधन ध्याओ।
पूरी करके आराधन फिर, भव चक्कर ना खाओ॥
पंचम गति को पाने तुमने, पाँच महाव्रत धारे।
पंच समिति की बाड़ लगाकर, दया धर्म रखवारे॥

षट् कायों के रक्षक बनकर, निज की रक्षा कीनी।
पर द्रव्यों से नेह हटाकर, आतम सुधि ले लीनी॥
छह आवश्यक कर्म रहे जो, कर्म कालिमा नाशी।
उनको पाले दोष टालकर, हे गुरुवर! गुण राशी॥

भय भी भागा देख आपकी, निर्भयता को स्वामी।
तीव्र आग की दुर्गन्धों की, ना रक्खी थी खामी॥
दुष्ट बली ने तब भी तुम तो, अचल मेरु सम बैठे।
ध्यान लगाया भावन भाकर, चित चेतन में पैठे॥

बाहर की वे लपटें बदबू, तन तक ही आ पायी।
तनधर में ना घुस पायी थी, चित्त आत्म में पायी॥
भयकारी बलि भी भय खाकर, पैर पड़ा था आयी।
तुमरी उत्तम सही साधना, किसके मन ना भायी?॥

आप तपस्या ने ही जाकर, मनो कँपाया तारा।
सारचन्द्र आचार्य वक्त्र से, ''हा'' निकला दुखकारा॥
देख आपकी उग्र साधना, दाँतों अंगुलि दाबे।
बड़े बड़े तप धारी ऋषि भी, आकर तव पद दाबे॥

पैर पड़े गुण गरिमा गावे, चाल तुमारी चाले।
धन्य मानकर धन्य - धन्य कह, नन्त भवों को टाले॥
अद्यावधि भी कीर्ति पताका, फहर रही है भारी।
आप बने आदर्श मोक्ष के, पथ पर महिमा न्यारी॥

हम भी तव आदर्श लेयकर, चले शिवालय पंथा।
भटक न जावे, अटक न जावे, रक्षा करना संता॥
जयमाला यह विजयमाल है, गुरु की जीवन गाथा।
गाकर अब मैं पूरी करता, धरकर चरणों माथा॥

(घत्ता)

तुम ऋषिवर ज्ञानी, हम अज्ञानी, ज्ञान पावने अब आये।
तुम उपादेय को त्याज्य हेय को, जान रहे सो मन भाये॥
हम अष्टक भेटन, कष्टक मेटन, और कहीं ना जायेंगे।
हैं कौन सुदक्षी, जिन के पक्षी, जो दुःख को हर पायेंगे॥।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्त शतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

(ज्ञानोदय)

सूरि अकम्पन सहित सात सौ, मुनियों की ये अर्चा है।
भव नाशक है शिव की शासक, जो करता नित चर्चा है॥
कर्म कटे तिस दुर्गति मिटती, सद्गति में वो जाता है।
परम्परा से मुक्ति महल में, जा बसता पा साता है॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

षष्टम पूजा

स्थापना

(ज्ञानोदय)

सत्य पंथ के पथ्य तत्त्व को, जान तपों में लीन हुए।
निर्णय कीना निज-पर का सो, पर द्रव्यों से भिन्न हुए॥
अहो मनस्वी अहो तपस्वी, तुमरा ये आह्वानन है।
सन्निधिक है थापन भी है, पूजा यह शिव कारण है॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(लय-जहाँ डाल डाल पर....)

नीलमणी की झारी में गुरु, धवल पयस भरवाये।
जनम मरण को मूल मिटाने, चरण चढ़ाने आये॥
हम पूजन करने आये।
सूरि अकम्पन सारचन्द्र श्रुत, विष्णु सिन्धु मुनिराये।
हम पूजन करने आये।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जितना घिस लो उतना चंदन, खुशबू ही बिखराये।
बिना घिसे सुख परिमल वाले, तुमको गन्ध चढ़ाये॥
हम पूजन करने आये।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः संसार-ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

वासमती के लम्बे- लम्बे, तन्दुल पुञ्ज बनाये।
पुनः जनम ना होवे ऐसी, कांक्षा कर ले आये॥
हम पूजन करने आये।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम हार कर गुरुवर तुमको, नग्न देख भी धाये।
कामदेव भी तभी आपको, आकर पुष्प चढ़ाये॥
हम पूजन करने आये।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः काम-बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संज्ञा पहली सप्तम गुण में, तुमको ना लख पाये।
नैवज भर-भर भूखे भी तो, तुमरे ढिग ले आये॥
हम पूजन करने आये।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह-राज भी देख अचलता, निकट नहीं आ पाये।
मिथ्यातम का अंध मिटाने, दीपक ले हम आये॥
हम पूजन करने आये।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सुगंधित दस चीजों को, मिला धूप महकाये।
धूम उड़ेगी अब तो विधि की, भक्त भेंटने आये॥
हम पूजन करने आये।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौंग एलका काजू किसमिस, फल नाहीं फलदाये।
अर्पण कर दे गुरु जी चरणों, शाश्वत सुख दरसाये॥
हम पूजन करने आये।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोक्ष-फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन चरु को दीप धूप को, पुष्प पुञ्ज मिलवाये।
पानी फल भी लेय अनर्घं, फल को दास चढ़ाये॥
हम पूजन करने आये।

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तयेऽर्घ्यं......।

प्रत्येक अर्घ

(दोहा)

आठ भाँति के द्रव्य से, सबकी पूज रचाय।
प्रति मुनि को मैं पूजने, लाया अर्घ सजाय॥

परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(लय-जहाँ डाल डाल)

शिरोवस्त्र ना आभूषण ना, ''निरावरण'' गुरुराये।
अधोवस्त्र ना पास शस्त्र ना, पंछी सम चहकाये॥
हम पूजन करने आये॥
सूरि अकम्पन सारचन्द्र श्रुत, विष्णु सिन्धु मुनिराये।
हम पूजन करने आये॥1॥

ॐ ह्रः निरावरण-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हार-कण्ठला कड़े-करधनी, सबको ही विसराये।
आप''अभूषण''आभूषण तज, हम भी तव मग आये॥
हम पूजन करने आये॥ 2॥

ॐ ह्रः अभूषण-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वेष्टित ना हो परिधानों ना, उनमें मन ललचाये।
नहीं तौलिया नाहीं गमछा, ''अनवेष्टित'' मन भाये।
हम पूजन करने आये॥ 3॥

ॐ ह्रः अनवेष्टित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अन्तरीय ना उत्तरीय ना, ना तिनमें चित जाये।
निर्वस्त्रण हो वस्त्रहीन हो, नाम ''अवासस'' भाये॥
हम पूजन करने आये॥ 4॥

ॐ ह्रः अवासस-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रागराग ना सुख रागी ना, ''अराग'' नाम गुण गाये।
अनुरागी हम आप चरण के, क्यों भव में भरमाये ?॥
हम पूजन करने आये॥ 5॥

ॐ ह्रः अराग-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अभिलाषा ना शौक-मौज ना, ''अनाकांक्ष'' दिल भाये।
ना मनरंजन नयनों अंजन, ऋषिवर तुमको भाये॥
हम पूजन करने आये।
सूरि अकम्पन सारचन्द्र श्रुत, विष्णु सिन्धु मुनिराये।
हम पूजन करने आये॥ 6॥

ॐ ह्रः अनाकांक्ष-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''रागहीन'' की-मोहहीन की, पूजन कर हरषाये।
द्वेष मिटाने - मान्द्य मिटाने, चेले ये पद आये॥
हम पूजन करने आये॥ 7॥

ॐ ह्रः रागहीन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मर्यादित हो सहज चित्त हो, ''समचेता'' सुख पाये।
समताधारी, ममतावारी, सच्चा पथ बतलाये॥
हम पूजन करने आये॥ 8॥

ॐ ह्रः समचेता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अन्तर आतम वाची ''अन्तर, शायी'' गुण हुलसाये।
बाहर से वा नजरे मोड़ी, सैर करे निज माये॥
हम पूजन करने आये॥ 9॥

ॐ ह्रः अन्तरशायी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

प्रभुता तुममें ''वर्चस्वी'' हो, अनुमति पाने धाये।
आज्ञा दो दो, आज्ञा दो दो, कहते निकषा आये।
हम पूजन करने आये॥ 10॥

ॐ ह्रः वर्चस्वी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तन को मन को नहिं भाते ना, क्षोभाकुल कर पाये।
अहो ''अक्षोभी'' तुम्हें देखकर, हार पराजय खाये॥
हम पूजन करने आये॥ 11॥

ॐ ह्रः अक्षोभी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पर का लम्बन ना लेते पर, मुदित रहे प्रभुदाये।
मन ही मन में''मनमोदी''हम, तुमको क्यों विसराये?॥
हम पूजन करने आये॥ 12॥

ॐ ह्रः मनमोदी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मोहबली के अन्धकार को, तुम ही दूर भगाये।
ज्ञान दीप से दिखा रहे सो, नाम ''प्रदीपक'' भाये॥
हम पूजन करने आये।
सूरि अकम्पन सारचन्द्र श्रुत, विष्णु सिन्धु मुनिराये।
हम पूजन करने आये॥ 13॥

ॐ ह्रः प्रदीपक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आत्म तत्त्व को धर्मध्यान जो, सुखकारक कहलाये।
उसे बताकर मन खुश करते, नाम ''प्रमोदक'' भाये॥
हम पूजन करने आये॥ 14॥

ॐ ह्रः प्रमोदक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म-मर्म को गहराई से, आप पूर्ण प्रगटाये।
''मर्मोद्घाटक'' दर्शन करने, हम तो दौड़े आये॥
हम पूजन करने आये॥ 15॥

ॐ ह्रः मर्मोद्घाटक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अंतः-करणी मानस चेष्टा, पूत पवित ही भाये।
''पूतमती'' को देख जगत में, विस्मय सबको आये॥
हम पूजन करने आये॥ 16॥

ॐ ह्रः पूतमती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अपने गुण को धर्म धर्म के, साधन नित्य बढ़ाये।
सही ''प्रवर्धक'' मुझको भी तो, शिव की राह बढ़ाये॥
हम पूजन करने आये॥ 17॥

ॐ ह्रः प्रवर्धक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जिन आज्ञा के पालक व्रत को, निश्छल हो निरवाहे।
''निर्वाहक'' हो धर्म धुरा के, वाहक ही सुख पाये॥
हम पूजन करने आये॥ 18॥

ॐ ह्रः निर्वाहक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गुरु चरणों के ''चंचरीक'' वा, षट्पद-सम पद धाये।
पराग पीते क्षणभर भी वे, नहीं अघा गुण गाये॥
हम पूजन करने आये॥ 19॥

ॐ ह्रः चञ्चरीक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सदा विहरते एक थान पर, ना रहते ना भाये।
राग घटाते ''चंक्रमणं ही, अपना शील'' बनाये॥
हम पूजन करने आये।
सूरि अकम्पन सारचन्द्र श्रुत, विष्णु सिन्धु मुनिराये।
हम पूजन करने आये॥ 20॥

ॐ ह्रः चंक्रमणशील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दिन प्रतिदिन वा पल-पल-पल वा, तप संयम पलवाये।
''उत्थानशील'' जी अपने भी तो, वृष को नित्य बढ़ायें॥
हम पूजन करने आये॥ 21॥

ॐ ह्रः उत्थानशील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जितना सुनते पढ़ते गुनते, उनका चिन्तन आये।
फिर-फिर सोचे करे जुगाली, ''जुगालकं'' कहलाये॥
हम पूजन करने आये॥ 22॥

ॐ ह्रः जुगालक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

श्रेष्ठ गुणों में, सिद्धान्तों में, श्रुत में भी अवगाये।
संग्रह करते इन सबका जो, ''संग्राहक'' पद भाये॥
हम पूजन करने आये॥ 23॥

ॐ ह्रः संग्राहक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वीतराग को, निर्ग्रन्थन को, उर में ला पधराये।
''परिचारक'' को उनकी सेवा, करना ही मन भाये॥
हम पूजन करने आये॥ 24॥

ॐ ह्रः परिचारक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सभी तरह से सभी जनों को, भद्र मार्ग दिखलाये।
करते हैं कल्याण पूज्य श्री, ''समन्तभद्र'' कहलाये॥
हम पूजन करने आये॥ 25॥

ॐ ह्रः समन्तभद्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(पद्धरि)

हो आप ''प्रशंसित'' बुध जन में, पा तुमको आती सुध मन में।
औ गणधर करत प्रशंसा है, जो पूजे भागे मंशा है॥ 26॥

ॐ ह्रः प्रशंसित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वे षडखण्डी भी ईड़ा से, बच जाते भव की पीड़ा से।
सो ''ईडित'' मैं भी थुति गाऊँ, मैं प्रणति करूँ नित सिर नाऊँ ॥27 ॥

ॐ ह्रः ईडित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम पाप कर्म के मर्षक हो, तुम आत्म तत्त्व के पर्सक हो।
हे ''अघमर्षक'' तुम ध्येय रहे, तुम जग में सबके प्रेय कहे ॥ 28 ॥

ॐ ह्रः अघमर्षक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जिन वर्ण दिगम्बर भेष धरा, तो मूर्च्छा की हो ठेस कहाँ।
हे ''वर्णी'' तुमसे भेट करें, तुम सबके उर में बैठ गये ॥ 29 ॥

ॐ ह्रः वर्णी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम ''विगत शोक'' है नाम सही, अब शोक बचा है लेश नहीं।
हम बड़े शौक से पूज करे, अब कर्म सैन्य पर टूट पड़े ॥ 30 ॥

ॐ ह्रः विगतशोक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

घर-बार-कुटुम सब तज करके, ले दीक्षा अपने गुरुवर से।
सो ''त्यागी'' तुमरा नाम भया, अब तुमसे मम उद्धार भया ॥ 31 ॥

ॐ ह्रः त्यागी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम अपने को ना बड़ा कहो, औ अहंकृती से दूर रहो।
मम अहंकार को मेट सदा, मैं बना रहूँ पद धूल अहा ॥ 32 ॥

ॐ ह्रः अनहंकार-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम तन्द्रा से हो ग्रसित नहीं, तुम करते जग को व्यथित नहीं।
हे ''ऽतन्द्र'' माद से दूर गुरु, अब अघ को कर दो चूर गुरु ॥ 33 ॥

ॐ ह्रः अतन्द्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम कुशल रहे सब कारज में, ''कर्मण्य'' आपकी पद रज ये।
मैं शीश चढ़ाकर नमन करूँ, मैं तुमरे पथ पर गमन करूँ ॥ 34 ॥

ॐ ह्रः कर्मण्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम लाभ देखकर काम करो, सो ''उपलम्भक'' यह नाम धरो।
हम बजा-बजाकर नक्कारे, हम पूज करेंगे गुरु द्वारे ॥ 35 ॥

ॐ ह्रः उपलम्भक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हे आगम के अनुपंथ पथी, सो होगी निश्चित श्रेष्ठ गती।
मैं ''आगमपंथी'' रहूँ सदा, मम मति हो जावे पूर्ण मुदा ॥ 36 ॥

ॐ ह्रः आगमपंथी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम अधिकारी हो निज मन के, तुम दास नहीं हो निज तन के।
सो ''अधिनायक'' की पूज करें, अब पाप हमारे जूझ मरें ॥ 37 ॥

ॐ ह्रः अधिनायक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम डींग कभी ना हाँकत हो, तुम ''अहंवाद'' को टारत हो।
हम अभिमानों को छोड़ अभी, हम गर्व करेंगे नहीं कभी ॥ 38 ॥

ॐ ह्रः अहंवादरहित श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तुम ''कर्मठ'' हो सब करने में, तव निष्ठा है अघ हरने में।
हे आत्मनिष्ठ हे कर्म निष्ठ, मम रहो सदा ही आप इष्ट ॥39 ॥

ॐ ह्रः कर्मठ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

है आस्था तुमरी जिनमत में, मम आस्था गुरुवर तुम मत में।
हे ''आस्तिक'' तुमको वन्दन हो, हे गुरुवर! तुम शिव नन्दन हो ॥40 ॥

ॐ ह्रः आस्तिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(विष्णु पद)

(लय-कहाँ गये चक्री)

सभी साधु में सर्वोत्तम गुरु, उत्तम हो सबमें।
नाम रहा ''शीर्षस्थ'' आपका, सत्तम हो जग में॥
रत्नत्रय के धारक ऋषि की, करता हूँ पूजा।
बोधि लाभ हो मुझको मेरे, तुम बिन ना दूजा ॥ 41 ॥

ॐ ह्रः शीर्षस्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दुष्कर्मों के ''अवरोधक'' हो, अघ को तुम रोधो।
पापात्मक सब भाव छोड़कर, दुराचार शोधो ॥
रत्नत्रय के धारक......... ॥ 42 ॥

ॐ ह्रः अवरोधक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

व्याकरणों का ज्ञान रहा है, छन्द ''शास्त्र'' ज्ञाता।
अलंकार को रस को जानो, हे मारग दाता।
रत्नत्रय के धारक......... ॥ 43 ॥

ॐ ह्रः शास्त्रज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हित का दो उपदेश सभी को, आत्म ''हितैषी'' हो।
उपकारक हो गुरुवर तुम तो, सर्व विशेषी हो॥
रत्नत्रय के धारक ऋषि की, करता हूँ पूजा।
बोधि लाभ हो मुझको मेरे, तुम बिन ना दूजा॥ 44॥

ॐ ह्रः हितैषी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सहन किये सब उपसर्गों को, हो ''सहिष्णु'' त्राता।
नाम जपूं मैं नाम जपूंगा, नाम जपूं पाता[1]॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 45॥

ॐ ह्रः सहिष्णु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''मध्यम-अन्तर-आतम'' तुम हो, परम पुण्य धाता।
पूज्य साधना करके स्वामी, पाओगे साता॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 46॥

ॐ ह्रः मध्यम-अन्तर-आत्मा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''श्रुतिधर'' पण्डित विशेषज्ञ हो, गुरुवर श्रुतवन्ता।
नमूँ नमूँ हे सुरनर पूजित, पाया शिव पन्था॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 47॥

ॐ ह्रः श्रुतिधर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रसिक रहे हो आतम रस के, रसिया है नामा।
तव चरणों का ''रसिक'' बना मैं, पाऊँ सुख धामा॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 48॥

ॐ ह्रः रसिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शिष्टाचारी सभ्य सुशिक्षित, मानवता भारी।
तुमने पाई सो हे गुरुवर, हो ''स्वेच्छाचारी''॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 49॥

ॐ ह्रः स्वेच्छाचारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सम्यग्ज्ञानी आत्म ज्ञान है, तुम हो ''संवेदी''।
आप चरण की पूजा करके, बनूँ आत्म वेदी॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 50॥

ॐ ह्रः संवेदी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. पवित्र

नाम यथा तुम करो तथा ही, ''सार्थक'' नामा हो।
यथा नाम तव पूजा से तो, बनते कामा औ॥
रत्नत्रय के धारक ऋषि की, करता हूँ पूजा।
बोधि लाभ हो मुझको मेरे, तुम बिन ना दूजा॥ 51॥

ॐ ह्रः सार्थक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आगम में जो भाखा चारित, तुमको वह प्यारा।
''यथाचार'' है नाम आपका, गुण वादन न्यारा॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 52॥

ॐ ह्रः यथाचार-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मत्त नहीं हो आलस ना है, निरालसी जागे।
हे ''ऽप्रमत्त'' मम हृदय बसो तव, दुरित सभी भागे॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 53॥

ॐ ह्रः अप्रमत्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

नाथ किसी का घात रुकावट, करते नाहीं हो।
''अविघातक'' है पूज्य वंदना, मुझको भाई औ।
रत्नत्रय के धारक.........॥ 54॥

ॐ ह्रः अविघातक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

विकृत कैसे होंगे तुमने, कामों को जीता।
''अविकारी!'' मम अर्च्य पूज से, होवे अघ रीता॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 55॥

ॐ ह्रः अविकारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दूर दृष्टि तुम सावधान सो, काहे अघ लागे।
नाम ''विचक्षण'' बुद्धिमान हम, अर्चा में पागे॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 56॥

ॐ ह्रः विचक्षण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

विचलित ना हो व्रत संयम में, अचल कहाते हो।
''अविचल'' गुरुवर तीन लोक को, आप सुहाते हो॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 57॥

ॐ ह्रः अविचल-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''यथाजात'' औ जन्म जात के, बालक सम लागो।
लोभ तृषा ना काम परस ना, लज्जा से भागो॥
रत्नत्रय के धारक ऋषि की, करता हूँ पूजा।
बोधि लाभ हो मुझको मेरे, तुम बिन ना दूजा॥ 58॥

ॐ ह्रः यथाजात-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अपने पद के योग्य काम अरु, गुण को भी धारो।
''यथार्ह'' पूजहूँ हमरे सबहिं, पापों को वारो॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 59॥

ॐ ह्रः यथार्ह-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

याञ्चा छोड़ी सभी चीज से, न्यारे रहते हो।
अहो ''अयाञ्चा'' गुण से मण्डित, तुम ही महते हो॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 60॥

ॐ ह्रः अयाञ्चा-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भव्य कुमुद को विकसित करने, तुम ही चन्दा हो।
अहो ''विकासक'' पूजन करने, आया बन्दा औ॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 61॥

ॐ ह्रः विकासक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अभीष्ट कार्य को जानत गुरु सो, अभीष्ट ज्ञापक हो।
मुझे इष्ट है चारित तुमरा, आप ''अमापक'' हो॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 62॥

ॐ ह्रः अमापक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वाचाली ना बहुत बात ना, करते स्वामी जी।
मुखर नहीं सो ''ऽमुखर'' पदों में, नमते नामी भी॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 63॥

ॐ ह्रः अमुखर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चिन्ता तुमरी कौन करेगा, दीन-हीन नाहीं।
चिन्तनीय हो''ऽशौच्य''वन्द्य जी, भीत-प्रीत नाहीं॥
रत्नत्रय के धारक.........॥ 64॥

ॐ ह्रः अशौच्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

जैसा है माहौल यथा ही, शास्त्रों में भाखा।
''यथावस्थ'' तव नाम सभी ने, मानस में राखा॥
रत्नत्रय के धारक ऋषि की, करता हूँ पूजा।
बोधि लाभ हो मुझको मेरे, तुम बिन ना दूजा॥ 65॥

ॐ ह्रः यथावस्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(दोहा)

अक्ष कषाओं को गुरू, जीतन में उद्योग।
करने में रत नित्य हो,''अभिजित''तुमरा योग॥66॥

ॐ ह्रः अभिजित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वीरों की चर्या करो, कायरता से दूर।
''भटधर्मा'' गुरु आपकी, विधि होवेगी चूर॥ 67॥

ॐ ह्रः भटधर्मा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उपसर्गों को आपने, जिनका ना उपमान।
सहे ''अभूत-उपमा'' करे,आजीवन गुणगान॥68॥

ॐ ह्रः अभूतोपम-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भूले भटके मार्ग से, च्युत को पथ दिखलाय।
''पथ-दर्शक''दीपक बने, निज-पर का हित भाय॥69॥

ॐ ह्रः पथदर्शक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

संयम बाधक कारकों, लोगों से परहेज।
''परहेजगार'' घर त्याग तप, धर के रखते सेज॥70॥

ॐ ह्रः परहेजगार-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पर की पीड़ा देखकर, करुणा से भर जाय।
दया सिन्धु उमड़े तभी, ''करुणासक्त'' भाय॥ 71॥

ॐ ह्रः करुणासक्त -नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आन्तरिकी ताकत रही, तन चाहे कमजोर।
''अन्तसत्त्व'' से शीघ्र ही, सुख की होगी भोर॥ 72॥

ॐ ह्रः अन्तसत्त्व -नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आत्मिक सुख की खोज में, लगे रहे दिन रात।
तभी ''गवेषक'' आपने, बना लयी है बात॥ 73॥

ॐ ह्रः गवेषक -नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अग्नि समा ही तेज है, ''अग्नि समा ही वीर्य''।
अग्नि समा विधि घास को, जला करो निर्वीर्य ॥ 74 ॥

ॐ ह्रः अग्निवीर्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

स्मरण शक्ति अति तेज है, सुनकर भूलो नाय।
अहो ''धारणावान'' तुम, ज्ञानवान पद नाय[1] ॥ 75 ॥

ॐ ह्रः धारणावान-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आप अलौकिक व्यक्ति हो, लोकोत्तर हैं काम।
''दिव्य-पुरुष'' के सामने, सब होते निष्काम ॥ 76 ॥

ॐ ह्रः दिव्य पुरुष-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कर्त्तापन करते नहीं, नाहीं उसका मान।
ना भूलो कर्त्तव्य को,आप ''अकर्त्तक'' ज्ञान ॥ 77 ॥

ॐ ह्रः अकर्त्तक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रहो समाहित आत्म में, बाहर का ना भान।
''अन्तर्गत'' का अग्नि ने, ना कीना है हान ॥ 78 ॥

ॐ ह्रः अन्तर्गत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

लाभ-हानि रिपु मित्र से, राग रहा ना रोष।
सो ''तटस्थ'' उद्देश्य है, कर्मों का हो शोष ॥ 79 ॥

ॐ ह्रः तटस्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रहने उठने - बैठने, ना है निश्चित थान।
''अन्यत्रं वासी'' गुरू , तुम करते निज पान ॥ 80 ॥

ॐ ह्रः अन्यत्रवासी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दोष दिखे तो शीघ्र ही, लेते नजरें फेर।
''अनसूयं'' को देखकर, मिटता दृष्टी फेर ॥ 81 ॥

ॐ ह्रः अनसूय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पर्यायें जो द्रव्य की, सूक्षम बादर नेक।
''पर्यायज्ञं'' ज्ञान है, ना चाहो पर एक ॥ 82 ॥

ॐ ह्रः पर्यायज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उत्सुकता उर में भरी, मोक्ष प्राप्ति के हेत।
''उत्सुक'' तुमको देख अब, हम भी जावे चेत ॥ 83 ॥

ॐ ह्रः उत्सुक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. नमते हैं।

मेधावी हो आप में, मेधा का ना पार।
प्रखर बुद्धि ''मेधिष्ठ'' ने, जाना जग का सार ॥ 84 ॥

ॐ ह्रः मेधिष्ठ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मिष्ठान्नों को खायकर, जितनी खुशियाँ होय।
''प्रियंवदं'' की वाच सुन, मन का आपा खोय ॥ 85 ॥

ॐ ह्रः प्रियंवदं-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(नरेन्द्र)

भगवन्तों ने जैसा अपनी, दिव्यध्वनि में भाखा।
शौर्य गुणों के धारी तुमने, मन थिरता को राखा॥
सूरि अकम्पन सप्त शतक को, पूज तजे दुर्चेष्टा।
विष्णुसिन्धु ने रक्षा कीनी, जिनकी वे जग जेष्ठा ॥86 ॥

ॐ ह्रः शौर्य-गुणधारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शान्त चित्त हो शान्ति प्राप्त हो, स्वस्थ चित्त में राजें।
''शान्त-कषायी''भाव प्रशान्ता, नहीं किसी पर गाजें॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 87 ॥

ॐ ह्रः शान्तकषायी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तीन लोक के ऋषियों में गुरु, आप हुए है मोठे।
ये ही ''ऋषिवर'' सबही मेटे, कर्म रहे जो खोटे॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 88 ॥

ॐ ह्रः ऋषीश्वर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''श्लाघ्य'' रहे हो विज्ञ जनों से, अतः आप परशान्ता।
शंसनीय हे स्तुत्य बताओ, हमको शिव का रास्ता॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 89 ॥

ॐ ह्रः श्लाघ्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सहनशील हो सश्रय ''समरथ'', तभी तपा तप भारी।
हे गुरुवर ! तव पूजन से हम, ना हो स्वेच्छाचारी॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 90 ॥

ॐ ह्रः समर्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''परमोत्तम है चार लोक में'', उनमें तुम भी माने।
उत्तम हो तुम तीजे स्वामी, सुमरण से भव हाने॥
सूरि अकम्पन सप्त शतक को, पूज तजे दुर्चेष्टा।
विष्णुसिन्धु ने रक्षा कीनी, जिनकी वे जग जेष्ठा॥91॥

ॐ ह्रः लोगोत्तम-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पाप गलाते पुण्य बढ़ाते, ''मंगल'' तुम हो प्यारे।
इसीलिए तव पूजन से गुरु, सुख पाते हम न्यारे॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 92 ॥

ॐ ह्रः मङ्गल-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रक्षा करते बचा दुरित से, सुखिया तुम कर देते।
शरणदातृ है शरणागत के, ''शरण'' नाम हम लेते॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 93 ॥

ॐ ह्रः शरण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पाप क्रियायें छोड़ी है सो, पापास्रव ना होवे।
''अनघ'' आपकी पूजा से गुरु, शल्य दूर अब होवे॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 94 ॥

ॐ ह्रः अनघ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शत्रु बचे ना तुमरे तुममें, रिपुता नाहीं बाकी।
रही तभी तो ''ऽजातशत्रु'' से, पर्व बना है राखी॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 95 ॥

ॐ ह्रः अजातशत्रु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

महाकुलों में जन्म लेयकर, उन्नत विस्तृत कार्या।
अतः आप है महा ''महन्ता'', तुमको नमते आर्या॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 96 ॥

ॐ ह्रः महन्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कर्म अराती को नाशन में, उद्यम तुमने छेड़ा।
''रिपुघाती'' हो शत्रु विनाशक, आश्रय हमको तेरा॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 97 ॥

ॐ ह्रः रिपुघाती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सुष्ठू सुन्दर महा अहिंसक, रही आपकी चर्या।
''प्रत्याचारं'' सह आचारी, जग में वो ही वर्या[1]॥
सूरि अकम्पन सप्त शतक को, पूज तजे दुर्चेष्टा।
विष्णुसिन्धु ने रक्षा कीनी, जिनकी वे जग जेष्ठा॥98॥

ॐ ह्रः प्रत्याचार-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गुरु जन हो या महा तपस्वी, वृद्ध गुणी जो आवे।
''प्रत्युत्थानी'' खड़े होयकर, उनके आगे जावे॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 99 ॥

ॐ ह्रः प्रत्युत्थानी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मोह नींद में सुप्त जीव को, जगा दिया है स्वामी।
तभी ''प्रबोधक'' पूजन करते, आते है अभिरामी॥
सूरि अकम्पन.......... ॥ 100 ॥

ॐ ह्रः प्रबोधक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पूर्णार्घ

नेकानेक गुणों से मण्डित, अपने गुरु को ध्याऊँ।
दुर्गुण छोड़ूँ सद्गुण पाऊँ, तुमरा ध्यान लगाऊँ॥
लाडूँ पेड़ा चावल चन्दन, पयस पुष्प फल लाऊँ।
अर्घ बनाकर पुलकित मन से, भवतः चरण चढ़ाऊँ॥

ॐ ह्रः निरावरणादि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं......

जाप्य - ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः। (9, 27,108)

1. उत्कृष्ट

जयमाला

(दोहा)

मिला-मिला कर द्रव्य को, अष्टक कीने श्रेष्ठ।
सबकी करके अर्चना, माला कहता जेष्ठ॥

(लय-अति पुण्य उदय मम आया......)

हे गुरुवर तुम हो शरणा, हे पूज्य तुम्हारे चरणा।
मैं तुमको पा हरषाऊँ, ना वृष को अब तरसाऊँ॥
मैं तरसता ना धर्म को अब, शरण तुमरी आ गया।
मैं धर्म को धरमातमा को, पाय धनि-धनि हो गया॥
औ देख तुमरे गुण गणों को, मौन ना रख पा सका।
सो अल्पमति से गीत गाने, आ गया हे शिवसखा!॥

तुम धीमन्ता श्रीमन्ता, हो गुरुवर जग दुखहन्ता।
मम दुखड़े सबही नाशो, अब मुझमें ज्ञान प्रकाशो॥
सद्ज्ञान मुझको देय स्वामी, मोक्ष पथ पर चालने।
वर बुद्धि प्रज्ञा शक्ति दो, संसार के भय टालने॥
मैं भक्ति से तव पाँव पड़ता, विनय से कर जोड़ के।
मैं बद्ध अञ्जलि शीश रखकर, धोक दूँ मद तोड़ के॥

हे पूर्णव्रती बड़भागी, मैं आज बना सौभागी।
पा दर्शन कल्मष धोऊँ, जिनधर्म कभी नहिं खोऊँ॥
मैं खोउगा ना धर्म को अब, कल्प तरु सम दुर्लभम्।
इन पाय के सब कर्म नाशूँ, ग्राह्य है जो सौख्यदम्॥
जो कामधेनू कामना से, स्पर्शमणि दे परस से।
ये धर्म दे बिन कामना के, बिना परस के हरष दे॥

हे संवर-निर्जर धारी, तुम गुरुवर विद्याधारी।
तुम ग्रहण त्याग को जानो, सो पूरव के अघ हानो॥

मम हान दो सब पूर्व-पार्जित, पाप दुरितं ढेर जो।
ये रोंदके मम संयमों को, बन गये है शेर[1] औ॥
तुम दुःख शासक कर्म रिपु को, श्रेष्ठ व्रत को पालके।
औ नाश दोगे धन्य हो तुम, तोड़ दोगे जाल ये॥

रे विजयमाल फहराई, भव-भोग विरति को पाई।
तव विघ्न मिटे थे सारे, हम शरण रहेंगे थारे॥
हम शरण केवल आपकी ही, लोक में लेंगे सदा।
जब तक मिले ना मुक्ति पद औ, कर्म होंगे ना जुदा॥
अब माल पूरी करत है गुरु, भक्त बन अलबेल ये।
जो दोष मुझसे हो गया, उस माफ कर निश्चेल!मैं॥ 6॥

(घत्ता)

हे गुरुवर उत्तम, सबमें सत्तम, आप जगत में कहलाते।
है कारण उसका, वारण भव का, मात्र इसी से कर पाते॥
जो लिंग आप ने, बद्ध आप में, होकर तुमने धार लिया।
सो अर्घ्य चढ़ाने, पाप मिटाने, आकर जीवन सार लिया॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

(ज्ञानोदय)

सूरि अकम्पन सहित सात सौ, मुनियों की ये अर्चा है।
भव नाशक है शिव की शासक, जो करता नित चर्चा है॥
कर्म कटें तिस दुर्गति मिटती, सद्गति में वो जाता है।
परम्परा से मुक्ति-महल में, जा बसता पा साता है॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

1. मालिक

सप्तम पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय)

घर केतन से, धन वेतन से, दूर हुए इन दरदं से।
तन चेतन का भेद ज्ञान भी, जिनने पाया वरदं है॥
उन्हें बुलाकर पूज रचाने, दूम दूम माँदर[1] वाद करूँ।
उर में थापूँ निकट करूँ हे, गुरुवर ! घंटा नाद करूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ इति ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वर समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(दोहा)

क्षीरोदधि के पयस से, धवल भाव कर आज।
उपजन विनशन मेटने, पूजूँ हे शिरताज!॥
सात शतक मुनिराज की, पूजन हमको इष्ट।
घोर उपद्रव के गुरु, सह लीने थे कष्ट॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागरु की गंध सम, तुमरे सुरभित भाव।
दाह मिटे पूजूँ तुम्हें, भर-भर कर उच्छाव॥
सात शतक........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः संसार-ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चुग-चुग चौखे चाँवलं, चरण चढ़ाऊँ चाव।
अजर अमर अक्षय बनूँ, मेरा है बस भाव॥
सात शतक........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽक्षय पर प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मृदंग

काम कामना कोप भी, कामिनि का भी काम।
रहे नहीं मम पास में, पुष्प धरूँ सुख धाम।
सात शतक........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्त-शतक ऋषीश्वरेभ्यः काम-बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खा-खाकर मैं चाहता, मिट जायेगी भूख।
देखा तुमको तो पुरु, चरु देता हो मूक॥
सात शतक........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप से अंध जो, चिर से छाया चित्त।
मिटे दीप ले पूजहूँ, ना भावे अब वित्त॥
सात शतक........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूम-समा ये कर्म मम, ज्ञान नयन में जाय?।
साफ करो द्वय चक्षु को, धूप चढ़ाऊँ आय॥
सात शतक........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मात्र फलों के भेट से, क्या शिव फल मिल जाय।
फल की आशा छोड़ दे, तो फिर शिव में जाय॥
सात शतक........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पानी चन्दन अक्षतं, पुञ्ज किया भरपूर।
अनर्घ पद की आस ले, अर्घ दऊँ अघचूर॥
सात शतक........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ

(दोहा)

अर्घों से पूजा गुरु, झुक-झुक दे-दे धोक।
सबको दे दे अर्घ तो, क्यों होवेगा शोक ?॥
परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

(ज्ञानोदय)

काष्ठा को ही चेल बनाकर, काष्ठा कपड़े पहने हो।
''काष्ठाचेलक'' शील सुसंयम, तुमरे सुन्दर गहने औ॥
संयम-यम को राख लिया सो, राखी का शुभ पर्व हुआ।
साधर्मी वात्सल्य देखकर, तुम पर हमको गर्व हुआ॥1॥

ॐ ह्रः काष्ठाचेलक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं..... ।

हरि को भजते हरित वस्त्र बन[1]?, ''हरिताम्बर'' तुम सुखदा हो।
अहो ऋषीश्वर तुम पूजन से, जीवन हमरा सुखदा हो॥
संयम यम..........॥ 2॥

ॐ ह्रः हरिताम्बर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गगन समा ना किसी वस्तु को, ग्रहण करो सो ''निर्लिप्ता''।
लेप मिटे मम कर्म रजो का, अर्घ चढ़ाऊँ हे इष्टा!॥
संयम यम..........॥ 3॥

ॐ ह्रः निर्लिप्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पाप कर्म से बहुत दूर ही, निष्पापी गुरु रहते हैं।
''कृष्णाकर्मी'' की पूजन से, गतपापी ही बनते हैं॥
संयम यम..........॥ 4॥

ॐ ह्रः कृष्णाकर्मी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अपनी सत्ता नहीं जमाते, ना दवाब ही डालत हो।
''अहंमन्यता'' छोड़ ऋषीश्वर, भव्य जनों को पालत हो।।
संयम यम..........॥ 5॥

ॐ ह्रः अहंमन्यता रहित-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. हरे वस्त्र के त्यागी

चरित आपका स्वच्छ शुद्ध है, दोष रहित है रोष मिटा।
अहो ''अदूषित'' ईडा करता, मेरे भी अब दोष हटा॥
संयम-यम को राख लिया सो, राखी का शुभ पर्व हुआ।
साधर्मी वात्सल्य देखकर, तुम पर हमको गर्व हुआ॥6॥

ॐ ह्रः अदूषित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कैसा घर है, कैसे गुरु है, क्या है मेरा धर्म अहो!।
गौरव रखते अपने पद का, उत्तम करते काम अहो!॥
संयम यम..........॥ 7॥

ॐ ह्रः गौरवशाली-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रहते ''अन्तर्मुखी'' आप है, अन्तर के ही काज करो।
बाहर में उपयोग रमें ना, पूजूँ कल्मष आज हरो॥
संयम यम..........॥ 8॥

ॐ ह्रः अन्तरमुखी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्ममयी शुभ जीवन में जो, अतिचारों का रोग लगे।
दूर करन की विधिमय औषध, देते जीवन ''भैषज'' ये॥
संयम यम..........॥ 9॥

ॐ ह्रः भैषज-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वृष के गुण का यश का कीर्तन, करते रहते दिवस निशा।
''गुणाख्यान'' है नाम अर्थ मय, हमें दिखा दो मोक्ष दिशा॥
संयम यम..........॥ 10॥

ॐ ह्रः गुणाख्यान-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बिना प्रयोजन बिन सोचे ना, आप कभी भी बोलत हो।
''गुम्मा'' बोलत मात्र नाम का[1], हमको भी कुछ मौलत दो॥
संयम यम..........॥ 11॥

ॐ ह्रः गुम्मा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

नामधन्य हो लब्ध प्रतिष्ठा, ख्यात हुए ''यशवंत'' रहे।
विस्मयकारक देख कार्य हम, परमेष्ठी भगवंत कहें॥
संयम यम..........॥ 12॥

ॐ ह्रः यशवंत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. बोलने का मात्र नाम करते हैं।

पथ में रहते सदा विचरते, जिनवर के ही मारग में।
अहो ''पथस्थं'' नाम जपा तो, भरी ज्ञान की गागर ये॥
संयम-यम को राख लिया सो, राखी का शुभ पर्व हुआ।
साधर्मी वात्सल्य देखकर, तुम पर हमको गर्व हुआ॥13॥

ॐ ह्रः पथस्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

श्रद्धा के तुम योग्य रहे हो, भक्ति भाव के काबिल हो।
''भक्तिभाजनं'' नाम जपें सो, बने मोक्ष के काबिल औ॥
संयम यम..........॥ 14॥

ॐ ह्रः भक्तिभाजन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पूजनीय हो, माननीय हो, ''महनीयं'' हो, महता हो।
भक्त पुजारी झुक-झुक नमते, विघ्न कष्ट के सहता को॥
संयम यम..........॥ 15॥

ॐ ह्रः महनीय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मर्म जानते चेतन तन का, तत्त्वों का भी बोध महा।
''मर्मवेधि'' तव नाम सुने तो, बाधाओं का काम कहाँ॥
संयम यम..........॥ 16॥

ॐ ह्रः मर्मवेधी-नाम धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मंथन करके छह द्रव्यों के, वर्णक आगम ग्रन्थों को।
सार निकाला घरकारा को,''मंथी''छोड़े ग्रंथों को॥
संयम यम..........॥ 17॥

ॐ ह्रः मंथीनाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मान्यों में भी मान्य रहे हो, मानी जन भी पूज रहे।
''मान्यवरं'' की पूजा अर्चा, से तो अघतम धूज रहे॥
संयम यम..........॥ 18॥

ॐ ह्रः मान्यवर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कड़वी शिक्षाप्रद बातों को, मधुरिम मिश्री घोली सी।
कहते हैं सो ''मंगलभाषी'', लगती मीठी बोली जी॥
संयम यम..........॥ 19॥

ॐ ह्रः मंगलभाषी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निज भावों से, शिव भावों से,''मंगलमय'' शुभ भावों से।
भावस्थं तुम लगे हुए सो, नमें आज हम चावों से॥
संयम-यम को राख लिया सो, राखी का शुभ पर्व हुआ।
साधर्मी वात्सल्य देखकर, तुम पर हमको गर्व हुआ॥20॥

ॐ ह्रः मंगलमय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

व्रत संयम की महक लोक में, चारों दिशि में फैल गयी।
''महकीलं'' जी आप चेतना, आपद को भी झेल गयी॥
संयम यम..........॥ 21॥

ॐ ह्रः महकील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

संयम सौरभ शान्त भाव का, अर्णव तुममें लहराता।
''महार्णवं''गुरु आप चरित से, भविक किनारा पा जाता॥
संयम यम..........॥ 22॥

ॐ ह्रः महार्णव-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सर्वोत्तम है, सबसे ऊँचा, कष्टमयी है कठिन रहा।
उस पथ चलते''महापथों के, गामी''का पथ मलिन कहाँ॥
संयम यम..........॥ 23॥

ॐ ह्रः महापथगामी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उच्च मना हो, ऊँचे हो तुम, लक्ष्य बनाकर चलते हो।
''महदाशय'' जी सर्वोपरि इस, मोक्षमार्ग में पलते हो॥
संयम यम..........॥ 24॥

ॐ ह्रः महदाशय-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उपसर्गों को देख सुना तो, सुर-नर-ऋषि गण काँप गये।
आप''अतुलबलि''रहे तभी तो, बलशाली बलि हाँफ गये॥
संयम यम..........॥ 25॥

ॐ ह्रः अतुलबलि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(आल्हा)

नहीं किसी का आश्रय लेते, प्रभु का आश्रय नाहीं तजते।
नाम''अनन्याश्रित''है ऐसा, तीन लोक में ना है वैसा॥ 26॥

ॐ ह्रः अनन्याश्रित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

एक थान पर टिके हुए हो, अन्य चित्त ना आप भए हो॥
अहो ''अन्नयंचित्त'' धरा है, हमने तव पद शीश धरा है॥27॥

ॐ ह्रः अनन्यचित्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं ......।

आगम का अनुवर्तन करते, अनागमों की वांछा हरते।
आगम के ''अनुवर्ती'' तुमको, भजते आशिष दे दो हमको॥28॥

ॐ ह्रः अनुवर्ती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अमित रही है आभा तन की, रही अलौकिक आभा मन की।
''अमिताभं'' जी वैर मिटा दो, निज आतम की सैर करा दो॥29॥

ॐ ह्रः अमिताभ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मन्यु नाम है क्रोध भाव का, तुममें तो है क्षमा चाव वा।
''जितमन्यू'' जी नित्य भजूँगा, पाप कार्य को पूर्ण तजूँगा॥ 30॥

ॐ ह्रः जितमन्यू-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म प्राण जो सच्चे माने, उनके गुरुवर तुम हो खाने[1]।
इन प्राणों को देने वाले, तुमरी पूजा से अघ हाले॥31॥

ॐ ह्रः धर्मप्राण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म नाव पर चढ़कर प्राणी, पार उतरता भव से ज्ञानी।
वो ही तुमरे पास अभी है, ''जीवन-नौका'' नाम तभी है॥32॥

ॐ ह्रः जीवननौका-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शिर के तुमने बाल हटाये, सच पूछों तो कर्म गलाये।
''उत्पाटक'' जी मूल उखाड़ो, विधि बन्धन को अब तो ताड़ो॥33॥

ॐ ह्रः उत्पाटक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

प्रभुवर का तुम जप करते हो, शिव जाने को तप तपते हो।
''जपकर्ता'' के कर्म कटेंगे, जन्म मरण से अब उबरेंगे॥ 34॥

ॐ ह्रः जपकर्ता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अन्वेषण गम्भीर तत्त्व का, करते जो की तथ्य रहा वा।
''तथ्यान्वेषी'' सत्य बता दो, माफ करा दो पाप खता औ॥ 35॥

ॐ ह्रः तथ्यान्वेषी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. खजाना

वर्षा आदिक त्रय योगों में, रूढ़ रहे हो हठयोगों[1] से।
''योगारूढ़ं'' आरति गाऊँ, तुमसे मैं जिन भारति पाऊँ॥ 36॥

ॐ ह्रः योगारूढ़-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

योजित कीना निज चेतन में, अपने को तज धन वेतन रे।
''युक्तात्मा'' के चरण रहूँगा, कष्टों में मैं साम्य धरूँगा॥ 37॥

ॐ ह्रः युक्तात्मा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चौथे युग में महा पुरुष जी, हुए प्रतिष्ठित पाल वरत[2] जी।
''युगपुरुषं'' हो उनमें तुम भी, भक्त बने हैं तुमरे हम भी॥38॥

ॐ ह्रः युगपुरुष-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भाव शुभाशुभ आप जानते, अशुभ भाव को पाप मानते।
''भावज्ञं'' मम भाव सुधारो, गुरुवर मेरे हृदय पधारो॥ 39॥

ॐ ह्रः भावज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बाहरि क्रीड़ा भाती ना है, उसमें मति भी जाती ना है।
आतम में नित रमते रहते, अतः ''विनोदी'' तुमको कहते॥ 40॥

ॐ ह्रः विनोदी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निश्चय के सह व्यवहर पालो, ''समव्यवहारं'' विधि को टालो।
निश्चय होंगे शिव के भर्ता, बन जाओ गुरु मम अघ हर्ता॥ 41॥

ॐ ह्रः समव्यवहारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शिक्षित सभ्यं शिष्ट कहे है, विनयशील मम इष्ट रहे हैं।
औ ''शालीनं'' शिक्षित कर दो, भव्यों को अब दीक्षित कर दो॥ 42॥

ॐ ह्रः शालीन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

नेक शास्त्र का ज्ञान तुमें है, पाप-पुण्य को जान चुके है।
''बहुश्रुत ज्ञाता'' आप कहावो, गुरुवर मम अज्ञान मिटाओ॥ 43॥

ॐ ह्रः बहुश्रुतज्ञ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मुनिगण ऋषिगण में चर्चित हो, देव सुरासुर से अर्चित हो।
''बहुचर्चित'' को कौन तजेगा, बच्चा-बच्चा नित्य भजेगा॥44॥

ॐ ह्रः बहुचर्चित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. कायक्लेश तप 2. व्रत

नेक अनेकों गुण भण्डारा, सत्य अहिंसा पावन धारा।
''बहुगण धारी'' गुणवन्ता ओ, सभी मार्ग तज शिवपन्था हो॥ 45॥
ॐ ह्रः बहुगुणी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
साधु बने सो हो वृष नन्दन, पापी भी आ बनते चन्दन।
''धर्म-पुत्र-जी'' पौत्र बना लो, मुझको भी वृष स्रोत पिला दो॥ 46॥
ॐ ह्रः धर्मपुत्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
मरहम से ज्यों घाव ठीक हो, दरशन से ही पाप रीत हो।
''मरहम'' हम भी मरहम बनने, आये हैं गुरु क्रंदन हरने॥ 47॥
ॐ ह्रः मरहम -नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
आतम में तव रति है कितनी, हो सकती ना उसकी गिनती।
''महारतीजी'' राग मिटादो, प्रभु चरणों में राग जगा दो॥ 48॥
ॐ ह्रः महारती-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
सच्चे तुम ही ''धर्म-केतु'' हो, भव वारण में आप हेतु हो।
धर्म-पताकी धर्म सिखा दो, घर कारा मम आज विदा[1] दो॥ 49॥
ॐ ह्रः धर्मकेतु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
मिथ्यातम जो भव को करता, अविरति से भी भव ही बढ़ता।
ये दोनों तव बची नहीं है,''अघमुक्तं'' गुरु आप सही है॥ 50॥
ॐ ह्रः अघमुक्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(विष्णुपद)

(लय-कहाँ गये चक्री जिन जीता)

बिजली बादल इन्द्र धनुष सम, चंचल हैं सारे।
जीवन यौवन धन वैभव ये, लगते हैं प्यारे॥
''क्षणिक'' भावना नश्वरता को, तुमने भायी है।
तभी निराकुल आतम सुख में, चिति ललचायी है॥51॥
ॐ ह्रः अनित्य-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. छुड़ा दो

रक्षक ना है कोई जग में, पराधीन दुखिया।
भय लगता है यमराजों का, कैसे हो सुखिया॥
''अशरण'' सभी है शरण पंच गुरु, या आतम अपना।
यूँ चिन्तन कर गुरुवर तुमने, शुरू किया तपना॥52॥
ॐ ह्रः अशरण-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
द्रव्य क्षेत्र में काल भवों में, भावों में भटका।
तभी अनन्तों काल लोक में, स्वामी मैं अटका॥
''संसृति'' भावन भाकर ओहो!, भ्रमण मिटाया है।
धन्य आपने महा मोह का, अन्ध हटाया है॥53॥
ॐ ह्रः संसार-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
एक अकेला जनम मरण पा, सुख दुख से भेटे।
नहीं सहाई होता कोई, मात-पिता बेटे॥
स्वयं मोक्ष का पुरुषार्थी बन, शिव में जाता है।
भाय सदा ''एकत्व'' भावना, पायी साता है॥54॥
ॐ ह्रः एकत्व-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
जग के सारे चेतन जड़ ये, मुझसे न्यारे हैं।
इनको अपना मान दुःख ही, पाये खारे हैं॥
''अन्यत्वं'' यह भावन भाकर, पर को छोड़ा है।
समझ आत्म को शाश्वत सम्पद्, नाता जोड़ा है॥55॥
ॐ ह्रः अन्यत्व-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।
हाड़ मांस से, सप्त धातु से, भरा देह कारा।
नौ - द्वारे नित झरते रहते, ना रोकन चारा॥
इससे छूकर निर्मल वस्तू, मलिनं बनती है।
''अशुचिभावना'' भाने से गुरु, ममता टलती है॥56॥
ॐ ह्रः अशुचि-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मिथ्यात्वादिक पंच हेतु से, विधियाँ आती है।
आत्मिक सुख को, समता को भी, नित्य नशाती हैं॥
"आस्रव" बन्धन दुख के कारण, हेय बताये हैं।
यही भावना भाकर दुष्कृत, दूर हटाये हैं॥ 57॥

ॐ ह्रः आस्रव-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गुप्ति समिति व्रत संयम से ही, कर्मास्रव रुकते।
कर्म रोध को देख सुरासुर, नर आकर झुकते॥
"संवर" को हे ऋषिवर जी तुम, उपादेय मानों।
पूरण संवर पाने को ही, निज को पहिचानों॥ 58॥

ॐ ह्रः संवर-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अग्नि समा जिन घोर तपों से, मोक्ष पास होवे।
तपसी को लख मोह शत्रु भी, अपना मद खोवे॥
"निर्जर" भावन भाते दुर्धर, तप से अघ हाले।
गुण-श्रेणी से कर्म नाशकर, भव विपदा टाले॥59॥

ॐ ह्रः निर्जरा-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अधो मध्य में ऊर्ध्व लोक में, जनम-जनम मरता।
पर को अपना मान-मान कर, उनमें मन धरता॥
पुण्य-पाप के फल हैं सारे, उनमें उलझा औ।
"लोक"-भावना भाने वाले, हमको सुलझाओ॥60॥

ॐ ह्रः लोक-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मनुजपने से सम्यग्दर्शन, दर्शन से ज्ञानं।
उससे रत्नत्रय है दुर्लभ, तजना अभिमानं॥
आतम "बोधी पाना दुर्लभ", उसको पाया है।
उसको पाने दास दौड़ यह, चरणों आया है॥61॥

ॐ ह्रः बोधिदुर्लभ-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चरित धर्म है, दया धर्म जो, द्रव्य स्वभावं है।
उसको समझे बिना अभी तक, पाय विभावं है॥
भटके हम हैं "धर्म भावना", आप सुभाते हो।
इसीलिए तो पूज्य मुनीश्वर, मुझे सुहाते हो ॥62॥

ॐ ह्रः धर्म-भावना-भावक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सत्यभाव से पूर्ण उत्तमा, उचित प्रकारा है।
"यथार्थ" करते काम आपही, नियम प्रधाना है॥
मोक्षमार्ग में गुरुवर हमको, आप ठिकाना है।
तुमरे संयम तप चारित का, लोक दिवाना है॥63॥

ॐ ह्रः यथार्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आतम हित में यत्न निरन्तर, करते हो नित्या।
ओ "यत्नाधर" आराधन से, अघ होते रित्या॥
मोक्ष मार्ग........॥ 64॥

ॐ ह्रः यत्नाधर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

परभव सुधरे यही लक्ष्य ले, कारज को कीने।
अच्छे सब ही "सल्लक्षी" की, शरणा हम लीने॥
मोक्ष मार्ग........॥ 65॥

ॐ ह्रः सल्लक्षी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कर्त्तव्यों को करने की ही, आदत डाली है।
कर्त्तव्यों के पालक पूजा, सुख की डाली है॥
मोक्ष मार्ग........॥ 66॥

ॐ ह्रः कर्त्तव्यशील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आशंकाएँ मिटी आपकी, "निराशंक" माने।
संशय तजकर शिवपथ चलते, आये गुण गाने॥
मोक्ष मार्ग........॥ 67॥

ॐ ह्रः निराशंक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

विद्याओं के मालिक हैं सो, विद्याधर पूजे।
मैं भी पूजूँ ''विद्याधर'' जी, पातक मम धूजे॥
मोक्षमार्ग में गुरुवर हमको, आप ठिकाना है।
तुमरे संयम तप चारित का, लोक दिवाना है॥68॥

ॐ ह्रः विद्याधर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मन-वच-तन की चंचलता को, छोड़ा सो ''ऽचंचल''।
चंचल चित मम थिर हो जावे, पाऊँ जब आंचल॥
मोक्षमार्ग........॥ 69॥

ॐ ह्रः अचंचल-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निन्दा कोई कर ना सकता, दोष मिटायें हैं।
अहो ''अनिंदित'' खुशी-खुशी हम, पूज रचायें हैं॥
मोक्षमार्ग........॥ 70॥

ॐ ह्रः अनिंदित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

घृणा किसी से ना करते सो, सब जन खुशयाले।
अहो ''ऽघृणित'' ना कोई तुमसे, नफरत कर चाले॥
मोक्षमार्ग........॥ 71॥

ॐ ह्रः अघृणित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अपने व्रत में, गुरु वंशों में, लांछन ना लागा।
आप ''अलांछित'' तव पूजन में, मेरा मन पागा॥
मोक्षमार्ग........॥ 72॥

ॐ ह्रः अलांछित -नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आप करे अनुशरण तीर्थ का, ''अनुसंस्था'' नामी।
हम भी तुमरे पथ पर चलते, कल्मष हो खामी॥
मोक्षमार्ग........॥ 73॥

ॐ ह्रः अनुसंस्था-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सम्यक् रक्षण अपने व्रत को, पापों से रक्षे।
नाम ''संगोपक'' पूजे तो गुरु, दुरितं को भक्षे॥
मोक्षमार्ग में गुरुवर हमको, आप ठिकाना है।
तुमरे संयम तप चारित का, लोक दिवाना है॥74॥

ॐ ह्रः संगोपक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

माद छोड़कर जागरूक निर, आलस ही माने।
पूज्य ''सजागर'' नाम जपे तो, दुष्कृत को हाने॥
मोक्षमार्ग........॥ 75॥

ॐ ह्रः सजागर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दुर्गति दायक पर घातों में, क्या हर्षित होवे ?।
अहोऽहिंस्र जी तव आराधन, दुर्गति को खोवे॥
मोक्षमार्ग........॥ 76॥

ॐ ह्रः अहिंस्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दोष रहित यम संयम दम में, ''सुव्रत'' भाते हो।
हे नग्नं! पद पूज आपकी, यतिगण गाते हो॥
मोक्षमार्ग........॥ 77॥

ॐ ह्रः सुव्रत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पूज्य तपस्वी ऋषि से तुमने, दीक्षा धारी है।
''ऋषि-संतानं'' नाम धार भव, चाल सुधारी है॥
मोक्षमार्ग........॥ 78॥

ॐ ह्रः ऋषिसंतान-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

इक दूजे के भावों को तुम, अनेकान्त समझो।
''समन्वयी'' की अर्चा करके, भव्य आज सुलझो॥
मोक्षमार्ग........॥ 79॥

ॐ ह्रः समन्वयी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सत्य तत्त्व को पाने की हाँ, ठोस प्रतिज्ञा है।
''सत्य-निष्ठ'' तव पूज करे तो, बने सुविज्ञा है॥
मोक्षमार्ग में गुरुवर हमको, आप ठिकाना है।
तुमरे संयम तप चारित का, लोक दिवाना है॥80॥

ॐ ह्रः सत्यनिष्ठ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(पद्धरि)

भला सदा ही करते सबका, तुम चरणों में मन हो जग का।
पुण्यजनों में ईश कहाते, ''पुण्य-जनेश्वर'' हमको भाते॥ 81॥

ॐ ह्रः पुण्यजनेश्वर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अनघ दुरित है उसका फल तो, नरकासुर हो तिर्यग्पन हो।
''धर्म-भीरु''तुम यही सोच के, शिवपथ पंथी आत्म खोजते॥82॥

ॐ ह्रः धर्मभीरु-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म धर्म के साधन स्वामी, सबमें वत्सलता है नामी।
धर्म सुवत्सल पावन तुम हो, तुमरी थुति से पावन हम हो॥83॥

ॐ ह्रः धर्मवत्सल-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

धर्म बुद्धि ना विचलित होती, शुचितम प्रज्ञा विलसित होती।
नाम ''धर्ममति'' मेरी मतियाँ, सुधरे जावे पंचम गति माँ॥84॥

ॐ ह्रः धर्ममति-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सत्य सम्पदा लक्ष्मी धारो, ''सत्यवान'' मम भाव सुधारो।
तथ्य-पथ्य शुभ तत्त्व बताएँ, तुम्हे आज हम उर पधराएँ॥85॥

ॐ ह्रः सत्यवान-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''धर्म सुसंस्कृत'' पाल रहे हो, नाम यही अघ गाल रहे हो।
संस्कृत जीवन मम बन जावे, अहोरात हम महिमा गावे॥86॥

ॐ ह्रः धर्मसु-संस्कृत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

प्रहरी जैसे पहरा देते, बाधक को तुम झट तज देते।
व्रत नियमों की पहरेदारी, ''प्रहरी'' बनकर करते भारी॥ 87॥

ॐ ह्रः प्रहरी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सबके साथे आप चलत हो, सबमें रहना नहीं खलत हो।
''सहभागी''हो सुख-दुख में भी, आरति गाने आया मैं भी॥88॥

ॐ ह्रः सहभागी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सक्रियता से काम करत हो, ''क्रियाशील'' शिवमार्ग चलत हो।
मन-वच-तन की किरिया मेटूँ, निशि-वासर मैं तुमसे भेटूँ॥89॥

ॐ ह्रः क्रियाशील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कठिन प्रतिज्ञा तोड़ी ना थी, चिति चेतन से जोड़ी वा जी।
''लोहपुरुष'' हो लोहा लीना, तन से भी तो मोह न कीना॥90॥

ॐ ह्रः लोहपुरुष-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अद्‌भुत सबमें आप ''अनोखे'', इसीलिए ना खाते धोखे।
संसारी से उल्टे चलते, फिर भी सीधे आप सुलटते॥ 91॥

ॐ ह्रः अनोखे-गुण-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आडम्बर ना भाता तुमको, अच्छा लगता चारित हमको।
''गुणधारण'' क्यों फूलेंगे, भव सागर में क्यों झूलेंगे?॥92॥

ॐ ह्रः गुणधारण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अग्रों में भी अग्रेसर हो, तभी बने तुम धर्मेश्वर हो।
''अग्र'' नाम को अविरल जपते, क्यों पापों से वे फिर दबते॥93॥

ॐ ह्रः अग्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चलते-फिरते समयसार हो, वृष नौका के कर्णधार हो।
समयसार का नाम रटूँगा, रत्नत्रय में शीघ्र डटूँगा॥94॥

ॐ ह्रः समयसार-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अच्छे कामों में ही सबको, आगे करते हर के गम को।
धर्म क्षेत्र की बने ''मशालं'', विघ्न सहे सो किया कमालं॥95॥

ॐ ह्रः मशाल-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पाप बुराई दूर हटाने, जीवन के सब दोष भगाने।
मार्ग चलाने मुनिव्रत धारा, ''पुञ्ज'' प्रकाशं हमको तारा॥96॥

ॐ ह्रः प्रकाशपुञ्ज-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

प्रेम धर्म से कितना वा वा, आर-पार ना उसका वा वा।
अहो ''अगाधं'' शिव रागी हो, तुमको पा हम शिवरागी हो।।97।।

ॐ ह्रः अगाध-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

श्रेष्ठ कार्य से पीछे हटना, नहीं जानते हो तुम डरना।
आगे-आगे बढ़ते जाते, ''कर्मवीर'' गुरु आप कहाते।।98।।

ॐ ह्रः कर्मवीर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मुनिधर्मों के ''अग्रदूत'' हो, जिनवर के तुम प्रथम पूत हो।।
स्वयं जगे हो हमें जगाते, दुरमारग से आप बचाते।।99।।

ॐ ह्रः अग्रदूत -नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दोष कालिमा लगने ना दी, आतम थिरता हटने ना दी।
''कुन्दन'' बनने अहो तपस्वी, सच्चे जग में आप मनस्वी।।100।।

ॐ ह्रः कुन्दन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(ज्ञानोदय)

हे गुरुवर तव गरिमा को तो, सुरगुरु भी ना गा सकता।
जीवन भर भी रहे गावता, तो भी पार न पा सकता।।
अतिचारों को अनाचार को, नाशे हैं सो कुन्दन हो।
तव चरणों में भक्ति भाव से, शत-शत-शत-शत वन्दन हो।।

ॐ ह्रः काष्ठाम्बरादि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः
पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य - ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः। (9/27/108)

जयमाला

(दोहा)

जयमाला शिव राह के, चालक की है श्रेष्ठ।
पथ पाने गाऊँ गुरू, जग में तुम हो जेष्ठ।।

(ज्ञानोदय)

एक रही जिनधर्म मात्र में, श्रद्धा तुमरी अटल अये।
भाव सहित मुनि लिंग धरा सो, राग द्वेष भी विकल भये।।
तीन योग को वश में करने, गुप्तित्रय को धारा है।
चतुर गती के दुख मेटन को, चउ आराधन चारा है।। 2।।

इसीलिए तो क्रोधादिक जो, ठिदि बन्धन के कारण हैं।
चारों को ही मूल भगाने, रत्नत्रय ही वारण है।।
चारो बन्धन रोकन हेतू, चारों दिशि की आगी[1] को।
सहन किया था साम्य भाव से, जैनधर्म अनुरागी हो।। 3।।

दुर्गन्धित वह प्राण विनाशक, पवन जायकर नाशा में।
हलचल करके चाह रही थी, मिट जावे शिव आसा रे।।
लेकिन गुरु ने सोचा ओहो, नश्वर है यह दुर्गन्धी।
और विनश्वर घ्राण अक्ष यह, आतम से ना सम्बन्धी।। 4।।

मैं हूँ इसको देखन हारा, राग - रोष ना काम रहा।
ज्ञाता-दृष्टा बना रहूँ तो, कर्मास्रव का काम कहाँ।।
पंचम गति की तैयारी में, पंच - पाप को छोड़ा है।
पाँच महाव्रत धारण करके, सतपथ से मन जोड़ा है।। 5।।

पंच-पंच नित भावन भाकर, महाव्रतों को निर्मल कर।
पंच-समिति को पाल रहे हैं, मन-वच-तन से निर्मल बन।।
षट् कायों की रक्षा करने, छह आवश्यक धार लिए।
पाँच अक्ष अरु मन की विरती, करके भव को वार दिये।। 6।।

1. अग्नि

सात व्यसन का त्याग किया है, सातों विध संसारों को।
सप्त भयों से डरते ना है, नष्ट किया भवकारों को॥
सप्तम गुण में रहे सुशोभित, पाने अन्तिम थानक को।
कैवलपुर का राज्य पावने, बने निजातम पानक औ॥7॥

अष्टम वसुधा पाने आठों, श्रेष्ठ शुद्धियाँ पाल रहे।
अष्ट कर्म को दूर हटाने, आठ गुणों में ढाल रहे॥
अपने को जो सिद्ध-प्रभु ने, पाये हैं पुरुषार्थों से।
उनको पाने सभी भूलकर, लगे हुए शुभ अर्थों में॥8॥

नव कोटी से आरभ सारभ[1], छोड़ दिया है महाव्रती।
शील पालने नौ बाढ़ों से, वेष्टित करके शीलव्रती॥
नवधाभक्ती से भोजन भी, अनेषणा से ग्रहण करो॥
अष्ट अंग से नमता तुमको, हमरा भी भव भ्रमण हरो॥9॥

दस धर्मों की सीढ़ी चढ़ने, धर्म ध्यान दस पाकर के।
धन्य हुए हम आज यहाँ पर, तुमरी गाथा गा करके॥
और अनेकानेक गुणों के, सागर गुण की खानी हो।
क्षमता ना है कहने की सो, मौन हुई यह वाणी औ॥10॥

(घत्ता)

हे नग्न दिगम्बर, अहो निरम्बर, सब वस्त्रों को छोड़ दिये।
फिर धन क्या राखे, सुख को चाखे, निज से रिस्ते जोड़ लिये॥
हम आठ करम को, नाश करन को, सुन्दर थाल सजाते हैं।
हम भेंट करन को, आप चरण को, पाने अब ललचाते हैं॥11॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

सूरि अकम्पन सहित सात सौ, मुनियों की ये अर्चा है।
भव की नाशक शिव की शासक, जो करता नित चर्चा है॥
कर्म कटे तिस दुर्गति मिटती, सद्गति में वो जाता है।
परम्परा से मुक्ति महल में, जा बसता पा साता है॥

इत्याशीर्वाद परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

1. आरम्भ-समारम्भ

अष्टम पूजा

स्थापना

(ज्ञानोदय)

शांत चित्त हैं, समचेता हैं, संयत संयम हुलस रहे।
भाव लिंग सह द्रव्य लिंग में, निर्मल निश्छल विलस रहे॥
मूलगुणों के, उत्तर गुण के, पालक शिव के लायक का।
आह्वानन है थापन सन्निधि, करता सत्पथ नायक का॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्त शतक ऋषीश्वर समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्त शतक ऋषीश्वर समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्त शतक ऋषीश्वर समूह अत्र मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(लय- नवदेवताओं की...)

जल लाय कलशा भक्ति से मैं, धार देता चरण में।
औ जन्म अम्बुधि तैरने को, मात्र ऋषि ही शरण है॥
मैं सप्त संभर[1] साधुओं की, चाव से अर्चा करूँ।
भव बन्धनों के हेतु पंचक, पाप की चर्चा हरूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ये गन्ध चन्दन लेय आया, पूजने को देव मैं।
ये दाह भव के क्रन्दनों की, टल सके तव सेव से॥
मैं सप्त संभर.........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः संसार-ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शालि नाहीं ऊगते सो, भर लिये हैं थाल में।
ये भेंट करके अक्षतं मैं, बच सकूँ जग जाल से॥
मैं सप्त संभर.........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सौ

ये काम हारा आपसे जो, वासना तिस नाम हो।
वास नाहीं सौख्य का है, पुष्प अरपूँ आपको॥
मैं सप्त संभर[1] साधुओं की, चाव से अर्चा करूँ।
भव बन्धनों के हेतु पंचक, पाप की चर्चा हरूँ॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यः काम-बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

जो शुद्ध सर्पिष के किये है, मोदकं को मोद से।
भेंटता हूँ आप मुझको, भूख नाशक बोध दे॥
मैं सप्त संभर.........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्त शतक ऋषीश्वरेभ्यः क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये रत्न का ले दीप मणिमय, आप निकषा रख दिया।
मोहतम के नाशने जीवन समर्पित कर दिया॥
मैं सप्त संभर.........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं ले दशांगी धूप दशधा, धर्म पाने खेवता।
ये कर्म ईंधन दाहने को, आप पद बस सेवता॥
मैं सप्त संभर.........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं श्रीफलों के एलकों से, भर लिये है भाजनम्।
भेंट करता लोक के सब, सुख दुखों को टालनम्॥
मैं सप्त संभर.........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं गन्ध अक्षत धूप नैवज, जल फलों को मेलकर।
ये अर्घ कीना पूज करने, हे गुरु निश्चेलकम्॥
मैं सप्त संभर.........॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्योऽनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

प्रत्येक अर्घ

(दोहा)

आठों द्रव्य मिलाय के, एक-एक को देय।
पूजा करता आज मैं, शिव ही जिनका ध्येय॥

परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

(नरेन्द्र)

''चिंतनशीलं'' रहे विचारक ध्यान तपों में राजें।
पूजन का फल चाहे गुरुवर कर्म महारिपु भाजें॥
गुरुवर तुमको तजकर हम तो, और कहीं क्यों जावे?।
तुमसे सब कुछ मिल जाता तो, दूजे क्यों मन भावे?॥1॥

ॐ ह्रः चिंतनशील-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

महिमा है इस धरती की जो, उसके कारण मानें।
मात्र आप ही ''धराभूषणं'' कण-कण महिमा गावें॥
गुरुवर तुमको..........॥ 2॥

ॐ ह्रः धराभूषण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पूर्व ''पाप का क्षय'' करते हो, आगे का ना बांधो।
दीक्षा लेकर काम दोहरा, गुरु जी तुम ही साधो॥
गुरुवर तुमको..........॥ 3॥

ॐ ह्रः पापक्षयी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सम्यक तप से, खोटे तप के, धारी को समझाया।
''परमतखण्डी'' नाम पायकर, जैनधर्म चमकाया॥
गुरुवर तुमको..........॥ 4॥

ॐ ह्रः परमतखण्डी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

नीति निपुण हैं, नीति शास्त्र को, पढ़ सुन करके जाना।
''नयसागरजी'' नीति समझकर, धारा सच्चा बाना॥
गुरुवर तुमको..........॥ 5॥

ॐ ह्रः नयसागर-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निज आतम में, श्रुतसागर में, गोता आप लगावें।
पूज्य निमज्जक भव सागर में, गोते हम ना खावें॥
गुरुवर तुमको..........॥ 6॥

ॐ ह्रः निमज्जक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भूले-भटके भोले भाले, लोगों को शिव रास्ता।
बता नियोजित किया ''नियोजक'', छोड़ जगत से वास्ता॥
गुरुवर तुमको तजकर हम तो, और कहीं क्यों जावे?।
तुमसे सब कुछ मिल जाता तो, दूजे क्यों मन भावे?॥7॥

ॐ ह्रः नियोजक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कष्ट सहे सो जनप्रिय ऐसे, बने तभी सब पूजें।
रक्षाबन्धन पर्व मानकर, ''भूवल्लभ'' में रीझें॥
गुरुवर तुमको..........॥ 8॥

ॐ ह्रः भूवल्लभ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अधो - वस्त्र ना रेशम सूती, ऊँचे नीचे छोड़े।
नये पुराने की क्या बातें, ''निर्वसनी'' भव तोड़े॥
गुरुवर तुमको..........॥ 9॥

ॐ ह्रः निर्वसनी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ढीले - ढाले चुस्त - चीर ना, आप देह पर धारो।
अहो ''अचेलं'' कुछ ही पल में, आप शिवालय चालो॥
गुरुवर तुमको..........॥ 10॥

ॐ ह्रः अचेल-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वस्त्रहीन हो कच्छ लंगोटी, छोड़ ब्रह्म है प्यारा।
नाम ''अकच्छं'' पूजा करते, हो जावे भव न्यारा॥
गुरुवर तुमको..........॥ 11॥

ॐ ह्रः अकच्छ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उद्धारक हो तारन ''संकट-हर्ता'' कष्ट मिटाए।
संकट मोचक भक्ती करने, भक्त तिहारे आए॥
गुरुवर तुमको..........॥ 12॥

ॐ ह्रः संकटहर्ता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उच्च - उच्चतम ''सर्वोच्चस्थं'', अनन्त आप चरित्ता।
पूजन का फल पाऊँ मेरा, बने तुमी समचित्ता॥
गुरुवर तुमको..........॥ 13॥

ॐ ह्रः सर्वोच्चस्थ-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''शुचिकर्ता'' का सत्यशील है, सत्कर्मी सन्मार्गी।
तीन-लोक में बना मात्र मैं,आप चरण का रागी॥
गुरुवर तुमको तजकर हम तो, और कहीं क्यों जावें ?।
तुमसे सब कुछ मिल जाता तो, दूजे क्यों मन भावें ?॥ 14॥

ॐ ह्रः शुचिकर्ता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अधिनायक हो जगपति माने, धर्म परायण पूजें।
''गुण-गण'' मालिक शरणा ले ले, क्यों जग में वो धूजें॥
गुरुवर तुमको..........॥ 15॥

ॐ ह्रः गुण-गण-मालिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सौ इन्द्रों से उनकी परजा, से पूजित तव पादम्।
''पूज्यपाद'' की पूजा हमरे, समकित की है खादम्॥
गुरुवर तुमको..........॥ 16॥

ॐ ह्रः पूज्यपाद-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

संयम धन को, रत्नत्रय को, चौरे ना आ क्लेशम्।
पहरेदारी करते ''पहरे - दारं'' हो जिनवेषम्॥
गुरुवर तुमको..........॥ 17॥

ॐ ह्रः पहरेदार-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गाँव घरों से परिजन पुरजन, तुमको नाहीं बाँधे।
बँधे नहीं हो उनसे सो, ''उन्मुक्त'' कार्य को साधे॥
गुरुवर तुमको..........॥ 18॥

ॐ ह्रः उन्मुक्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

यशकीर्ति वा कितनी फैली, वो तो सीमा लाँघी।
आप ''यशस्वी'' दरश पाय हम, बने सभी बड़भागी॥
गुरुवर तुमको..........॥ 19॥

ॐ ह्रः यशस्वी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

द्रव्य मना हो ''हृदय-विशाली'', महामना मन भावो।
भव्यों कर ले इनकी पूजा, तो भव दुख क्यों पावो॥
गुरुवर तुमको..........॥ 20॥

ॐ ह्रः विशालहृदया-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ऐसा बोलें सुनकर जिनको, बेहोशी भग जावे।
भाव ''वचस्वी चतुर दक्ष'' हो, सुरनर किन्नर ध्यावे॥
गुरुवर तुमको तजकर हम तो, और कहीं क्यों जावें?।
तुमसे सब कुछ मिल जाता तो, दूजे क्यों मन भावें?॥ 21॥

ॐ ह्रः दक्ष-वाच-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(लय-सोलहकारण.....)

सूक्ष्म सूक्ष्मतर प्रज्ञा पाय, ''कुशाग्रबुद्धि'' हो मेरे साँय।
तपोनिधि तोय, अर्चा करता मद को खोय-तपोनिधि तोय॥
उपसर्गों को जीत सुभाय, रक्षाबन्धन पर्व कहाय॥ 22॥

ॐ ह्रः कुशाग्रबुद्धि-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भेष जिनेश्वर जैसा पाय, ''प्रतिमूर्ति'' तव नाम कहाय।
तपो निधि तोय.........॥ 23॥

ॐ ह्रः प्रतिमूर्ति-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तप पालन में आगे आय, अहो ''अग्रणी'' नाम सुहाय।
तपो निधि तोय.........॥ 24॥

ॐ ह्रः अग्रणी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सुधर गये हैं धर्म समाज, ''सुधारकं'' पर हमको नाज।
तपो निधि तोय.........॥ 25॥

ॐ ह्रः सुधारक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

किया समर्पण वृष के काज, नाम ''समर्पित'' अँर्चू आज।
तपो निधि तोय.........॥ 26॥

ॐ ह्रः समर्पित-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आत्म उपासन करते नित्य, नाम ''उपासक'' अघ से रित्य।
तपो निधि तोय.........॥ 27॥

ॐ ह्रः उपासक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

बाधाओं में साहस धार, अहो ''साहसी'' वृष आधार।
तपो निधि तोय.........॥ 28॥

ॐ ह्रः साहसी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अचरज कारी गुण गम्भीर, ''दिव्यगुणी'' हो हर लो पीर।
तपोनिधि तोय, अर्चा करता मद को खोय तपोनिधि तोय॥
उपसर्गों को जीत सुभाय, रक्षाबन्धन पर्व कहाय॥ 29॥

ॐ ह्रः दिव्यगुणी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

समता रस को झरता देख, ''सौम्यमूर्ति'' भी दे शर टेक।
तपो निधि तोय.........॥ 30॥

ॐ ह्रः सौम्यमूर्ति-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मोक्षमार्ग के प्रेरक-सूत्र, करे ''प्रेरणा'' जिनवर पूत्र।
तपो निधि तोय.........॥ 31॥

ॐ ह्रः प्रेरणासूत्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''सिंहवृत्ति'' के धारी आप, सिंह समा ना क्रूर स्वभाव।
तपो निधि तोय.........॥ 32॥

ॐ ह्रः सिंहवृत्ति-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''सरस्वती के पुत्र'' सपूत, तुम हो तीर्थंकर के दूत।
तपो निधि तोय.........॥ 33॥

ॐ ह्रः सरस्वती पुत्र-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

देश धर्म का वैभव आप, ''महाविभूती'' मेटो पाप।
तपो निधि तोय.........॥ 34॥

ॐ ह्रः महाविभूति-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

निश्छल गुरुवर ''सरल-स्वभाव'', कर्कश ना हो मेरा भाव।
तपो निधि तोय.........॥ 35॥

ॐ ह्रः सरलस्वभावी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

साध्य बनाकर मुक्ति प्रसाद, देय ''साधनारत'' ही पाथ।
तपो निधि तोय.........॥ 36॥

ॐ ह्रः साधनारत-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''ध्रुव-तारे'' सम तव इतिहास, बना रहे मम युग-युग साद।
तपो निधि तोय.........॥ 37॥

ॐ ह्रः ध्रुवतारा-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शुद्धातम को पाने हेत, ''करी-क्रान्ति'' है निज में चेत।
तपो निधि तोय, अर्चा करता मद को खोय तपोनिधि तोय॥
उपसर्गों को जीत सुभाय, रक्षाबन्धन पर्व कहाय॥38॥

ॐ ह्रः क्रान्तिकारी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रहे अमोलक मूल्य न होय, ''बहुमूल्यं'' मैं पूजूँ तोय।
तपो निधि तोय.........॥ 39॥

ॐ ह्रः बहुमूल्य-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चतुर कुशल हो सबमें आप, ''निपुण'' नाम का ना है माप।
तपो निधि तोय.........॥ 40॥

ॐ ह्रः निपुण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मौन भाव से गुरु की सेव, ''मूकसेवि'' की बस यह टेव।
तपो निधि तोय.........॥ 41॥

ॐ ह्रः मूकसेवी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आत्म सिद्धि को पाने रोज, श्रेय करन का तुममें ''ओज''।
तपो निधि तोय.........॥ 42॥

ॐ ह्रः ओजस्वी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

शिवपथ के ''उद्योतक'' धीर, पूज पहन लूँ व्रत का चीर।
तपो निधि तोय.........॥ 43॥

ॐ ह्रः उद्योतक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अनेकान्त का कथन सुहाय, धर्म ''प्रवक्ता'' पूजूँ पाय।
तपो निधि तोय.........॥ 44॥

ॐ ह्रः प्रवक्ता-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पाप गलाते सो गुरु आप, सच्चे ''पागल'' करते माफ।
तपो निधि तोय.........॥ 45॥

ॐ ह्रः पागल-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

क्लेश मोह मद मान विदार, बने ''विदारक'' तुम ही सार।
तपो निधि तोय.........॥ 46॥

ॐ ह्रः विदारक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

नित्य पढ़ाते धर्म सुसत्य, ''पाठक'' तुम ही मेरे पथ्य।
तपो निधि तोय, अर्चा करता मद को खोय तपोनिधि तोय॥
उपसर्गों को जीत सुभाय, रक्षाबन्धन पर्व कहाय॥ 47॥

ॐ ह्रः पाठक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(विष्णुपद)

(लय-कहाँ गये चक्री)

उपवासों से अन्तराय से, क्षुधा व्यथा होवे।
बिन पड़गाहे गृहि के घर पे, ना भोजन जोवे॥
''भूख परीषह'' जेता तुमरे, चरणा नित ध्यावें।
विधि बन्धन से छूटे भव में, लौट नहीं आवे॥ 48॥

ॐ ह्रः क्षुधा-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ग्रीष्म काल में पानी के बिन, होय तृषा बाधा।
श्रुतमय जल को पीकर गुरु जी, शिव कारज साधा॥
''प्यास परीषह'' जेता मेरा, तृषा दुःख रोको।
असंख्यात गुण कर्म निर्जरा, करके विधि शोखो॥ 49॥

ॐ ह्रः पिपासा-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हेमंत काल में शीत पात से, रोम रोम काँपे।
मेरे गुरु जी सहन करे सब, तनिक नहीं हाँपे॥
उष्ण वस्तु की इच्छा तज के, ठंडी को जीते।
ध्यान अग्नि से कर्म शत्रु तो, होते हैं रीते॥ 50॥

ॐ ह्रः शीत-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

लू - लपटों से निर्वस्त्री को, आती है पीड़ा।
चेतन के निज गर्भालय में, करते हैं क्रीड़ा॥
''उष्ण-परीषह जेता'' को तो, शीतलता लागे।
पूज्य आपके कर्म यूथ ये, कश्मल[1] हो भागे॥ 51॥

ॐ ह्रः उष्ण-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. उत्साहहीन

चींटी कीड़े मत्कुण मक्खी, चिपके आ काटें।
पागल कुत्ते बिल्ली आदिक, आकर तन चाटें॥
खून झरन से देह छिद्र से, लोहित हो जावे॥
दंशमसक का संकट जीते, गुण आतम गावे॥52॥

ॐ ह्रः दंशमसक-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

नग्न रहे है कोपिन से भी, वपुषा ना ढाँके।
कामवासना ब्रह्मचर्य का, पालन कर हाँके॥
वस्त्रहीन है मन विकार भी, इनने मेटे हैं।
निर्विकार है बालक सम गुरु, शिव से भेटेंगे॥53॥

ॐ ह्रः नाग्न्य-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ग्लानिप्रद उन दुर्गन्धों से, मानस घबरावे।
माँस अस्थि में पुद्गलपन ही, मन को दिखलावे॥
अरति जीत के रति भावों से, चित्त हटाते हैं।
''सप्तम परिषह विजयी'' से हम, नेह बढ़ाते हैं॥54॥

ॐ ह्रः अरति-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तिलोत्तमा सी सुन्दर नारी, नीरे आती है।
उसे देख ना गुरु की मनसा, उसमें जाती है॥
वनिता से ना डिग सकते हैं, नाहीं डीगे औ।
सिद्ध-नगर की कन्या में ही, तुम तो रीझे हो॥55॥

ॐ ह्रः स्त्री-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पादत्राण बिन भू पर चलते, चमड़ी घिसती है।
माँस निकलता खून टपकता,तलियाँ जलती है॥
चर्या के सब विघ्नों को वा, जीते ऋषिराजा।
मुनिचर्या है निर्दोषी सो, बने सिद्ध काजा॥56॥

ॐ ह्रः चर्या-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वीरासन उत्कुटिकासन से, आप अकेले ही।
भीम भयंकर जंगल में जा, निश्चल बैठे जी॥
रही निषद्या परिषह इसको, आप बुलाते हैं।
बिच्छू कीड़े काटे तो ना, पैर हिलाते हैं॥ 56॥

ॐ ह्रः निषद्या-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ऊबड़ खाबड़ ऊँची-नीची, भूमी पर सोते।
कंकड़ तिनके चुभते तन में, आपा ना खोते॥
थोड़ी सी बस निद्रा लेते, विभावरी में ये॥
शय्या परिषह को गुरु माने,सुखावली है ये॥57॥

ॐ ह्रः शय्या-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

हृदय विदारक शूल समा तुम, कठोर वचनों को।
चूल पावने लोक शिखर का, नाहीं सुनते औ॥
तुमरा मन आक्रोश शब्द को, जड़ ही माने जी।
भाव शुद्धता यही आपकी, भव को हानेगी॥58॥

ॐ ह्रः आक्रोश-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमःअर्घ्यं......।

तलवारों से चाबुक चाकू, से यदि मारत है।
तन को मारे मुझको तो ये, नाहीं लागत है॥
वध जीते ये कर्म शत्रु को, वध कर देते हैं।
महातपस्वी तुमको गणधर, मुनिगण सेते हैं॥59॥

ॐ ह्रः वध-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

भूख लगे या रोग लगे तो, भैषज ना माँगे।
अशन वसतिका आदिक के गुरु, पीछे ना भागे॥
जीत याचना आप अयाचक, धन्य भाग पाये।
महिमा सुनकर हम तो सगरे, कारज तज आये॥60॥

ॐ ह्रः याञ्चा-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उग्र - उग्रतर तप करते पर, भोजन ना देवे।
कोई प्रतिग्रह करता नाहीं, आकर के सेवे॥
अलाभ में भी लाभ समा ही, सन्तोषी भावे।
उदारता को देख अरचने, महापुरुष आवे॥61॥

ॐ ह्रः अलाभ-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कुष्ठ भगंदर आदि रोग को, नाहीं बतलावें।
सहते रहते वदन विकलता, भी ना जतलावें॥
आतम में जो जनम मरण के, रोग लगे भारी।
उन्हें मिटाने मुनिमुद्रा को,खुशियों से धारी॥62॥

ॐ ह्रः रोग-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

तृण कंटक भी घास फूस जब, पग में चुभते हैं।
नयनों में भी आकर गिरते, नाहिं मचलते हैं॥
तृण स्पर्शों का परिषह मुनि को, क्यों चुभता होगा ?।
इनके चरणों कौन वन्दना, करता ना होगा? ॥ 63 ॥

ॐ ह्रः तृणस्पर्श-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

वपू आपका मल पटलों से, पूरा ढक जाता।
कर्म पटों से ज्ञान पिधानित[1], मुझको ना भाता॥
मल परिषह पर विजय पावने, कमर कसी तुमने।
तुम सम ही अब बनने गुरुवर, ठानी है हमने ॥ 64 ॥

ॐ ह्रः मल-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आगे रखते करे प्रशंसा, विनय करे सारे।
अंहकार से रहित हुए सो, सहसों गुण धारे॥
सत्कारों का पुरस्कार का, परिषह जीता है।
इसीलिए तो तुम्हें देख हम, भव से भीता है ॥ 65 ॥

ॐ ह्रः सत्कार-पुरस्कार-परिषह जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

एक बार में सुना पढ़ा जो, याद रहे जीवन।
भूले नाहीं बढ़ता जावे, ज्ञानामृत पावन॥
प्रज्ञा-परिषह प्रज्ञ जनों को, नमते रहते हैं।
अभिमानों को छोड़ ज्ञान को,गहते भजते हैं ॥66 ॥

ॐ ह्रः प्रज्ञा-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

रट - रट कर थक जाते हैं पर, याद नहीं होवे।
हताश ना हो उदास ना हो, ना समता खोवे॥
अज्ञानों का रहा परीषह, ज्ञानी भी तजते॥
ज्ञान स्वरूपी निज को ही वे, दिवस रात भजते ॥ 67 ॥

ॐ ह्रः अज्ञान-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

करी तपस्या ऐसी जिसको, देखे अचरज है।
चाहे अतिशय प्रकट नहीं हो, मैं तो सतपथ में॥
चलता हूँ फिर इससे मुझको, मतलब क्या होगा?।
मैंने ही जो किया कर्म था, उसको अब भोगा ॥68 ॥

ॐ ह्रः अदर्शन-परिषह-जेता श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. ढँका

देह सूखकर कंकालों सा, होवे नियमों त्यागों से।
ऐसे दुष्कर तप तपते है, ''महाकृच्छकं'' रागों से॥
अहो अकम्पन सूरीश्वर जी, तुमरे ऐसे शिष्य भये।
तुम जैसा ही साम्य धारकर, नाम दिपाया दिव्य अये ॥ 69 ॥

ॐ ह्रः महाकृच्छक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पहनावा ना अंग वस्त्र ना, पगड़ी चादर ओढ़त हो।
होय ''अग्रंथिक'' नग्न विचारक, शिव के द्वारे खोलत हो॥
अहो अकम्पन........ ॥ 70 ॥

ॐ ह्रः अग्रंथिक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सुन्दर सोहन धोती कुरता, परिधानों को छोड़ दिये।
आप ''अवेशी'' वेश दिगम्बर, वस्त्र निबन्धन तोड़ दिये॥
अहो अकम्पन........ ॥ 71 ॥

ॐ ह्रः अवेशी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

''निरभूषण'' को स्वर्ण रजत के, मणिभूषण ना चित भावे।
नीलम माणिक हीरा पन्ना, के भूषण ना मन भावे॥
अहो अकम्पन........ ॥ 72 ॥

ॐ ह्रः निराभूषण-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पोशाकों की सज्जा तजकर, वेश विशिष्टं धारा वा।
''वसनहीन'' बन महाव्रतों की, भूषा से शृंगारा वा॥
अहो अकम्पन........ ॥ 73 ॥

ॐ ह्रः वसनहीन-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

गादी-तकिया शाल - दुशाला, नहीं बिछावे ना ओढ़े।
''नाच्छादक'' जी अन्दर के भी, आच्छादन को झट छोड़े॥
अहो अकम्पन........ ॥ 74 ॥

ॐ ह्रः अनाच्छादक-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दन्द-फन्द से रहित फ्रिक से, रहित आप बेफ्रिकी हो॥
''मनमौजी'' बेपरवाही को, देख आवते चक्री औ॥
अहो अकम्पन........ ॥ 75 ॥

ॐ ह्रः मनमौजी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

उत्साही हो ओजपूर्ण हो, कर्म शील हो तेजस्वी।
फुर्तीले हो ऊर्जा धारक, नाम रहा है ''ऊर्जस्वी''॥
अहो अकम्पन सूरीश्वर जी, तुमरे ऐसे शिष्य भये।
तुम जैसा ही साम्य धारकर, नाम दिपाया दिव्य अये॥ 76॥

ॐ ह्रः ऊर्जस्वी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

चौकन्ने हो चोकस रहते, कषाय रिपु में तन्द्रा ना।
''दत्तचित्त'' हो सावधान रह, करते निज की रक्षा वा॥
अहो अकम्पन........॥ 77॥

ॐ ह्रः दत्तचित्त-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमःअर्घ्यं......।

गुहा कन्दरा गिरि पर्वत पर, तन ममता तज रहते हैं।
गुहा निवासी पूज्य मुनीश्वर, भय खाते ना डरते हैं॥
अहो अकम्पन........॥ 78॥

ॐ ह्रः गुहानिवासी-नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

(लय-जहाँ डाल डाल पर.....)

खाद्य स्वाद्य अरु लेय पेय को, छोड़त है पर साते।
भोजन करते फिर भी अनशन, करते ही मन भाते॥
हम पूजन आज रचाते॥
पूज्य अकम्पन इत्यादिक के, गीत गान मन भाते।
हम पूजन आज रचाते॥ 79॥

ॐ ह्रः अनशन-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

एक ग्रास कम लेते केवल, एक ग्रास ही खाते।
रहे उनोदर तप के स्वामी, तुम ही शिवपथ जाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 80॥

ॐ ह्रः अवमौदर्य-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

योग धरो तुम नेक अनोखे, जब नाहीं मिल पाते।
परिसंख्यानं वृत्ति धारकर, तप के ही गुण गाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 81॥

ॐ ह्रः वृत्तिपरिसंख्यान-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

एक दोय या तीन चार रस, षट् रस को ना चाते[1]।
रस परित्यागी तुमरी पूजा, करते हैं सुखराते॥
हम पूजन आज रचाते॥
पूज्य अकम्पन इत्यादिक के, गीत गान मन भाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 82॥

ॐ ह्रः रस-परित्याग-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

एकान्तों में आसन माँडे, नाहीं कभी अघाते।
विविक्त शय्या आसन तप में, तुम तो चित्त रमाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 83॥

ॐ ह्रः विविक्त-शय्यासन-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

काया को जो क्लेशित करते, दुर्द्धर तप रचवाते।
कायक्लेश तप कर्म विनाशक, हम भी चरणा आते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 84॥

ॐ ह्रः कायक्लेश-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

प्राश्चित करके दोषों का तुम, पूरव पाप नशाते।
अन्तरंग है तप यह पहला, हम भी इसको भाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 85॥

ॐ ह्रः प्रायश्चित-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

ज्ञान दर्श में, चरित तपों में, अपना शीश झुकाते।
विनय करें सो आप तपोधर, सर्व ऋद्धियाँ पाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 86॥

ॐ ह्रः विनय-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

सेवा करते रुग्ण वृद्ध की, जो रहते निजराते।
वैय्यावृत को करने वाले, ना भव में भरमाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 87॥

ॐ ह्रः वैय्यावृत्य-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

करे वाचना प्रश्न पूछना, शुद्ध घोष करवाते।
करते वृष उपदेश चतुर तप, करके ज्ञान बढ़ाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 88॥

ॐ ह्रः स्वाध्याय-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

1. चाहते

उपधि तजे ये छोड़ उपाधी, सबही त्याग सुहाते।
व्युत्सर्ग तप धार लिया सो, सुन-नर नियरे आते॥
हम पूजन आज रचाते॥
पूज्य अकम्पन इत्यादिक के, गीत गान मन भाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 89॥

ॐ ह्रः व्युत्सर्ग-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

दत्त चित्त एकान्त थान में, सबसे चित्त हटाते।
ध्यान किया चित चेतन का जो, पूरण कर्म मिटाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 90॥

ॐ ह्रः ध्यान-तप-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

मारक-तारक दुर्जन में भी, माफी भाव धराते।
उत्तम प्यारे क्षमा धर्म से, तुम तो कोप जलाते॥
हम पूजन आज रचाते॥ 91॥

ॐ ह्रः उत्तम-क्षमा-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

नम्र भाव से नमित बने हो, ना होते मदमाते।
मार्दव धर्मी हम तो तुमरे, नाच-नाच पद आते॥
हम पूजन आज रचाते॥92॥

ॐ ह्रः उत्तम-मार्दव-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

आर्जवता से पूर्ण भरे हो, आर्जव को उर लाते।
तीजे वृष को धार जगत को,ऋजुता गुण बतलाते॥
हम पूजन आज रचाते॥93॥

ॐ ह्रः उत्तम-आर्जव-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

लोभ छोड़कर शुचिता पाने, शौच धर्म को ध्याते।
परितोषी बन जाने तुमको, हृदय कमल पधराते॥
हम पूजन आज रचाते॥94॥

ॐ ह्रः उत्तम-शौच-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

झूठा-साँचा अनृत मारग, नाहीं तुम बतलाते।
सत्यधर्म के आप उपासक, द्वितीय पाप को घाते॥
हम पूजन आज रचाते॥95॥

ॐ ह्रः उत्तम-सत्य-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्त-शतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अक्ष विजेता षट् कायों की, रक्षा कर करवाते।
उत्तम संयम धारा है सो, मुक्ति रमा को पाते॥
हम पूजन आज रचाते॥
पूज्य अकम्पन इत्यादिक के, गीत गान मन भाते॥
हम पूजन आज रचाते॥96॥

ॐ ह्रः उत्तम-संयम-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

कर्म निर्जरा लक्ष्य बनाकर, तप ही में मन लाते।
उत्तम तप को धारण करके, कर्म सौध[1] को ढाते॥
हम पूजन आज रचाते॥97॥

ॐ ह्रः उत्तम-तप-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

अभयदान दे राग आग से, बचते और बचाते।
त्याग धर्म यह उत्तम तुमरा, तृष्णा भाव सताते॥
हम पूजन आज रचाते॥98॥

ॐ ह्रः उत्तम-त्याग-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

किंचित ना है मेरा कोई, सबमें अहं मिटाते।
आकिंचन में मन पागा है, महिमा गाने आते॥
हम पूजन आज रचाते॥99॥

ॐ ह्रः उत्तम-आकिंचन-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

परम ब्रह्म में आत्म रूप में, लीन रहे रम जाते।
ब्रह्मचर्य को पालन करके, काम व्यथा विसराते॥
हम पूजन आज रचाते॥100॥

ॐ ह्रः उत्तम-ब्रह्मचर्य-धर्म-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं......।

पूर्णार्घ

(ज्ञानोदय)

आप पूज का क्या फल होगा, इसको कौन बतावेगा।
शब्दों से ना कह पावे ना, अन्दाजी कर पावेगा॥
अद्भुत अनुपम फल है इसका, शक्री चक्री बन करके।
शिव पाता है भव्य शीघ्र ही, कर्म कालिमा हर-हरके[1]॥

ॐ ह्रः चिंतनशील आदि -नाम-धारक श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः। (9,27,108)

जयमाला

(दोहा)

अन्तिम यह जयमाल है, गुरु महिमा की इष्ट।
गाता हूँ उल्लास से, जीवन होवे शिष्ट॥1॥

(पद्धरि)

तुम मिथ्या दर्शन ज्ञान छोड़, औ मिथ्या चारित राह तोड़।
है रत्नत्रय को लिया धार, सो बलि राजा भी गया हार॥ 2॥

गुरु तुमने ममता भाव जीत, सो कर्म शत्रु भी होय रीत।
हम काम-धाम सब छोड़ आज, हम आये तुमरे चरण पास॥3॥

मम मति का कर दो अब सुधार, है तुम बिन कोई नहीं चार।
तुम शिव ललना ही रही ध्येय, है भव तजना ही रहा प्रेय॥4॥

सो मात-पिता सुत महल त्याग, तुम कीना प्रभु के चरण राग।
ये सुर नर किन्नर आय-आय, तव थुति करते हैं गाय-गाय॥5॥

फिर नाच-नाच कर देय ताल, पद धरते अपना नाय भाल।
ना रुकते थकते अहो-रात, बस रहना चाहे आप साथ॥6॥

पर जाते घर पे बिना इच्छ, उर धारण करते मार्ग सच्च।
वे फिर-फिर आते आप पास, वे बनते तुमरे भक्त खास॥7॥

1. महल

है कारण उसका मात्र एक, है कार्य आपके सभी नेक।
सब दोष टाल व्रत पाल आप, ना चोरी हिंसा सभी पाप॥8॥

ना झूठ रहा ना कुशिल सेव, ना रहा परिग्रह संग टेव।
ना रहा आपमें क्रोध मान, है तुमको अपना पूर्ण भान॥9॥

नहिं बचा लोभ ना रही माय, ना नौकर चाकर रही धाय।
हो धर्मी वृष में रहा नेह, साधर्मी तुमसे करे स्नेह॥10॥

मैं पूरी करता श्रेष्ठ माल, सो आवे मेरा यदा काल।
मैं सावधान तव जपूँ नाम, जिससे सध जावे सर्व काम॥11॥

बस विनती करता यही आज, है अन्तिम मेरा यही काज।
मम दुख का क्षय हो कर्म नाश, मम जिनगुण सम्पत्ति होय पास॥12॥

(घत्ता)

हे गुण की राशी, निज के वासी, आस लिये हम आये हैं।
सब बन्धन टूटे, अघतम रूठे, गुण गण हमने गाये हैं॥
शुभ अर्घ लिया है, भेंट किया है, भाव भक्ति से आज यहाँ।
है तुमरे चरणा, भव के हरणा, मिल पाते हैं किसे कहाँ॥13॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्तशतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

(ज्ञानोदय)

सूरि अकम्पन सहित सात सौ, मुनियों की ये अर्चा है।
भव की नाशक शिव की शासक, जो करता नित चर्चा है॥
कर्म कटे तिस दुर्गति मिटती, सद्गति में वो जाता है।
परम्परा से मुक्ति महल में, जा बसता पा साता है॥

इत्याशीर्वाद परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

समुच्चय जयमाला

अहो समुच्चय माल ये, मूल नाशती कर्म।
पढ़ सुनकर हम पा सके, भव तज शिव के शर्म॥1॥

1. निर्जरित करके

उज्जैनी में सात शतक गुरु, जिनमेंऽकम्पन सूरीश्वर।
आय विराजे मौन किया था, निमित्त जानते थे धीश्वर॥
किन्तु गये थे श्रुतसागर मुनि, चर्या पर सो जाने ना।
बली नमुचि प्रह्लाद बृहस्पति, मंत्री नृप सह आये हा॥2॥

मौन देखकर निंदा कीनी, लेकिन नृपवर ने रोका।
तथा मार्ग में श्रुत-मुनि को लख, हँसने से भी था टोका॥
लेकिन उनने वाद छेड़कर, पाप पराजय परिभव पा।
अर्ध निशा में दुख देने का, निश्चय कर तँह आय हहा॥3॥

उधर सुनो उन श्रुत मुनिवर ने, पूरी बातें बालक सम।
बता सूरि की आज्ञा पालन, करने आकर उसही थल॥
विभावरी में ध्यान लगाया, अचल मेरु की थिरता से।
सब ऋषियों की रक्षा होवे, और होय वृष थिरता रे॥ 4॥

चारों मंत्री बदला लेने, सब मुनियों को दुख देने।
जाते थे पर देख राह में, श्रुत तपसी का वध करने॥
लगे चलाने तलवारे जब, नगरी रक्षक देवों ने।
कील दिये थे चतु मंत्री तन, थिर कीने दुखसेवों के॥ 5॥

प्रातः मुनि के आदेशों से, छोड़ दिये अघकारी को।
मिष्ठ खीर पी बनता ना क्या, सर्प कहो विषधारी औ ?॥
अपमानित हो देश निकाला, पाकर के वे हथनापुर।
पहुँच चतुरता देख पद्म ने, वर दीना था हो आतुर॥ 6॥

एक बार लख उसही संघ को, हथनापुर के निकट कहीं।
पोल खोल दे मुनिवर यदि तो, यहाँ पड़ेंगी मार सही॥
यही सोचकर वर में मांगा, सात दिनों तक राज्य अरे।
और किया उपसर्ग भयानक, दुर्गति दायक काम अरे॥ 7॥

सात दिनों तक दुःख चला तब, ऋषिवर की वा समता से।
मिथिला नगरी के बाहर ही, गिरि पर मुनिसंघ रमता रे॥
उनमें से गुरु सारचन्द्र की, इक दम दृष्टी नभतल में।
पहुँची देखा श्रवण काँपता, विकल्प उपजा था मन में॥ 8॥

चिन्ता उपजी भारी उनने, निमित्त लगाकर देख लिया।
लगा सुनिश्चित कहीं साधु को, उपसर्गों ने घेर लिया॥
फिर देखा था सात शतक मुनि, हथनापुर में राजित जो।
बलि मंत्री ने सात दिनों का, राज-काज कर याचित हो॥ 9॥

राज्य लिया नृप पद्मराज से, और करी है मनमानी।
घेर लिया है सभी साधु को, हा हा बनकर अभिमानी॥
चारों दिशि में हाड़ मांस को, रुधिर भरे कंकालों को।
बदबू वाले सड़े गले अघ, जले शवों दुश्चालों को॥ 10॥

डाल लगाई आग भयंकर, वायु विषैली जो निकली।
उसके कारण सब मुनियों के, तन की हालत है बिगड़ी॥
आदि-आदि सब जान 'हाय' पद, निकला उनके वचनों से।
क्षुल्लक जी श्री पुष्पदन्त जो, बैठे थे गुरु चरणों में॥11॥

चकित हुए सुन रात्रि काल में, ऋषिवर नाहीं बोलत है।
क्यों निकली फिर दुःखभरी यह, वाणी अचरज घोलत है॥
विनय युक्त हो हाथ जोड़कर, गये सामने गुरुवर के।
प्रणाम करके मन की शंका, रक्खी गुरु के चरणन में॥12॥

सूरीश्वर जी धीरे से यूँ, बोले महत् उपसर्ग हहा।
होय रहा है हथनापुर में, टला नहीं यदि आज वहाँ॥
पूज्य अकम्पन सूरि सहित शत, सात मुनीश्वर प्राणों को।
तज देगें तन छोड़ेंगे ना, सह पाये दुख बाणों को॥ 13॥

ऐसा कहते-कहते उनकी, आँखों से जल धारा ही।
करुणा वत्सल धर्मी जन में, जो उपजी सुखसारा जी॥

पुष्पदन्त ने आकुल होकर, पूछा कुछ तरकीब कहो।
आप सभी कुछ जानत हे गुरु, मुझको ऐसी सीख दओ॥ 14॥

जिससे जल्दी दुख मिट जावे, मुनियों की संरक्षा हो।
धर्मात्मा के क्लेश मिटे तो, सत्य धर्म की रक्षा हो॥
आर्य कहे हे वत्स सुनो उस, धरणीधर पर विष्णुमुनी।
ध्यान योग से पायी उनने, महा ऋद्धियाँ पापहनी॥15॥

वे कर सकते दूर विघ्न यदि, देय सूचना जाय अये।
सुनते ही झट क्षुल्लक जी तो, विद्या बल से पहुँच गये॥
नमस्कार कर बोले मुनिवर, ध्यानों को अब पूर विभु।
ऋद्धि भयी सो अनुकम्पा कर, दूर करो उपसर्ग विभु॥16॥

सुनते ही श्री विष्णु सिन्धु ने, निष्ठापन कर ध्यानों का।
करी परीक्षा ऋद्धी बल की, हाथ बढ़ाकर अपना वा॥
विश्वासी बन हुए रवाना, हथनापुर के महलों में।
पहुँच समझ सब बात बली के, पास गये वे पलकों में॥17॥

बावन अंगुल रूप बनाकर, बोले आशिष देय अये।
तीन पाद बस धरती दे दे, यदि चाहे तू देवन रे॥
लगा ठहाका बोला बलि नृप, ओ रे वामन क्या मस्तक।
भ्रमित हुआ है पागल हो क्या, जो देकर भी आ दस्तक॥18॥

मात्र माँगता तीन पाद है, क्या होगा रे इतने से।
एक झोपड़ी बन ना पावे, रह पावे तह कितने रे॥
ऋषि बोले रे इससे तुमको, क्या मतलब मैं कितना ही।
माँग रहा हूँ जितना उतना, देना तेरा काम सही॥19॥

और सुनो मैं अपने ही इन, छोटे-छोटे पादों से।
नाप गहूँगा देना हो तो, दे दे ना तो जाता ये॥
जाने की सुन बलि ने जल्दी, स्वीकृति दे दी लेने की।
विष्णू ने झट प्रथम पाद से, नाप सुदर्शन चोटी जी॥20॥

दूजा रक्खा मनुजोत्तर पर, द्वीप अढ़ाई नाप लिया।
तीजा रखने जगह बची ना, तो प्रज्ञा से काम लिया॥
पूछा बलि से तो बलि बोला, रख दे मेरी पीठों पर।
बावन अंगुल देही ने जब, पाव रखा तिस पीठन पर॥21॥

बलि राजा तो धँसा भूमि में, त्राही त्राही चिल्लाया।
क्षमा याचना करी तभी तो, विष्णु गुरू से बच पाया॥
तत्क्षण सबही श्रावक जन ने, बाड़ हटाई मुनियों की।
धूप अगर तुहिनांशु आदि की, धूनी दीनी गुणियों की[1]॥22॥

अग्नि शिखा पर घृत डाला था, दीप पंक्तियाँ बनवाईं।
जिससे वातावरणों में वा, प्राणवायु बन हरषाई॥
समीर में अति दुर्गन्धित जो, प्राण प्रहारक वायू थी।
दूर हटे अब रक्षा होवे, बची हुई मुनि आयू की॥ 23॥

और श्राविका गण ने निज-निज, घर में खीर सिवय्यों की।
बना द्वार पर चौक पूर कर, अगवानी की यतियों की॥
पड़गाहन कर नवधा भक्ती, से दीनी थी खीर अहो।
श्वास तंत्र जो रुद्ध हुए वो, सिके मिटे तिन पीर अहो॥ 24॥

जिनके घर ना हुआ प्रतिग्रह, उनने चित्रों में थापन।
करके कीनी पूजन अर्चन, भाव बनाकर शुभ पावन॥
तथा सभी ने साधर्मी में, वत्सल के त्रय धागे ले॥
मन वच तन की निर्मलता से, इक दूजे को बाँधे थे॥ 25॥

हुआ तभी से रक्षा बंधन, पर्व सभी को भाया था।
उसही की बस याद गिरी में, हमने पूज रचाया वा॥
विवेक सिन्धु की पंचम शिष्या, विनती करके जोड़े कर।
गुरुवर की यह गाथा युग-युग, बनी रहे इस धरती पर॥26॥
भव्य सभी जन पूजन करके, उनही सम ले दीक्षा जी।
विघ्न कष्ट में हार न खावे, हमरी भी यह इच्छा जी॥

1. श्रेष्ठ गुणकारी द्रव्यों की

पूर्ण हुई यह सब अर्घों की, समुच्चय सुन्दर माला ये।
माफ करो यदि गलती हो तो, लिखने वाली बाला[1] है ॥27॥

ॐ ह्रः श्री अकम्पनादि सप्त शतक ऋषीश्वरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

सूरि अकम्पन सहित सात सौ, मुनियों की ये अर्चा है।
भव की नाशक, शिव की शासक जो करता नित अर्चा है॥
कर्म कटे तिस दुर्गति मिटती, सद्गति में वो जाता है।
परम्परा से मुक्ति महल में जा बसता पा साता है॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

प्रशस्ति

(दोहा)

शांति वीर शिव ज्ञान के विद्या सूरि महान्।
विवेक सिंधु थे दूसरे तपसी गुणगण खान॥ 1॥
उनकी शिष्या पाँचवी अल्पबुद्धि प्रभु भक्त।
उसके द्वारा रच गया हो, ऋषि गुण आसक्त॥ 2॥
गति गुप्ति व्रत गंध में वीर मोक्ष सुख धाम।
चैतवदी चौदस दिना शनिवारों को काम॥ 3॥
नगर अशोकं श्रेष्ठ है व्रती जनों का गेह।
छह मंदिर ऊँचे रहे श्रावक का अति नेह॥ 4॥
संतों में अरहंत में जिनवाणी में लीन।
रहकर कल्मष रोकते बनने आत्म प्रवीन॥ 5॥
सेवा में तत्पर रहे धन - धान्यों से पूर।
ना होती वृष हानि ही धर्म जहाँ भरपूर॥ 6॥
रक्षाबंधन पूज का विधि विधान यह पूर्ण।
यहीं हुआ भवि अर्च से अघ को कर दे चूर्ण॥ 7॥
जब तक सूरज चाँद हैं, जयवन्ते ऋषि संत।
उनकी पूजा अर्चना नित्य चले सुखकंत॥ 8॥
चरणों शत शत कोटिशः वन्दन करके आज।
शीश धरूँ हे पूज्य गुरु बनने में शिरताज॥ 9॥

शुभं भूयात्!

1. अल्पबुद्धि

आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी द्वारा रचित साहित्य

1. शील मञ्जूषा
2. तत्त्वार्थ मञ्जूषा भाग-1
3. तत्त्वार्थ मञ्जूषा भाग-2
4. संस्कार मञ्जूषा पूर्वार्द्ध
5. संस्कार मञ्जूषा उत्तर्राद्ध
6. भक्तिपुञ्ज मञ्जूषा
7. प्रवचन मञ्जूषा भाग-1
8. प्रवचन मञ्जूषा भाग-2
9. बाल संस्कार मञ्जूषा भाग-1
10. बाल संस्कार मञ्जूषा भाग-2
11. विवेक मञ्जूषा
12. भोगोपभोग परिमाण विधि
13. दोहा शतक
14. गुरु स्तुति
15. पलायन क्यों?
16. भूषणद्वय महाकाव्य
17. सच्चे देव का स्वरूप
18. अच्छी सास
19. बहू कैसी?
20. अनर्थदण्ड क्या?
21. तत्त्वार्थसूत्र विधान
22. चौंसठ ऋद्धि विधान
23. सम्मेदशिखर विधान
24. कल्पद्रुम महामण्डल विधान
25. बड़े बाबा विधान
26. उपसर्गहर रक्षाबंधन विधान
27. श्री पार्श्वनाथ विधान